

संस्कृतान्तिका

(Special Issue)

संपादक

डॉ० माला मिश्र

प्रोफेसर, अदिति महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

डॉ० एस. लिंगमूर्ति

असिस्टेंट प्रोफेसर, कर्नाटक केन्द्रीय विश्वविद्यालय, कलबुर्गी

विशेषांक

एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी
भारतीय ज्ञान परंपरा एवं वर्तमान परिदृश्य
(हाइब्रिड मोड)
सोमवार, 16 मार्च, 2026

संपादक

डॉ० नीरज खरे

विभागाध्यक्ष (समाजशास्त्र), वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही, छतीसगढ़

आयोजक

वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही

जिला-गोरेला-पेण्ड्रा-मरवाही (छ.ग.)

अलका पब्लिकेशन्स

220, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-I, दिल्ली-110091

वर्ष : 19 अंक : 1 □ जनवरी-मार्च, 2026

शैक्षणिकतावणी

(Special Issue)

संपादकीय सम्पर्क:

220, पॉकेट-5, मयूर विहार, फेज-1,
दिल्ली-110091

शाखा कार्यालय:

502, सरस्वती टॉवर, कुसुमपुरम, पटना-801503
फोन : 6201418851

संपादकीय

भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान और परंपरा का केंद्र है। यहां की संस्कृति परंपरा और सभ्यता का आधार ज्ञान परंपरा पर आधारित है। भारतीय समाज में ज्ञान को अत्यंत पवित्र और महत्वपूर्ण माना गया है। यही कारण है कि भारत को प्राचीन समय में विश्व गुरु कहा जाता था। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल पुस्तक आधारित ज्ञान तक सीमित नहीं बल्कि यह जीवन के हर क्षेत्र से जुड़ी हुई हैं। इसे धर्म, दर्शन, विज्ञान, चिकित्सा, गणित, सहित कला और अध्यात्म सभी का समावेश होता है। परंपरा हमें सिखती है कि ज्ञान का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत लाभ नहीं बल्कि समाज और मानवता का कल्याण होना चाहिए। इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा मानव सभ्यता के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती रही है और यह केवल अतीत की विरासत नहीं अपितु वर्तमान और भविष्य के लिए भी मार्गदर्शन हैं। यदि हम इन ज्ञान परंपराओं को समझकर अपने जीवन में अपनाये तो व्यक्तिगत सामाजिक और वैश्विक स्तर पर सकारात्मक परिवर्तन संभव है।

भारत हमेशा से ज्ञान परंपरा और ज्ञान संस्कृति के लिए जाना जाता है। प्राचीन सभ्यता ज्ञान के क्षेत्र में भारत के लिए चिंतन एवं शोध के लिए अच्छा अवसर है। यदि हम भारतीय ज्ञान परंपरा की बात करें तो यह भाषा, दर्शन, आचार-विचार, संयुक्त ज्ञान की अंतःकरण पर आधारित है। भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए आचार्य, ऋषियों, ग्रंथों, रितिरिवाजों की एक अद्भुत श्रृंखला चल रही थी। गुरुकुल प्रणाली के माध्यम से अध्ययन अध्यापन होता रहा है। विद्यार्थियों को वेद, वेदांग, संस्कृति और स्तुति के बारे में सिखाया जाता था। गुरु शिष्य परंपरा थी। वैदिक काल से भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत उत्कृष्ट थी। समृद्ध शिक्षा प्रणाली के जरिए देखा जाए तो, भारतीय ज्ञान परंपरा में परा विद्या और अपरा विद्या के ज्ञान को वर्णित किया गया है, जो भौतिक जगत के ज्ञान और अध्यात्मिक जगत के ज्ञान पर बल प्रदान करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा पर ब्रह्मचर्य गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम पर बात की गई है। ज्ञान योग और कर्म योग के पालन को आदि से अंत तक माना गया है। वेदों में व्यक्ति के प्रति,

व्यक्ति के समाज के प्रति और व्यक्ति के राष्ट्र के प्रति कर्तव्य के प्रति स्पष्ट की गई है। भारतीय ज्ञान परंपरा विद्या दर्शन एवं विज्ञान का अद्भुत त्रिवेणी संगम है। 'वसुधैव कुटुंबकम' एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः के विचार इसे अद्भुत एवं अद्वितीय बनाते हैं।

डॉ. नीरज कुमार खरे

विभागाध्यक्ष (समाज शास्त्र विभाग)

वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय मरवाही, जिला: जी.पी.एम.(छ.ग.)

Contents

भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति—श्री लोक सिंह; डॉ० यू.एस. श्रीवास्तव	1
मानव शरीर पर योग और ध्यान के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० (श्रीमती) पी. के. सिंह राणा	4
भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत साहित्य की भूमिका—नरोत्तम लाल सोनल	9
भारतीय ज्ञान परंपरा एवं अर्थव्यवस्था—श्री उत्तम कुमार चन्द्राकर	14
ग्रामीण अर्थव्यवस्था: भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों पर आधारित “ग्रामीण व्यापार मॉडल”—हेमा पोर्ते	18
विषय-भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद विज्ञान—श्रीमती अंजना खरे गुप्ता	23
भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक गणित के गणितीय पहलू: वर्तमान और भविष्य की संभावनाएं —श्रीमती प्रियंका खरे अहरवाल; श्रीमति अंजना खरे गुप्ता	27
भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक संस्कृत साहित्य का महत्व—प्रेमानंद महिलांग	29
“भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति”—श्रीमती कालिन्दी कौशिक; डॉ० अर्चना शुक्ला	35
भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य (Indian Knowledge Tradition Social Values) —डॉ० नीरज कुमार खरे	41
भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राचीन भारतीय वनस्पतिक—डॉ० रंजना सिंह	44
भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता—डॉ० राजेश कुमार रमण	47
भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीतिक चिंतन एवं कौटिल्य के मंडल सिद्धांत पर एक अध्ययन—डॉ० कंचन सिंह चौहान	51
भारतीय ज्ञान परम्परा में नवीनतम शोध की आवश्यकता पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन—डॉ० सुनीता कुमारी	55
भारतीय ज्ञान परंपरा, वाणिज्य और अर्थव्यवस्था—अनुप्रिया कुमारी	60
भारतीय ज्ञान परंपरा एवं इतिहास—डॉ० ममता कुमारी	64
प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण और चुनौतियाँ: एक अध्ययन—डॉ० अनुराग प्रताप सिंह	68
प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक नवाचार तक: आत्मनिर्भर भारत के लिए भारतीय ज्ञान परम्पराओं का लाभ —डॉ० संध्या कुमारी	72
पुरातन में निहित नवीनता: भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक और शैक्षिक योगदान— यशी सिंह	76
Indian Knowledge System: Insights for Ethical and Sustainable Modern Commerce —Apneet Tirkey	1
Significance of Indian Traditional Knowledge in Wildlife Conservation and Sustainable Development—Dr. Rakesh Soni; Ms. Archana Patel	4
Study of Animal Behaviour in the Indian Knowledge Tradition: Scientific and Ethical Perspectives in the Panchatantra and Jataka Tales—Ankush Kumar Kalish; Dr. Smt. P.K. Singh Rana	12
Indian Knowledge System in the Mythological Novels of Kavita Kane —Dharmendra Singh Suayavanshi	16
An Assessment of Pollution and Water Quality Parameter In Janjgir-champa of Chattisgarh By Focussing of Its Analytical Perspective—Dr. Swapnil Jaiswal; Dr.Rubina	
Indian Knowledge Systems and Vaidik Mathematics—Dr. Kunal Kumar Singh	26

Community-Based Snake Rescue and Snakebite Risk Assessment in Central India: Evidence from Marwahi Block, Chhattisgarh—Amar Gupta; Shubham Pathak; Dr. P.K. Singh Rana	29
Jalaukavacharana (Leech Therapy): A Clinical Protocol Demonstrating the Intersection of Zoology and Indian Knowledge Systems—Jeema Kumari	35
Indian Knowledge System and Rural Economy—Dr. Jayendra Kumar Monu	40
Indian Knowledge Tradition and the Concept of State and Governance: From Kautilya to Modern Democracy—Dr. Swati Singh	46

भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति

श्री लोक सिंह

प्राचार्य, वीरांगना रानी दुर्गावती शास. महाविद्यालय मरवाही, जिला-गौरेला, पेण्ड्रा मरवाही (छ.ग.)

डॉ० यू.एस. श्रीवास्तव

प्राध्यापक, वीरांगना अवंतिबाई लोधी शा.महा., पथरिया, जिला-मुगेली (छ.ग.)

सारांश:- भारत विविध समाजों-भाषाओं संस्कृतियों और रहन-सहन की शैलियों का देश है, किन्तु इसकी विशेषता विविधता में एकता के शाश्वत सूत्र में निहित है। भारत मूलतः हिन्दू राष्ट्र रहा है इस प्रकार भारत में मिश्रित समाज की स्वाभाविक रचना हुई। भारत में कुछ विशिष्ट समुदाये को सामान्यतः जनजाति आदिवासी गिरिजन आदि नामों से जाना जाता है जिन्हे भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में स्थान दिया गया। वर्तमान समय में 550 से अधिक जनजातियों का भारतीय संविधान के अनुच्छेद 342 में वर्णन किया गया है। भारत सरकार ने ऐसी 72 जनजातियों को चिन्हित किया है जो आदिम जनजातियों के अंतर्गत आता है। आज भी इन जनजातियां घने जंगलों और दुर्गम स्थानों पर सुविधा विहीन जीवन-यापन कर रहे हैं।

कुंजी शब्द:- भारतीय ज्ञान परम्परा, जनजाति संस्कृति, नैतिकता, और समन्वय।

भारतीय ज्ञान परम्परा और आदिवासी ज्ञान प्रणाली भारत की सांस्कृतिक विरासत की आधार स्तम्भ है सदियों से रहे हैं भारतीय ज्ञान परम्परा वेदों, उपनिषदों और दर्शन पर केन्द्रित है, वहीं आदिवासी ज्ञान प्रकृति के साथ जुड़ाव और अनुभवजन्य शिक्षा पर आधारित है। यह विज्ञान, तर्क और जीवन जीने की एक पद्धति है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में सरीर, मन और आत्मा को अलग-अलग नहीं बल्कि एक ईकाई के रूप में देखा जाता है। वसुदेव कुटुम्ब और सर्वे भवन्तु सुखिनः जैसे विचार इसके मूल में हैं। आयुर्वेद (चिकित्सा), योग, अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र और अर्थशास्त्र जैसे विषयों ने विश्व स्तर पर अपनी छाप छोड़ी है। भारतीय ज्ञान परम्परा में जनजातिज्ञान प्रणाली प्रकृति के साथ सांमजस्य, सतत जीवन शैली, पारम्परिक चिकित्सा(जड़ी-बूटी) और सामुदायिक प्रबंधन का एक समृद्ध, अपूर्त और अनुभव आधारित ज्ञानकोष है। यह भौतिक परम्पराओं, लोकगीतों और कहानियों के माध्यम से पीढ़ियों तक हस्तांतरित होती है, जो सतत विकास का एक पारंपरिक मॉडल है।

पूर्व अध्ययनों की समीक्षा:-

01. बसंत निर्गुणे:- “जब हम संस्कृति की बात करते हैं, हमारे सामने दो संस्कृतियों के विशाल पलक खुलते हैं, एक आदिम संस्कृति एवं दूसरी लोक संस्कृति। लोक में वह सबकुछ शामिल है, जो दृश्य और अदृश्य जगत में है इसलिए जनजाति संस्कृति वह मूल आदिम संस्कृति है जिसपर लोक संस्कृति का विशालतम स्वरूप खड़ा है।”
02. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका:- लोकगीत व्यक्तिहीन रचना होती है, जो विशुद्ध रूप से मौखिक परम्परा में जीवित रहती है, इसी क्रम में आगे कहा गया है कि लोकगीत जंगल के वृक्ष के समान है, जिसकी जड़े भूतकाल की जमीन में गहरी धसी हुई है, पंख जिसमें निरंतर नई-नई डालियां ललित और फल आते रहते हैं।
03. डॉ. रामशंकर चंचल:- आलेख आदिवासी कलाएं - “आदिवासी कला में महत्वपूर्ण है लोकगीत, लोकनृत्य जिसके बिना इनका कोई भी पर्व या त्यौहार पूरा होता है। गरबा, पाली व घोर तीन प्रकार के नृत्य प्रायः इनके पर्व त्यौहारों में देखे जाते हैं, इन नृत्यों में प्रायः समूह नृत्य ही होते हैं, जिसमें आदिवासी नवयुवतियां पुरुषों से होड़ करती हुई मस्ती में नाचती एवं गाती देखी जा सकती है, मस्ती का एक अनोखा आलम माला के सूत्र की भाँति सदैव बना रहता है।

शोध के उद्देश्य:-

01. भारतीय ज्ञान परम्परा को स्पष्ट करना।
02. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति समाज के समन्वय का अध्ययन।

03. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति प्रकृति का अध्ययन।
04. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति के महत्व का अध्ययन।

परिकल्पना:-

01. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति समाज का अटूट समंध है।
02. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति दोनों ही भारतीय संस्कृति की विरासत है।
03. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति का महत्व है।
04. भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति आधुनिक समय में भी प्रासंगिक है।

शोध विधि:- इस अध्ययन में प्राथमिक-अवलोकन साक्षात्कार अनुसूची एवं द्वितीयक आंकड़ों के द्वारा आंकड़ों का संग्रहण किया गया है।

यह शोध मुख्यतः वर्णात्मक और विवरणात्मक शोध पद्धति पर केन्द्रित है, इस अध्ययन के लिए प्राचीन भारतीय ग्रंथों, पुस्तकों, शोध पत्रों और अन्य द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है।

महत्व:-

01. जंगल, वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं से निकटता- जंगलों, वनस्पतियों और जीव जन्तुओं में निरन्तर निकटता के साथ आदिवासी समाजों को प्रकृति का समकालीन ज्ञान प्राप्त है, आदिवासी ज्ञान परम्परा प्रकृति, सह अस्तित्व और मौखिक परम्परा पर आधारित जीवन पद्धति है, जो वनों, जड़ी-बूटियों, सतत कृषि कला और सांस्कृतिक विरासतों का खजाना है।
02. आदिवासी ज्ञान प्रणाली (प्रकृति का विज्ञान):- आदिवासी समाज का ज्ञान उनके जीवन शैली में रचा बसा है इसे अक्सर (लोक विद्या) कहा जाता है।
03. पारिस्थितिक बुद्धिमता:- प्रकृति से गहरा जुड़ाव आदिवासी के पास जंगलों जड़ी बूटियों और मौसम के मिजाज का अद्भुत ज्ञान सदियों से है। वे प्रकृति का दोहन नहीं बल्कि उसके साथ सहअस्तित्व में विश्वास रखते हैं।
04. मौखिक परम्परा:- इनका ज्ञान लिखित पुस्तकों के बजाय कहानियों, गीतों अनुष्ठानों और लोक कथाओं के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी तक हस्तांतरित होता है।
05. स्थानीय ज्ञान:- आदिवासियों में जड़ी बूटियों की पहचान, कृषि तकनीक, मौसम का पूर्वानुमान और वन्य उत्पादों का सस्टेनेबल उपयोग शामिल है।
06. सामुदायिक भावना:- आदिवासी ज्ञान में व्यक्ति से ऊपर रखा जाता है, ये सामूहिक जिम्मेदारी सामूहिकता और सामाजिक समरसता पर जोर देता है।
07. कला और शिल्प:- जनजाति कला(जैसे- चित्रकला, बांसशिल्प) न केवल साजावटी हैं बल्कि यह उनकी सांस्कृतिक पहचान मिथकों और इतिहास की कहानी को भी दर्शाता है।
08. आद्यात्मिक समंध:- आदिवासी प्रकृति के विभिन्न तत्वों (पेड़, पहाड़ सूरज जल) जो उनके जीवन और आध्यात्म का विभिन्न हिस्सा है।
09. जनजातियां ज्ञान प्रणालियां:- जनजातियां ज्ञान प्रणालियां गैर-बहिष्कारी होती हैं और समानता से चिन्हित होती है।

वर्तमान प्रासंगिकता:- आज दुनिया जलवायु परिवर्तन और मानसिक तनाव से जूझ रही है तो ये दोनों प्रणालियां समाधान पेस करती है:

पर्यावरण संरक्षण:- आदिवासियों के 'पवित्र उपवन' की अवधारणा जैव विविधता को बचाने का सबसे प्राचीन और प्रभावी तरीका है:

स्थायी विकास:- भारतीय ज्ञान परम्परा और आदिवासी संस्कृति यह सिखाता है कि विकास ऐसा हो जो भविष्य की पीढ़ियों की संसाधनों को खत्म न करे, उनका दोहन न करे। "आदिवासी ज्ञान केवल (पिछड़ा या पुराना) नहीं है बल्कि भविष्य का विज्ञान है जो हमें धरती के साथ तालमेल बिठाकर जीना सिखाता है"।

सतत् विकास:- प्रकृति का उपयोग करते हुए उसे कैसे सुरक्षित रखा जाये।

पारिस्थिक ज्ञान:- जड़ी-बूटियों और वन उत्पादनों की गहरी समझ जो आधुनिक चिकित्सा और वनस्पति विज्ञान में भी महत्वपूर्ण हो सकती है।

निष्कर्ष:- भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति मानव जीवन और समाज में संतुलित विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। सत्य अहिंसा, सहिष्णुता, प्रकृति से प्रेम इसकी प्रासंगिकता को और भी अधिक बढ़ा देती है। जनजाति समाज की व्यवस्थाएँ आज भी हमें बहुत कुछ सिखा सकती हैं, जनजाति समाज के पास ज्ञान का बड़ा भण्डार है जिसे हर पीढ़ी अपने पूर्वजों से सीखती है और उसके कुछ वृद्धि कर आने वाली पीढ़ी को देकर जाती है।

भारतीय ज्ञान परम्परा और जनजाति संस्कृति केवल प्राचीन काल में बल्कि आज भी विज्ञान चिकित्सा, गणित पूर्वानुमान और अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रासंगिकता बनाये हुये हैं, भारत के मनुष्यों और वैज्ञानिकों तथा जनजाति समाज का योगदान आने वाले समय में अमूल्य रहेगा। भारतीय ज्ञान और जनजाति संस्कृति हर पीढ़ी के लिए प्रेरणा स्रोत रहेगी, यह न केवल बौद्धिक रूप से सक्षम व्यक्तियों को बल्कि भावनात्मक रूप से परिपक्व, नैतिक रूप से आधारित और आध्यात्मिक रूप से जागृत नागरिकों को भी पोषित करने का मार्ग प्रसस्त करती है।

संदर्भ:-

01. बसंत निर्गुणे 'आदिवर्त मध्य प्रदेश की जनजातियां, पृष्ठ -75
02. इनसाइक्लोपीडिया ब्रिटैनिका
03. डॉ. रामशंकर चंचल, आलेख आदिवासी कलाएं
04. शर्मा आर.एन. (2010) इंडियन कल्चर एंड हेरिटेज न्यू दिल्ली।
05. भागवत गीता
06. रमणिका गुप्ता, आदिवासी लोक, शिल्पायन प्रकाशन, प्रथम संस्करण (2012)
07. खान, वाई.एन. (2000) ट्राइबल लाईफ इन इंडिया, जयपुर, आर.बी.एस.एस. पब्लिसर।
08. हरिशचंद्र उप्रेती, (2007) भारतीय जनजातियां: संरचना एवं विकास, मानव संसाधन विकास मंत्रालय भारत सरकार, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

मानव शरीर पर योग और ध्यान के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० (श्रीमती) पी. के. सिंह राणा

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष (जंतु-विज्ञान), वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही,
जिला: जी.पी.एम. (छ.ग.)

Abstract (संक्षेप)

यह शोध मानव स्वास्थ्य पर योगाभ्यास एवं ध्यान के शारीरिक मानसिक तथा जैव-रासायनिक प्रभावों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है। आधुनिक जीवनशैली में तनाव, अनिद्रा, उच्च रक्तचाप, मधुमेह एवं हृदय संबंधी रोगों की बढ़ती प्रवृत्ति को देखते हुए योग एवं ध्यान एक प्रभावी पूरक उपचार पद्धति के रूप में उभरकर सामने आए हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य नियमित योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान के अभ्यास से मानव शरीर की शारीरिक क्रियाओं, प्रतिरक्षा-तंत्र, तंत्रिका-तंत्र एवं अंतःस्रावी-तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों का मूल्यांकन करना है। शोधपत्रों, पुस्तकों एवं वैज्ञानिक रिपोर्टों के विश्लेषण और परिणामों से ज्ञात हुआ कि नियमित योगाभ्यास से हृदय गति, रक्तचाप तथा श्वसन दर में संतुलन स्थापित होता है। प्राणायाम से फेफड़ों की कार्यक्षमता में वृद्धि तथा ऑक्सीजन आपूर्ति में सुधार देखा गया। ध्यान के अभ्यास से कॉर्टिसोल स्तर में कमी, मानसिक तनाव में कमी तथा एकाग्रता में वृद्धि पाई गई। इसके अतिरिक्त योग से मांसपेशियों की लचीलापन, संतुलन एवं शारीरिक सहनशक्ति में सुधार होता है।

अध्ययन यह भी दर्शाता है कि योग एवं ध्यान मानसिक स्वास्थ्य को सुदृढ़ करने, अवसाद एवं चिंता के लक्षणों को कम करने तथा समग्र जीवन गुणवत्ता को बेहतर बनाने में सहायक हैं। निष्कर्षतः योग एवं ध्यान न केवल रोगों की रोकथाम में सहायक हैं बल्कि स्वस्थ जीवनशैली को बनाए रखने के लिए एक समग्र, सुलभ एवं किफायती उपाय भी हैं। अतः इन्हें दैनिक जीवनचर्या में सम्मिलित करना मानव स्वास्थ्य के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

Keywords (की-वर्ड): योग, ध्यान, प्राणायाम, मानव स्वास्थ्य, जैव-रासायनिक प्रभाव।

प्रस्तावना

योग शब्द संस्कृत धातु 'युज' से निकला है जिसका अर्थ है 'जोड़ना' - अर्थात् शरीर, मन और आत्मा का समन्वय। पतंजलि के योगसूत्रों में वर्णित अष्टांग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान, समाधि) एक समग्र जीवन पद्धति प्रस्तुत करता है। योग केवल शारीरिक व्यायाम नहीं अपितु एक सम्पूर्ण मनो-शारीरिक हस्तक्षेप (mind-body intervention) है। पिछले दो दशकों में योग और ध्यान पर वैज्ञानिक शोध में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। विश्व स्वास्थ्य संगठन ने भी पूरक चिकित्सा के रूप में योग की महत्ता को स्वीकार किया है। वर्तमान में लगभग 44 से अधिक यादृच्छिक नियंत्रित परीक्षणों (RCTs) का मेटा विश्लेषण (कुल $n=3,168$) उपलब्ध है जो हृदय-रोग जोखिम कारकों पर योग के प्रभावों को प्रमाणित करता है। इसी प्रकार 48 RCTs ($n=4,683$) का एक व्यापक मेटा-विश्लेषण ध्यान-आधारित हस्तक्षेपों के प्रतिरक्षा-संबंधी जैव-सूचकांकों पर प्रभाव को दर्शाता है। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य नवीनतम प्रमाण आधारित अनुसंधानों की समीक्षा कर मानव शरीर के विभिन्न तंत्रों पर योग और ध्यान के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना है।

शोध उद्देश्य

1. रक्त परिसंचरण तंत्र पर योग और ध्यान के प्रभावों का विश्लेषण करना।
2. श्वसन प्रणाली पर प्राणायाम के शारीरिक प्रभावों का मूल्यांकन करना।
3. तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क की संरचना पर ध्यान के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. प्रतिरक्षा प्रणाली और अंतःस्रावी तंत्र पर पड़ने वाले प्रभावों का आकलन करना।
5. मानसिक स्वास्थ्य (तनाव, चिंता, अवसाद) पर योग-ध्यान के प्रभावों की विवेचना करना।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत अध्ययन वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध विधि पर आधारित है। इसमें PubMed, Scopus और IndMED जैसे प्रामाणिक डेटाबेस से प्रकाशित व्यवस्थित समीक्षाओं, शोध पत्रों, मेटा-विश्लेषणों और RCTs का द्वितीयक विश्लेषण किया गया है।

रक्त परिसंचरण तंत्र पर योग और ध्यान का प्रभाव

हृदय रोग विश्व में मृत्यु का प्रमुख कारण है। योग हृदय-रोग के परिवर्तनीय जोखिम कारकों को प्रभावी रूप से नियंत्रित करता है।

Chu et al. (2016) द्वारा 32 RCTs के मेटा-विश्लेषण में पाया गया कि योग ने सिस्टोलिक रक्तचाप में $.5.21$ mmHg (95% CI: -8.01 से $.2.42$), BMI में $.0.77$ kg/m² (95% CI: -1.09 से $.0.44$), LDL कोलेस्ट्रॉल में $.12.14$ mg/dL (95% CI: $.21.80$ से $.2.48$), तथा हृदय गति में $.5.27$ bpm (95% CI: $.9.21$ से $.1.33$) की सार्थक कमी उत्पन्न की।

Cramer et al. (2014) के 44 RCTs (n=3,168) के मेटा-विश्लेषण ने भी रक्तचाप, लिपिड प्रोफाइल और शरीर भार में सार्थक सुधार की पुष्टि की। 2023 के एक अद्यतन मेटा-विश्लेषण (64 RCTs, n=16,797) में पेंजी मज सं. ने भी BMI, रक्तचाप और HbA1c में योग के लाभकारी प्रभावों की पुनःपुष्टि की।

कोरोनरी धमनी रोग (CAD) के रोगियों में भी योग हस्तक्षेप प्रभावी पाया गया है। Neto et al. (2024) के मेटा-विश्लेषण (17 अध्ययन, n=5,698) में योग ने मनोवैज्ञानिक लक्षणों, जीवन गुणवत्ता और हृदय-रोग जोखिम कारकों में सार्थक सुधार प्रदर्शित किया।

श्वसन तंत्र पर प्राणायाम के प्रभाव

प्राणायाम योग का वह अंग है जो श्वास के नियंत्रण और विस्तार से संबंधित है। वैज्ञानिक अनुसंधान प्रमाणित करते हैं कि नियमित प्राणायाम अभ्यास फुफ्फुसीय (pulmonary) क्रियाशीलता में सार्थक सुधार लाता है।

Kakkar et al. (2024) की व्यापक समीक्षा में पाया गया कि योग अभ्यास, विशेषकर प्राणायाम, फेफड़ों के कार्य में लगातार सुधार करता है - FVC, FEV1, PEFr और डटट जैसे सभी प्रमुख मापदंडों में वृद्धि देखी गई।

Karthik et al. (2014) के अध्ययन (n=50 चिकित्सा छात्र) में दो माह के प्राणायाम अभ्यास के पश्चात् VC 2972 ± 213 उस से बढ़कर 3372 ± 529 उस, BHT 33 ± 5.8 sec से 58.6 ± 12.8 sec, तथा PEFr 388.8 ± 15.4 से 425.2 ± 38.7 स/उपद हो गई, ये सभी परिवर्तन सांख्यिकीय रूप से सार्थक थे।

भस्त्रिका प्राणायाम पर किए गए एक अध्ययन (n=40) में 45 दिनों के अभ्यास के बाद PEFr, श्वास-धारण समय (BHT) और 40 mmHg सहनशक्ति परीक्षण में सार्थक वृद्धि पाई गई। Kupersmidt - Barnable (2019) के यादृच्छिक नियंत्रित पायलट अध्ययन में 6 सप्ताह के प्राणायाम प्रोटोकॉल से PEFr और FEV1 में सुधार प्रदर्शित हुआ।

तंत्रिका तंत्र और मस्तिष्क की संरचना पर ध्यान के प्रभाव

ध्यान का मस्तिष्क पर प्रभाव आधुनिक तंत्रिका विज्ञान का एक रोमांचक क्षेत्र है। न्यूरोइमेजिंग अध्ययनों ने प्रमाणित किया है कि ध्यान अभ्यास मस्तिष्क की संरचना और कार्यप्रणाली दोनों में परिवर्तन उत्पन्न करता है, यह घटना तंत्रिकासुघट्यता (neuroplasticity) कहलाती है।

Davidson - Lutz (2008) ने अपने शोध में दर्शाया कि ध्यान अभ्यास मस्तिष्क में अनुभव-जनित संरचनात्मक परिवर्तन उत्पन्न करता है। Valiente-Barroso (2014) की समीक्षा में पाया गया कि ध्यान के नियमित अभ्यास से मस्तिष्क की जैव-विद्युतीय (bioelectrical) पद्धति में परिवर्तन, विशिष्ट मस्तिष्क क्षेत्रों का चयापचयी सक्रियण, तथा प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स सहित कई milaoydh; (subcortical) और संवलकीय (cortical) संरचनाओं में मापनीय वृद्धि होती है।

कौर एवं सिंह (2018) की व्यवस्थित समीक्षा में EEG, GSR, ECG जैसे शारीरिक संकेतों के माध्यम से ध्यान के प्रभावों का विश्लेषण किया गया। ध्यान के दौरान अल्फा और थीटा तरंगों की शक्ति में वृद्धि पाई गई, जो गहन विश्रान्ति और सजगता की अवस्था को दर्शाती है।

Bhatia - Gill (2025) की अंतर्विषयक समीक्षा के अनुसार योग हाइपोथैलेमिक-पिट्यूटरी-एड्रीनल (HPA) अक्ष, वेगल टोन, न्यूरोट्रांसमीटर संतुलन और न्यूरोइन्फ्लेमेशन सहित कई जैविक प्रक्रियाओं को संतुलित करता है।

प्रतिरक्षा प्रणाली और अंतःस्रावी तंत्र पर प्रभाव

योग और ध्यान प्रतिरक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करते हैं और शोथ-सूचकांकों (inflammatory markers) को कम करते हैं।

Dunn - Dimolareva (2022) के व्यापक मेटा-विश्लेषण (48 RCTs, N=4,683) में माइंडफुलनेस-आधारित हस्तक्षेपों के प्रभाव का आकलन किया गया। परिणामों में C-रिएक्टिव प्रोटीन (CRP) में कमी (SMCD = .014, 95% CI: .026 से .01), इंटरल्यूकिन - 6 (IL-6) में कमी (SMCD = .035, 95% CI: .067 से .003), तथा टेलोमिरेज गतिविधि में वृद्धि (SMCD = 0.81, 95% CI: 0.17 से 1.46) पाई गई।

Lee et al. (2025) के 89 RCTs के मेटा-विश्लेषण ने भी प्रमाणित किया कि मनो-शारीरिक हस्तक्षेप (MBIs) CRP, IL 6, TNF-a, IL-1, IL-8, IL-17 और कोर्टिसोल के स्तर को सार्थक रूप से कम करते हैं।

कोर्टिसोल, तनाव का प्रमुख हार्मोन पर ध्यान के प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण हैं। Heckenberg et al. (2018) की व्यवस्थित समीक्षा में पाया गया कि माइंडफुलनेस हस्तक्षेप कोर्टिसोल उत्पादन को प्रभावी रूप से कम करते हैं।

Hoge et al. (2017) के RCT (n=70) में सामान्यीकृत चिंता विकार (GAD) के रोगियों में डटैट के बाद ACTH और शोथ-जनक साइटोकाइन के स्तर में सार्थक कमी पाई गई, जो तनाव के प्रति बढ़ी हुई सहनशीलता को दर्शाती है।

Archana et al. (2024) के मेटा-विश्लेषण ने विशेष रूप से योग और ध्यान के प्रतिरक्षा-सम्बन्धी प्रभावों की पुष्टि की, जिसमें HIV जैसी प्रतिरक्षा-क्षीण अवस्थाओं में भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त हुए।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव- तनाव, चिंता और अवसाद

Pascoe - Bauer (2015) की व्यवस्थित समीक्षा में पाया गया कि योग सहानुभूतिक तंत्रिका तंत्र (sympathetic nervous system) और HPA अक्ष को नियंत्रित कर तनाव और मनोदशा पर लाभकारी प्रभाव डालता है। Pascoe et al. (2017) के मेटा-विश्लेषण ने सक्रिय नियंत्रण समूह की तुलना में योग और माइंडफुलनेस के तनाव-संबन्धी शारीरिक सूचकांकों पर सार्थक प्रभाव को प्रमाणित किया। Pascoe - Crewther (2017) की 23 परीक्षणों की समीक्षा में निष्कर्ष निकला कि ध्यान अभ्यास पैरासिम्पैथेटिक तंत्रिका तंत्र की सक्रियता बढ़ाता है और कोर्टिसोल स्तर तथा रक्तचाप को कम करता है।

Dogra et al. (2025) की समीक्षा के अनुसार नियमित योग अभ्यास स्वायत्त नियमन (autonomic regulation), हृदय-रक्तवाहिनी स्थिरता, श्वसन दक्षता और मांसपेशीय लचीलेपन में सुधार करता है, साथ ही जीवन गुणवत्ता और आत्म-नियंत्रण जैसे मनोवैज्ञानिक संकेतकों में भी समानांतर सुधार दिखाता है।

कई शोध अध्ययनों (2000-2024) में पाया गया कि योग अभ्यास, आसन, प्राणायाम, ध्यान और समेकित योग मॉड्यूल-अवसाद, चिंता, तनाव प्रबंधन, भावनात्मक नियमन और मनोवैज्ञानिक कल्याण में सार्थक सुधार करते हैं। इसके तंत्र में न्यूरोकेमिकल मॉड्यूलेशन, HPA अक्ष नियमन और वेगल टोन सक्रियण सम्मिलित हैं।

विवेचना एवं निष्कर्ष

उपर्युक्त साक्ष्यों के समग्र विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि योग और ध्यान मानव शरीर के लगभग प्रत्येक प्रमुख तंत्र पर सकारात्मक प्रभाव डालते हैं:

हृदय-रक्तवाहिनी तंत्र - रक्तचाप में 5-6 mmHg, LDL में 12 mg/dL तक की कमी (64 RCTs, n=16,797)।

श्वसन तंत्र - FVC, FEV1, PEF और MVV में न्यूनतम 10 सप्ताह के अभ्यास से सार्थक सुधार।

तंत्रिका तंत्र - प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स में संरचनात्मक वृद्धि, अल्फा-थीटा तरंगों में वृद्धि।

प्रतिरक्षा प्रणाली - CRP, IL-6 में कमी; टेलोमिरेज गतिविधि में वृद्धि (48 RCTs, N=4,683)।

मानसिक स्वास्थ्य – तनाव, चिंता और अवसाद में सार्थक कमी; जीवन गुणवत्ता में सुधार।

निष्कर्षतः योग और ध्यान वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित, सुरक्षित, किफायती और सुलभ मनो-शारीरिक हस्तक्षेप हैं जिन्हें निवारक एवं पूरक चिकित्सा के रूप में मुख्यधारा स्वास्थ्य सेवाओं में एकीकृत किया जाना चाहिए।

सुझाव

1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीतियों में योग को पूरक चिकित्सा के रूप में सम्मिलित किया जाए।
2. बड़े पैमाने पर बहुकेंद्रीय RCTs के माध्यम से दीर्घकालिक प्रभावों का अध्ययन किया जाए।
3. योग प्रोटोकॉल का मानकीकरण किया जाए ताकि शोध परिणामों की तुलनात्मकता बढ़े।
4. विद्यालय और कार्यस्थल स्वास्थ्य कार्यक्रमों में योग-ध्यान को अनिवार्य रूप से शामिल किया जाए।
5. भारतीय परंपरागत योग ज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक पद्धतियों के साथ समन्वित करने हेतु अंतर्विषयक अनुसंधान को प्रोत्साहित किया जाए।

आभार

इस शोध समीक्षा में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सहयोग के लिए प्राचार्य, वीरांगना रानी दुर्गावती महाविद्यालय मरवाही, जिला: गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही (छ.ग.) का सादर धन्यवाद एवं आभार, जिन्होंने अपना अमूल्य समय, सहयोग प्रदान किया।

सन्दर्भ सूची

1. Pascoe, M., & Bauer, I. (2015). A systematic review of randomised control trials on the effects of yoga on stress measures and mood. *Journal of Psychiatric Research*, 68, 270-282.
DOI: 10.1016/j.jpsychires.2015.07.013
2. Pascoe, M., Thompson, D., & Ski, C. (2017). Yoga, mindfulness-based stress reduction and stress-related physiological measures: A meta-analysis. *Psychoneuroendocrinology*, 86, 152-168.
DOI: 10.1016/j.psyneuen.2017.08.008
3. Cramer, H., Lauche, R., Haller, H., Steckhan, N., Michalsen, A., & Dobos, G. (2014). Effects of yoga on cardiovascular disease risk factors: A systematic review and meta-analysis. *International Journal of Cardiology*, 173(2), 170-183.
DOI: 10.1016/j.ijcard.2014.02.017
4. Chu, P., Gotink, R., Yeh, G., Goldie, S., & Hunink, M.M. (2016). The effectiveness of yoga in modifying risk factors for cardiovascular disease and metabolic syndrome: A systematic review and meta-analysis of randomized controlled trials. *European Journal of Preventive Cardiology*, 23(3), 291-307.
DOI: 10.1177/2047487314562741
5. Isath, A., Kanwal, A., Virk, H.H., Bandyopadhyay, D., Wang, Z., Kumar, A., Kalra, A., Naidu, S., Lavie, C., Virani, S., & Krittanawong, C. (2023). The Effect of Yoga on Cardiovascular Disease Risk Factors: A Meta-Analysis. *Current Problems in Cardiology*, 48(5), 101593.
DOI: 10.1016/j.cpcardiol.2023.101593
6. Neto, M., Saquette, M.B., Roever, L., & Carvalho, V.O. (2024). The Effect of Yoga Intervention on Psychological Symptoms, Health-Related Quality of Life, and Cardiovascular Risk Factors in People with Coronary Artery Disease: A Systematic Review and Meta-Analysis. *Heart and Mind*, 8(1), 18-30
DOI: 10.4103/hm.hm-d-23-00063
7. Dunn, T.J., & Dimolareva, M. (2022). The effect of mindfulness-based interventions on immunity-related biomarkers: A comprehensive meta-analysis of randomised controlled trials. *Clinical Psychology Review*, 92, 102124.
DOI: 10.1016/j.cpr.2022.102124
8. Lee, S.C., Tsai, P., Yu, K.H., & Chan, T. (2025). Effects of Mind-Body Interventions on Immune and Neuroendocrine Functions: A Systematic Review and Meta-Analysis of Randomized Controlled Trials. *Healthcare*, 13(8), 952.
DOI: 10.3390/healthcare13080952
9. Hoge, E.A., Bui, E., Palitz, S.A., Schwarz, N.R., Owens, M., Johnston, J.M., Pollack, M., & Simon, N. (2017). The effect of mindfulness meditation training on biological acute stress responses in generalized anxiety disorder. *Psychiatry Research*, 262, 328-332.
DOI: 10.1016/j.psychres.2017.01.006
10. Archana, R., Maheshkumar, K., & Selvi, G. (2024). Impact of Yoga and Meditation on Immune System - A Systematic Review and Meta-Analysis. *South Eastern European Journal of Public Health*, (Online First), Article 2431.
DOI: 10.70135/seejph.vi.2431
11. Davidson, R., & Lutz, A. (2008). Buddha's Brain: Neuroplasticity and Meditation [In the Spotlight]. *IEEE Signal Processing Magazine*, 25(1), 176-174.
DOI: 10.1109/MSP.2008.4431873
12. Valiente-Barroso, C. (2014). Brain Plasticity Associated with Meditation Experience: Neurofunctional Approach and Structural Findings. *Meditation - Neuroscientific Approaches and Philosophical Implications*, pp. 115-129.

13. Kaur, A., & Singh, M. (2018). A Systemic Review of Meditation and Psychophysiology. *Indian Journal of Public Health Research & Development*, 9(3), 107-112.
DOI: 10.5958/0976-5506.2018.00121.3
14. Karthik, P., Chandrasekhar, M., Ambareesha, K., & Nikhil, C. (2014). Effect of pranayama and suryanamaskar on pulmonary functions in medical students. *Journal of Clinical and Diagnostic Research*, 8(12), 04-06.
DOI: 10.7860/JCDR/2014/10281.5344
15. Kakkar, S., Sharma, V., & Jaiswal, G. (2024). The Impact of Yoga Practice on Pulmonary Function: A Comprehensive Review. *International Journal of Ayurvedic Medicine*, 15(S1), 126-132.
DOI: 10.47552/ijam.v15is1.5595
16. Kupersmidt, S., & Barnable, T. (2019). Definition of a Yoga Breathing (Pranayama) Protocol That Improves Lung Function. *Holistic Nursing Practice*, 33(4), 217-223.
DOI: 10.1097/HNP.0000000000000331
17. Heckenberg, R.A., Eddy, P., Kent, S., & Wright, B.J. (2018). Do workplace-based mindfulness meditation programs improve physiological indices of stress? A systematic review and meta-analysis. *Journal of Psychosomatic Research*, 114, 62-71.
DOI: 10.1016/j.jpsychores.2018.09.010
18. Bhatia, H., & Gill, K. (2025). Yoga and the Mind: An Interdisciplinary Review of Its Philosophical, Psychological, and Neural Foundations. *International Journal of Multidisciplinary Research and Analysis*, 8(12), 26.
DOI: 10.47191/ijmra/v8-i12-26
19. Dogra, A., Mishra, R., & Chetri, S. (2025). Yoga as a Bridge Between Body and Mind: A Comprehensive Review of its Physiological and Psychological Benefits. *International Journal of Science and Research (IJSR)*, 14(9), SR25926170525.
DOI: 10.21275/sr25926170525
20. Balaji, Pa., Varne, S., & Ali, S. (2012). Physiological Effects of Yogic Practices and Transcendental Meditation in Health and Disease. *North American Journal of Medicine and Science*, 5(1), 16-22.
DOI: 10.4103/1947-2714.101980

भारतीय ज्ञान परम्परा में संस्कृत साहित्य की भूमिका

नरोत्तम लाल सोनल

सहायक प्राध्यपक (संस्कृत) वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही (छत्तीसगढ़)

शोधसार: - अग्निवायुनीरपृथ्वीनभः रविश्चन्द्रग्रहनक्षत्रश्चज्ञानाय।

मातापिताःगुरु चरण वन्द जन्मभूमिश्च सर्व सुखाय॥

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति का समग्र विकास एवं उज्ज्वल रूप संस्कृत साहित्यों में प्रतिबिम्बित हुआ है। संस्कृत साहित्य ने न केवल एशिया महाद्वीप के विभिन्न देशों की भाषाओं और संस्कृतियों को प्रभावित किया है अपितु यूरोप एवं अमेरिका खण्ड की भाषाओं और संस्कृतियों पर भी इसकी अमिट छाप है। देवभाषा संस्कृत संसार की समस्त परिष्कृत भाषाओं में प्राचीनतम है। भारतीय ज्ञान परम्परा में धर्मशास्त्र, दर्शनशास्त्र, पुराण, न्याय, मीमांसा, रामायण, महाभारत, गीता, व्याकरण, काव्यशास्त्र, गणित, ज्योतिष, नीतिशास्त्र, इतिहास, छन्दशास्त्र, कोशग्रन्थ, ज्ञान-विज्ञान, कला और साहित्य आदि सभी पर संस्कृत भाषा की एकाधिकार था। भारत भूमि संत-महात्माओं की ज्ञान से अनवरत पुष्पित होती रही है। भारतीय ज्ञान परम्परा में अद्वितीय ज्ञान-प्रज्ञा, धर्म-कर्म, भोग-त्याग, लौकिक-पारलौकिक, अध्यात्म, अनुशासन, नैतिकता और आत्मनिर्भरता, चिकित्सा विज्ञान आयुर्वेद, परमाणु ज्ञान आदि का अद्भुत समन्वय है। भारतीय ज्ञान परम्परा में वेद और वैदिक संहिता ही मूल स्रोत हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति एवं ज्ञान को समझने के लिए संस्कृत साहित्य का अनुशीलन करना आवश्यक है। संस्कृत साहित्य में विश्व का प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद है जिसमें भारतीय ज्ञान परम्परा, हमारी संस्कृति-सभ्यता का अथाह भण्डार है। अखिल संस्कृत साहित्य को दो भागों में विभक्त किया गया है -

1 वैदिक साहित्य, 2 लौकिक साहित्य

मुख्य शब्द - भारतीय ज्ञान परम्परा, संस्कृत साहित्य, भारतीय संस्कृति, वैदिक साहित्य, लौकिक साहित्य।

धर्मसंस्कृति-समाज-राजनीति-दर्शन-कर्म-अर्थसम्बन्धानां विशयानां तुलनात्मकमध्ययेन वैदिकयुगः पूर्ववैदिकयुगे वेदानां चतस्र संहिताः, उत्तरवैदिकयुगे च ब्राह्मणग्रन्थ, षड्वेदाङ्ग याव विविच्यते। वेदो हि ज्ञानं तच्च ज्ञानं मन्त्रेषु समाविष्टमस्ति।

वैदिककालिन भारतीय ज्ञान परम्परा -

क) धार्मिक महत्त्वम् - वैदिककाले धर्म यज्ञः प्रधानासित्। अत्र द्युस्थानीन्तरीक्षस्थानीयपृथ्वीस्थानीयानां विभिन्नदेववानामुपासना स्तुति वर्णिताअस्ति। यज्ञेषु एतेषां दंवानामावाहनं क्रियते स्म। देवान्तोषयितुं यज्ञः प्रमुखं साधनमासित, यज्ञे घृतान्न-सोम-क्षीर-समिधादयः निक्षिप्यन्ते स्म। यज्ञेषु पशुमांसः सर्वथा वर्जितः आसित्। ऋग्वेदे प्रतिमा-पूजाया मूर्तिपूजायाश्च सर्वथाभावो दृश्यते स्म। देवानामतिप्रियः पेयः सोमरसः आसित् यो हि बलबुद्धिवर्धकः स्वीक्रियते स्म। ऋग्वेदे उपास्यदेवेषु अग्निः, इन्द्रः, वरुणः, मरुतः, सोमः, अश्विनाचादयः, प्रधानदेवताः आसित्। अस्मिन् समये ब्रह्मा-विष्णु-महेशादयः प्रधानदेवेषु न गण्यते स्म। तात्कालिकं मननं चिन्तनं दर्शनं सर्वमेपि धर्मकेन्द्रितमासित्। काव्यरचनादयोपि धर्मश्रिता एव अभूवन्। आचार-विचार-षुद्धेः संयमस्य सत्यस्य यम-नियमयोः च विचारः प्रबलः आसित्।

यः कश्चित् कस्यविद्धर्मो मनुना परिकीर्तिता।

स सर्वोभिहितो वेदे, सर्वानमयो हि सः ॥

स गच्छध्वं स वदध्वं स वो मनांसि जानताम्।

देवाभागं यथापूर्वे स जानाना उपासते॥ - ऋग्वेद

ख) सामाजिक-संस्कृति- समाजे वर्गद्वयमासित् आर्यवर्गः दस्युवर्गश्च। आर्यः आस्तिको धार्मिकः सदाचारनिष्ठश्चासित्। दस्युवर्गः षिल्पकार्ये प्रवीणः आसित्। तदनन्तरं जातायां वर्ण-व्यवस्थायां समाजः ब्राह्मणः-क्षत्रियः-वैश्य-शूद्रश्चेति चतुर्विधत्वेन

विभक्तः। यत्राध्ययनाध्यापनम् यजन-याजनम्, ब्राह्मणानां कर्तव्यमासित्। राष्ट्ररक्षणम्, राष्ट्रसंचालनम्, न्यायदण्डादीनां व्यवस्था क्षत्रीयधीनासित्। कृषिः गोरक्षा-वाणिज्यादयश्च वैश्यानां कार्यमासित्। समाजसेवाषिल्पादीनां कार्यं षूद्रानां कृते निर्धारिजमासित्। समाजः परिवारेषु विभक्त आसित्। एकपत्नीत्वव्यवस्था प्रचलिता। समाजे नारीणां महत्त्वपूर्णं स्थानमासित्।

समाजे मातृपितृगुरोः च महतादरः आसित्।

सर्वेषां तु स नामानि, कर्माणि च पृथक् पृथक्।

वेदषब्देभ्य एवादौ, पृथक् संस्थाष्व निर्ममे॥

देहि मे ददामि ते नि मे धेहि नि ते दधे।

निहारं च हरासि मे निहारं निहषीण ते॥ - यजुर्वेद

साम्राज्ञी 'वसुरे भव साम्राज्ञी' वशर्वा भव।

ननान्दरि साम्राज्ञी भव साम्राज्ञी अधिदेवृषु॥

ग) वेदे विज्ञानम् - वेदतत्त्वेष्वधुनिक विज्ञानेभ्योप्युदात्तरः सिद्धान्तः प्रतिपादितो विद्यते। वेदार्थस्यो पेशाकरणादिमानि। तत्त्वानि विस्मृतपगायाणि संजातानि। विज्ञान तत्त्वान्वेषणायात्रत्यं यज्ञतत्त्वमप्यवलोकनीयं वर्तते। यज्ञो हि द्विविधो भवति तत्र प्रथमो प्रकृत्या सर्वदा क्रियते येन च विष्वसृष्टिः समाजयत पाल्यते च। द्वितीयो यज्ञः लोकद्वयव्यवहारायात्यन्तमावष्यकः। अस्य यज्ञस्य मूलं मन्त्रो विद्यते। सामप्रतिकस्य विज्ञानस्य मूलाधारो विद्यते विद्युच्छक्तिः वैदिक-विज्ञानस्य च मूलाधारो विद्यते प्राणशक्तिः। वेदो नामाखिलज्ञानविज्ञानराशिः। षड्बार्थदिषा विद्यन्ते ज्ञायन्ते लभन्ते वा धर्मादिपुरुषार्था एभिरिति वेदाः।

प्रत्यक्षेणानुमित्या वा यस्तूपायो न विद्यते।

एवं विदन्ति वेदेन तस्माद् वेदस्य वेदता ॥ - कृष्णयजुर्वेद (आचार्यसायण)

मर्तेषु-अग्निमृतो नि धायि। - यजुर्वेद

अग्निमृतो अभवद् वयोभिः। - यजुर्वेद

विज्ञाने अग्नि ऊर्जा नाम अस्ति।

यो देवानां नामधा एक एव। - ऋग्वेद

अग्ने त्मना षषतिनं पुरुरूपम्। - ऋग्वेद

स्तीर्णा अस्य संहितो विष्वरूपा। - ऋग्वेद

भारतीयदर्शनस्याद्धैतवादिदिसिद्धान्तमेवानुवर्तयति साम्प्रतिकं विज्ञानमिति प्रतिभाति। साम्प्रतिविज्ञानस्य स्वीकृततत्त्वद्वयस्य या परिभाषा विलक्षणं सादृश्यं वेदे द्रष्टुं षक्यते। तथाहि "षतपथब्राह्मणे वेदेभ्यः सृष्ट्युत्पत्तिवर्णनप्रसन्नो स्पष्टं लिखितं वर्तते यत् "यजुः"।

वेदास्तावन्न केवलमखिलस्यापि लगतः सर्वोत्कृष्ट-धर्माणामेवादिस्मवातांसि विद्यन्तेऽपितु सूक्ष्मतमानां पराभौतिक दर्शनानामपि मूलकारणानि सन्ति। तथाहि वेदे प्रतिपादितेषु सर्वतत्त्वेष्वध्यात्मिकरहस्यमनुस्यूतं वर्तते।

परमत्रेयमुषा सूर्यः तमष्वेत्यादयः प्रतीकात्मकाः सन्ति ये खल्वाध्यात्मिकेऽर्थे प्रयुक्तास्सन्ति। वेदानां परमं लक्ष्मं सत्यस्यानुपालनं वर्तते। "सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्" इत्युक्त्या सत्यपदार्थस्य सत्तात्र प्रतिपादिता वर्तते। अज्ञानतमज्ञयपि सत्यान्वेषण सत्यविजयेन चामृतत्वस्य प्राप्तिरत्र प्रमुखमुद्देश्यमस्ति। तत्प्रतिपादितसिद्धांतप्रतिबोधात्मकम् "ऋतम्" इति तत्तत्तं मनोवैज्ञानिकत्वेनाध्यात्मिकत्वेन च विचारितं वर्तते।

उपनयनविधिः गायत्री दीक्षा चेत्येवं विधा संस्कार क्रिया वर्तते ययाध्यात्मिकतया वैयक्तिकः पुनरुधारो भवति। यां विना च सात्विकतत्त्वज्ञानस्य योग्यतां न प्राप्तुं शक्यते। दीक्षायामाचार्याणां कर्तव्यं पितृवत् भवति। उपनयनं तु तादृशं गुह्यं कर्म वर्तते। येनाध्यात्मिको जन एव स्वाध्यत्मिकां शक्तिमधिगमनेसमर्थो भवति। उपनयनविधिना गुरुणामिच्छाषक्त्या प्रोत्साहितं प्रकाशात्मकं ज्ञानं शक्तिरुञ्चालनक्रियायाः गणदोषस्य विवेचनं करोति। वस्तुः गुरुभिः प्राप्तो दीक्षात्मकः उपदेशः अभिमन्त्रितो भवति योह्यान्तरिकस्य ज्ञानस्य बाह्यवस्त्रं भवति।

साम्प्रति राष्ट्रभक्ति मातृभूमिः तत्समये "माता भूमिः पुत्रोहं पृथिव्याः" - अथर्ववेद

अर्थात् भूः मम माता अस्ति अहं च भुवः पुत्रोस्मि।

भारतीय ज्ञान परम्परा उपनिषद्काले "मातृ देवो भव, पितृ देवो भव, आचार्य देवो भव, अतिथि देवो भव" - तैत्तिरीय उपनिषद्

“आत्मा वा अरे दृष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो निदिध्यासितव्यो मैत्रेयी”। - वृहदारण्यकोपनिषद्
 “स्वर्गे लोके न भयं किञ्चनास्ति”। - केनोपनिषद्
 “सर्वं खल्विदं ब्रह्म”। - छान्दोग्योपनिषद्
 “सत्यं वद्। धर्मं चर। स्वाध्यायान्माप्रमदः। सत्यान्प्रमदितव्यम्। धर्मान्प्रमदितव्यम्।
 सत्यं ज्ञानमनन्तं ब्रह्म”। - तैत्तिरीयोपनिषद्
 “अहिंसा परमो धर्मः”। - महाभारत
 नास्ति विद्या समं चक्षु, नास्ति सत्यं समं तपः।
 नास्ति रागं समं दुःखं नास्ति त्यागं समं सुखं॥ - महाभारत
 नास्ति मत्समो गुरुः। - महाभारत
 षड् दोषा पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
 निद्रातन्द्रा भयं क्रोध आलस्यं दीर्घसूत्रता॥ - महाभारत
 क्षमा दानं क्षमा सत्यं , यज्ञश्च पत्रिकाः।
 क्षमा यषः क्षमा धर्मः क्षमयाविष्टितं जगत्॥
 कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
 मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोस्त्वकर्मणि॥ - गीता
 पृथ्वी त्रीणी रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम्।
 मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयतां॥
 उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
 न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविषन्ति मुखे मृगाः॥
 येषां न विद्या न तपो न दानं,
 ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
 ते मृत्युलोके भुवि भारभूता,
 मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥
 उद्योगे नास्ति दारिद्र्यं, जपतो नास्ति पातकम्।
 मौनेन कलहो नास्ति, नास्ति जागरिते भयम्॥
 सहसा विदधीत न क्रियामविवेकः परमापदां पदम्।
 वृणुते हि विमृष्यकारिणं गुणलुब्धाः स्वयमेव सम्पदः॥
 स जाते येन जातेन याति वंशं समुन्नतिम्।
 सर्वं कृच्छ्रगतोऽपि वाऽच्छतिजनः सत्वानुरूपं फलम्।
 सर्वस्यौषधमस्ति शास्त्रविहितं मूर्खस्य नास्त्यौषधम्।
 सर्वविदां समाजे विभूषणं मौनमपण्डितानम्।
 सर्वेगुणाः काञ्चनमाश्रयन्ति।
 सेवाधर्मः परमगहनो योगिनामप्यगम्य।
 ज्ञानं लवदुर्विदग्धं ब्रह्मपि तं नरं न रजयति।
 असतो मा सद्गमय।
 तमसो मा ज्योतिर्गमय।
 मृत्योर्मा मृतं गमय॥
 अयं निजः परो येति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥
 मा निषाद! प्रतिष्ठां त्वमगमः शाश्वती समाः।
 यत्कौंचमिथुनादेकमवधीः काममोहितम्॥
 सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
 सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग् भवेत्॥
 सुखमर्थो भवेद् दातुं सुखंप्राणाः सुखं तपः।
 सुखमन्यद्र भवेद् दुःखं न्यासस्य रक्षणम्।
 अज्ञः सुखमाराध्यः सुखतरमाराध्यते विषेषज्ञः।
 ज्ञानलवदुर्विदग्धं ब्रह्मऽपि नरं न रज्जयति॥
 श्रेयश्च प्रेयश्च मनुष्यतेतस्तौ संपरीत्य विविनक्ति धीरः।
 श्रेयो हि धीरोऽभि प्रेयसो वृणीते प्रेयो मन्दो योगक्षेमा वृणीते॥
 अविद्यायामन्तरे वर्तमालाः
 स्वयं धीराः पण्डितम्मन्यमानाः॥
 दन्द्रम्यमाणाः परियन्ति मूढा
 अन्धेनैव नीयमाना यथान्धाः॥
 न जायते म्रियते वा विपश्चिन्
 नायं कुतश्चिन्न वभूव कश्चित्।
 अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
 न हन्यते हन्यमाने शरीरे॥
 नायमात्मा प्रवचनेन लम्बो
 न मेधया न बहुता श्रुतेन।
 यमेवैष वृणुते तेन लभ्यः
 तस्यैष आत्मा विवृणुते तनूं स्वाम्॥
 उत्तिष्ठत जागृत प्राप्य वरान्निबोधत्।
 क्षुरस्य धारा निषिता दुरत्यया,
 दुर्गम्पथस्तत्कवयो वदन्ति॥
 नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
 न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥
 विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनं
 विद्या भोगकारी यषः सुखकरी विद्या गुरुणां गुरुः।
 विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परा देवता
 विद्या राजसु पूज्यते न तु धनं विद्याविहीनः पशुः॥
 जाड्यं धियो हरति सिडति वाचि सत्यं,
 मानोन्नतिं दिषति पापमपाकरोति।
 चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम्
 सत्संगति कथय किं करोति पुंसाम्॥
 प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः

प्रारभ्य विघ्नविहिता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैर्मुहुरपि प्रतिहन्यामानाः
प्रारब्धमुत्तम जना न परित्यजन्ति॥
यो ध्रुवाणि परित्यज्य अध्रुवाणि निषेवते।
ध्रुवाणि तस्य नष्यन्ति अध्रुवं नष्टमेव हि॥
यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते सर्वास्तत्राफला क्रियाः॥
नारिकेल समाकारा दृष्यन्ते खलु सज्जनाः,
अन्ये बदरिकाकारा बहिरेव मनोहराः।

संदर्भ

- वैदिकसाहित्येतिहासः डॉ. राजधर मिश्र
- प्रतियोगिता साहित्य सीरीज-डॉ. मुरारी लाल अग्रवाल
- नीतिशतक -भट्टहरि
- स्वप्नवासवदत्तम्-महाकवि भास
- किरातार्जुनीयम् -महाकवि भारवि

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं अर्थव्यवस्था

श्री उत्तम कुमार चन्द्राकर

सहायक प्राध्यापक (अर्थशास्त्र) वीरांगना रानी दुर्गावती, शासकीय महाविद्यालय, मरवाही,
गौरेला-पेन्द्रा-मरवाही (छ0ग0)

सारांश:-

भारतीय ज्ञान प्रणाली एक ऐसी प्रणाली है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती रही है। यह ज्ञान प्रणाली केवल परंपरा ही नहीं है, बल्कि ज्ञान की प्रचार-प्रसार का सुव्यवस्थित और संगठित पद्धति है। इसका देश के प्रत्येक क्षेत्र व्यापार, वाणिज्य, ज्ञान-विज्ञान, कौशल, शासन-प्रशासन, उद्योग, विनिर्माण, चिकित्सा विज्ञान सभी पर सकारात्मक प्रभाव होता है। प्राचीन ज्ञान परंपरा वर्तमान की आर्थिक विकास के समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करता है। वैश्विक दृष्टिकोण से देखें तो भारत की “वसुधैव कुटुम्बकम्” की विचार ही आधुनिक वैश्वीकरण है तथा “सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया” की विचार आधुनिक सतत विकास की अवधारणा में परिलक्षित होता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली विभिन्न वैश्विक समस्याओं के समाधान प्रस्तुत करते हुए जन नियोजन को बढ़ावा देता है तथा आर्थिक सामाजिक क्षेत्रीय असमानताओं को कम करने में सहायक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली में अर्थशास्त्र महत्वपूर्ण घटक के रूप में एकीकृत है। वैदिक सभ्यता से लेकर वर्तमान समय में इसकी बानगी देखने को मिलती है। चाणक्य के द्वारा लिखित पुस्तक “अर्थशास्त्र” भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र की प्रथम लिखित रचना है, जिसमें राज्य अर्थव्यवस्था एवं शासन प्रशासन पर विशेष रूप से प्रकाश डाला गया है। इसमें शासन प्रशासन हेतु संसाधन प्रबंधन, व्यापार के नियमन, सार्वजनिक असंरचना, कराधान, व्यापार नियमन, आर्थिक विकास आदि स्पष्ट नीति नियमों का उल्लेख मिलता है। अर्थशास्त्र का धन और कल्याण का सिद्धांत नया नहीं है। यह सिद्धांत अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ 1776 ई. से कई वर्ष पूर्व प्राचीन काल में शुक्राचार्य की शुक नीति में दिया गया था। प्राचीन कृति नारद स्मृति में वित्त नीति का स्पष्ट उल्लेख मिलता है। दुनिया के देशों के साथ जुड़ाव के लिए जिस “वैश्विकरण” शब्द का उपयोग किया जाता है, वह भारतीय विचार “वसुधैव कुटुम्बकम्” ही है। जो वैश्विक एकता, सदभाव, आर्थिक विकास, टिकाऊ जीवन और पर्यावरण संरक्षण के लिए वैश्विक सहयोग के लिए प्रयोग की जाती है। भारत में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन में इसे आदर्श वाक्य के रूप से प्रयोग किया गया था। हम विभिन्न देशों में एकीकरण और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिए इस विचार का उपयोग कर सकते हैं। प्राचीन भारतीय परंपरा का अन्वेषण कर हम अर्थव्यवस्था में संतुलन बनाने और देश को आर्थिक रूप से समृद्ध बनाने के लिए नये आर्थिक विचार प्राप्त कर सकते हैं।

कीवर्ड:- ज्ञान परंपरा, अर्थव्यवस्था वैश्वीकरण, वसुधैव कुटुम्बकम्, आत्मनिर्भरता, आयात प्रतिस्थापन, स्वदेशीकरण, उपभोक्तावाद, गुरुकुल परंपरा, ई-कॉमर्स

भारत सरकार ने आत्मनिर्भरता और विजन विकसित भारत 2047 के लिए वर्ष 2020 में आत्मनिर्भर भारत अभियान प्रारंभ किया है, जिसके अंतर्गत घरेलू उत्पादन बढ़ाने, आयात प्रतिस्थापन, स्वदेशीकरण व विशेषज्ञता को बढ़ावा देना प्रमुख है। अतीत में भारतीय ज्ञान ने भारतीय सभ्यता के सतत् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पहलुओं के विकास में भूमिका निभाई है। शल्य चिकित्सा, योग, आयुर्वेद, वैदिक गणित, खगोल विज्ञान, सांख्यिकी, स्थापत्य कला जैसे विषयों में पाई जाने वाली अनेक तकनीकी पद्धतियां हैं, जो भारतीय ज्ञान परंपरा के कुछ पहलुओं के उदाहरण हैं। ये पद्धतियां समकालीन समस्याओं का समाधान प्रस्तुत करती हैं। इस अध्ययन का उद्देश्य ऐतिहासिक भारतीय ज्ञान को वर्तमान ज्ञान और नवाचार से जोड़कर यह पता लगाना है कि हमारा प्राचीन ज्ञान कैसे देश के सतत् आर्थिक विकास के लक्ष्य, आत्मनिर्भरता और विजन विकसित भारत 2047 को प्राप्त करने में योगदान करेगा। प्राचीन ज्ञान परंपरा शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, उद्योग, विनिर्माण, पर्यावरण संरक्षण, तकनीकी-प्रौद्योगिकी सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

उद्देश्य:-

- भारतीय ज्ञान प्रणालियों की पहचान करना जो विकसित और आत्मनिर्भर भारत का समर्थन करती है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा का ग्रामीण विकास के लिये महत्व को जानना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन कर रोजगार के नये अवसरों की तलाश करना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा के द्वारा वर्तमान सामाजिक आर्थिक समस्याओं का समाधान ढूँढना।

परिकल्पना:-

- भारतीय ज्ञान परंपरा से प्राचीन एवं नवीन अर्थव्यवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है।
- हमारी अर्थव्यवस्था बहुत ही समृद्ध है इसका आभास भारतीय ज्ञान परंपरा से होता है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने में सहायक है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा हमारी अर्थव्यवस्था के विभिन्न समस्याओं को दूर करने में सहायक है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा विकसित और आत्मनिर्भर भारत के निर्माण में सहायक हो सकती है।

शोध प्रविधि:-

प्रस्तुत अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों के माध्यम से आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया है। प्राथमिक स्रोत- अवलोकन, साक्षात्कार अनुसूची एवं दैव निदर्शन पद्धति से आंकड़ों का एकत्रीकरण किया गया है। इस शोध पत्र में प्राथमिक स्रोत के अतिरिक्त द्वितीयक स्रोत- आलेख, सरकारी आंकड़े, पुस्तक, पत्र-पत्रिकाओं एवं इंटरनेट, इत्यादि से आंकड़ों का संकलन किया गया है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थव्यवस्था:-

भारतीय ज्ञान परंपरा में अर्थशास्त्र/अर्थव्यवस्था की अवधारणा में शुक्राचार्य, कौटिल्य, तिरुवल्लुवर, महात्मा गाँधी आदि के विचार महत्वपूर्ण माने जाते हैं। इसके अंतर्गत मूलभूत अवधारणा वस्तु-मूल्य, कीमत, आर्थिक नियम, उपभोक्तावाद, विवेकशील व्यवहार, त्याग और सेवाभाव, नैतिकता का भाव जुड़ा हुआ है। भारतीय अर्थशास्त्र में आर्थिक क्रियाओं के साथ-साथ धर्म, दर्शन, सामाजिकता और मूल्यों का समावेश होता है। कौटिल्य ने अपने ग्रंथ अर्थशास्त्र में राजा को प्रजा का पिता माना है। अर्थात् राजा का मुख्य कर्तव्य जनता का पालन-पोषण करना होता था। शुक्राचार्य ने अर्थशास्त्र को जीवन के चार पुरुषार्थों में से एक माना है, जिसमें धन प्राप्ति और उसके सदुपयोग की बातें की गई हैं। राष्ट्र पिता महात्मा गाँधी ने अर्थशास्त्र को नैतिकता और आत्म निर्भरता के रूप में देखा है। आर्थिक विश्लेषण में उत्पादन, उपयोग, विनियम, साधनों के वितरण का अध्ययन किया जाता है। भारतीय दृष्टिकोण में आर्थिक विश्लेषण सामाजिक न्याय, संतुलन और कल्याण पर आधारित होता है। भारतीय आर्थिक दृष्टिकोण में आर्थिक नियमों में नैतिकता और सामाजिक कल्याण की प्रमुखता देखी जाती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में उपभोक्तावाद के स्थान पर उपभोक्ता की संतुष्टि और विवेकशील व्यवहार पर जोर दिया जाता है।

आर्थिक गतिविधियों के विषय में देखा जाए तो भारतीय ज्ञान प्रणाली में कृषि, उद्योग, विनिर्माण, व्यापार परिवहन आदि क्षेत्रों में उत्कृष्टता देखने को मिलती है, जिसके अध्ययन और विश्लेषण से वर्तमान समय में देश में तीव्र और सतत् आर्थिक विकास में मदद मिल सकती है।

प्राचीन कालीन भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व की सबसे उन्नत अर्थव्यवस्था में से थी। हड़प्पा सभ्यता में इसकी बानगी देखने को मिलती है। एंगस मेडिसन का अनुमान है कि 1-1000 ईसवी के मध्य वर्तमान भारत के क्षेत्र ने वैश्विक जीपीडी में 30 प्रतिशत योगदान दिया था। 17 वीं शताब्दी में भारत एक अत्यंत समृद्ध कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था थी, जो कुल वैश्विक जीपीडी में लगभग 1/4 हिस्सेदारी के साथ विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था थी। सूती वस्त्र, मसाले और शिल्प के निर्यात के बदौलत अनुकूल व्यापार संतुलन था। भारत में निर्मित उत्पाद उच्च कोटि के थे। भारतीय कालीन व रेशमी कपड़ों की मांग सम्पूर्ण विश्व में थी। निर्माण के क्षेत्र में भारतीय इंजीनियरिंग उत्कृष्ट थी, चाहे हड़प्पा कालीन शहरी नियोजन की बात करें या दिल्ली में स्थित महारौली के लौह स्तंभ। लौह स्तंभ भारतीय इंजीनियरिंग का एक ऐसा नायाब उदाहरण है जो भारतीय इंजीनियरिंग की उत्कृष्टता को साबित करता है। महाबलिपुरम में पल्लव शासकों द्वारा निर्मित चट्टानों को काटकर बनाया गया मंदिर वस्तुकला के लिये प्रसिद्ध है। जयपुर सहित देश के चार शहरों में राजा सवाई जय सिंह द्वारा निर्मित जंतर-मंतर खगोलीय वेधशाला खगोल विज्ञान के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान को रेखांकित करता है। शिक्षा के क्षेत्र में भारतीय ज्ञान उत्कृष्ट स्तर का था। विश्व का पहला विश्वविद्यालय नालंदा भारत में स्थापित हुआ जो 12 वीं सदी में शिक्षा का प्रमुख केन्द्र रहा है। जहाँ पर ह्वेनसांग जैसे शिक्षार्थियों ने अध्ययन किए। यहाँ पर विश्व की सबसे बड़ी पुस्तकालय थी। गुरु रविन्द्र नाथ टैगोर द्वारा 1921 में स्थापित शांति निकेतन विश्वविद्यालय प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति “गुरुकुल परंपरा पर आधारित है। जो शिक्षा के उत्कृष्ट केन्द्र के रूप सतत् संचालित है।

प्राचीन काल से लेकर वर्तमान समय तक में धार्मिक नगर समृद्धि के प्रतीक रहें हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों से यह स्पष्ट होता है कि धार्मिक नगर केवल धर्म का केन्द्र ही नहीं बल्कि शिक्षा-संस्कृति और व्यापार के भी केन्द्र रहें हैं। आधुनिक अर्थव्यवस्था में पर्यटन क्षेत्र का बहुत ही महत्वपूर्ण योगदान है। कई देशों की जी.पी.डी. में पर्यटन क्षेत्र की बड़ी योगदान है। भारत के संदर्भ में देखें तो पर्यटन से अर्थव्यवस्था को बड़ी मात्रा में आय और रोजगार मिल रही है। भारतीय संस्कृति और विरासत को जानने वाले लोगों की तादात लगातार बढ़ रही है। पर्यटन व्यवसाय से लाखों लोगों का रोजगार मिलने की सम्भावना है। भारत में पर्यटन के क्षेत्र में धार्मिक पर्यटन की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। वर्तमान समय में अंतर्देशीय पर्यटन में धार्मिक पर्यटन सबसे अधिक किया जाता है। यह क्षेत्र देश में बड़ी आर्थिक सांस्कृतिक गतिविधियों के केन्द्र के रूप में उभर रहे हैं।

भारतीय ऐतिहासिक ज्ञान देश के आर्थिक विकास और आत्मनिर्भरता में बड़ी भूमिका निभा सकता है, इसके लिए ऐतिहासिक ज्ञान को नवाचार से जोड़ना होगा। प्राचीन ज्ञान को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ एकीकृत करने से कृषि, लघु एवं मध्यम व्यापार, वाणिज्य और स्वास्थ्य जैसे क्षेत्रों को लाभ हो सकता है। पारम्परिक कृषि जैव विविधता पर जोर देती है, जो सतत् एवं टिकाऊ आधुनिक कृषि के अनुरूप है। सुक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योग क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिये उत्पाद विकास और सवर्धन हेतु आधुनिक प्रौद्योगिकी को पारंपरिक ज्ञान के साथ एकीकृत कर लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आयुर्वेदिक चिकित्सा ज्ञान को आधुनिक चिकित्सा पद्धति के साथ जोड़ने से चिकित्सा के क्षेत्र अनुसंधान और विकास में मदद मिलती है। आयुर्वेदिक लघु एवं मध्यम उद्यमों ने स्वास्थ्य पर्यटन और ई-कॉमर्स का लाभ उठाते हुए व्यापक उछाल का प्रदर्शन किया। इस पहल ने स्थानीय रोजगार को गति दी और पारंपरिक आयुर्वेदिक ज्ञान के संरक्षण में योगदान दिया। सिक्किम भारत का पहला जैविक राज्य है। जहाँ कृषि आधारित लघु एवं मध्यम उद्यमों के लिये पारंपरिक ज्ञान में विशेषता की संभावना बढ़ गई है। शोध से पता चलता है कि पारंपरिक ज्ञान प्रौद्योगिकी को औपचारिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा में शामिल करने से युवा पीढ़ी को वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल पारंपरिक कौशल से लेस करने में मदद मिल सकती है। कृषि आयुर्वेद, योग, शिल्पकला जैसे पारंपरिक क्षेत्रों में छात्रों को रोजगार के अवसर खुल सकते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पुनरुद्धार में स्वदेशी ज्ञान और प्रौद्योगिकी का एकीकरण महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। ग्रामीण भारत में कुटीर और लघु उद्योग क्षेत्रों में रोजगार और आजीविका के अवसर विकसित करके ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है और शहरों की ओर हो रहे पलायन को कम किया जा सकता है। विकसित भारत 2047 के सपना को पूर्ण करने के लिये जरूरी है, कि देश सतत्, तीव्र और धारणीय विकास करें। इसमें भारतीय ज्ञान परम्परा का उचित उपयोग कर अनेक आर्थिक सामाजिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत किया जा सकता है। प्राचीन शिक्षा पद्धति युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने वाली रोजगार मूलक शिक्षा पद्धति थी। वर्तमान में ऐसी शिक्षा व्यवस्था की पुनः आवश्यकता है, जो देश के विशाल जनसंख्या को मानव संसाधन में बदल सके और देश की प्रगति का मांग प्रशस्त कर सके।

निष्कर्ष:-

वर्तमान वैश्विक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक सभी समस्याओं का हल ज्ञात करना एक कठिन कार्य है, किंतु भारतीय ज्ञान प्रणाली में इन समस्याओं का समाधान छुपा हुआ है। उभरती भारतीय अर्थव्यवस्था के समक्ष विशाल मानव शक्ति को रोजगार प्रदान कर उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करना सरल कार्य नहीं है। जलवायु परिवर्तन की चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए सतत् आर्थिक विकास, आत्मनिर्भरता और विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और वैश्विक बाजार प्रतिस्पर्धा की व्यापकता को बढ़ावा देने के लिये लघु एवं माध्यम उद्योगों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को प्रभावी ढंग से आधुनिक प्रणालियों से एकीकृत कर लाभ प्राप्त किया जा सकता है।

सुझाव:-

- भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षा और प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना की जाए।
- भारतीय ज्ञान पर आधारित उत्पादों के प्रमाणीकरण हेतु कार्यक्रम चलाया जाए।
- आई.के.एस. आधारित सुक्ष्म एवं लघु उद्योगों की वित्तीय सहायता प्रदान किया जाए।
- आई.के.एस. आधारित अवसंरचना को बढ़ावा दिया जाए।
- ज्ञान आधारित पर्यटन पहलुओं को बढ़ावा दिया जाये।
- वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना चाहिए।

संदर्भ:-

- प्रो. संदीप कुमार एवं काव्यांजली तिवारी, अर्थशास्त्र में भारतीय ज्ञान प्रणाली का योगदान।
- मल्होत्रा आर. 2022, भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणालियां, संस्कृति।
- राय डी., कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य।
- डॉ. शिवाली शाक्य, भारतीय ज्ञान परंपरा और वाणिज्य।
- ऋतु वाष्णेय गुप्ता, भारतीय ज्ञान परंपरा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020
- वर्मानी डॉ. साक्षी, 2023, वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता।
- रावल मोहित, 2023, आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की उपयोगिता।
- यशोणन प्रकाश महाजन, प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक नवाचार तक: आत्मनिर्भर भारत के लिए भारतीय ज्ञान प्रणालियों का लाभ उठाना।
- www.researchgate.net
- www.sanskritimagazine.com/traditional-knowledge-systems-of-india
- Bhartiya Knowledge Systems Volume II, Issue I, June 2024

ग्रामीण अर्थव्यवस्था: भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों पर आधारित “ग्रामीण व्यापार मॉडल”

हेमा पोर्ते

सहायक प्राध्यापक, वाणिज्य विभाग, वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही,
गौरेला, पेण्ड्रा मरवाही, छत्तीसगढ़

सारांश-

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था सदियों से आत्मनिर्भरता, सामुदायिक सहयोग, नैतिक व्यापार और प्रकृति-आधारित उत्पादन प्रणाली पर आधारित रही है। भारतीय ज्ञान परम्परा में आर्थिक गतिविधियों को केवल लाभ कमाने का साधन नहीं, बल्कि धर्म, सामाजिक न्याय, वितरणात्मक न्याय और लोककल्याण से जोड़ा गया है। प्राचीन ग्रंथों जैसे अर्थशास्त्र, ऋग्वेद तथा मनुस्मृति में आर्थिक जीवन, व्यापार नीति, कर-प्रणाली और नैतिक जिम्मेदारियों का विस्तृत वर्णन मिलता है। वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था अनेक चुनौतियों/कृबेरोजगारी, पलायन, कृषि संकट, पूंजी की कमी से जूझ रही है। ऐसे में भारतीय ज्ञान परम्परा के सिद्धांतों पर आधारित ग्रामीण व्यापार मॉडल एक वैकल्पिक, टिकाऊ एवं समावेशी विकास का मार्ग प्रस्तुत करता है। यह शोध-पत्र इन्हीं सिद्धांतों का विश्लेषण करते हुए आधुनिक ग्रामीण व्यापार मॉडल के निर्माण की संभावनाओं का अध्ययन करता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा, सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ समाज में आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण साधन है और यह परंपरा जो कि सदियों से चली आ रही है हमारे ग्रामीण समाज का मजबूत स्तम्भ है।

आज आवश्यकता है कि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए। गाँव स्तर से शुरू करते हुए राष्ट्रीय स्तर तक हमें एक ऐसे व्यापारिक मंच बनाने कि जरूरत है जिससे आम आदमी की पहुँच आसान हो। इससे ग्रामीण भारत आत्मनिर्भर, सशक्त और समृद्ध बन सकता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और नैतिकता का संतुलन स्थापित होता है। यदि नीति-निर्माता, शिक्षाविद और ग्रामीण समुदाय मिलकर इस मॉडल को व्यवहार में लाए तो ग्रामीण भारत आत्मनिर्भर, समावेशी और टिकाऊ विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

मूल शब्द- ग्रामीण अर्थव्यवस्था, लोक कल्याण, नैतिक वाणिज्य, आत्मनिर्भर, सामुदायिक विकास, ग्राम स्वराज, कृषि व भारतीय ज्ञान परंपरा

1 प्रस्तावना

व्यापार का वर्तमान स्वरूप जिसको हमसभी देख रहे हैं वह किसी एक युग का कार्य नहीं है और ना ही किसी एक विचारक की देन है। आज हम जिस ग्रामीण व्यापार मॉडल को अपना रहे हैं वह अनेक विचारकों के संघर्षों का परिणाम है। वैश्विक विचारकों में एडम स्मिथ की बात करें या फिर भारतीय विचारकों कौटिल्य, महात्मा गांधी व जवाहर लाल नेहरू जैसे विचारकों ने ग्रामीण स्तर पर व्यापार की बात की है। जिसमें लघु उद्योग और व्यापार को आर्थिक पूंजी का आधार बताया है।

2011 की जनगणना के अनुसार भारत की लगभग 68.84: जनसंख्या (83.3 करोड़ से अधिक लोग) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था का मूल आधार कृषि, पशुपालन, हस्तशिल्प, लघु उद्योग एवं स्थानीय व्यापार है। परंतु वैश्वीकरण और शहरीकरण के प्रभाव से पारंपरिक “ग्रामीण व्यापार मॉडल” कमजोर हुआ है। भारतीय ज्ञान परम्परा में आर्थिक क्रियाओं को चार पुरुषार्थों धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के संतुलन में देखा गया है। यहाँ अर्थ (धन) को धर्म के अधीन माना गया है। इस दृष्टिकोण से ग्रामीण व्यापार केवल लाभ कमाने का माध्यम नहीं, बल्कि सामुदायिक समृद्धि और सामाजिक न्याय का साधन है। आज की बाजार अर्थव्यवस्था लाभ-केंद्रित है, जबकि भारतीय दृष्टिकोण लोक कल्याण पर केंद्रित है। इस अंतर को समझना और उसे ग्रामीण विकास में लागू करना समय की मांग है।

2 साहित्यिक अवलोकन

किसी भी क्षेत्र या विषय में शोध करने से पहले यह जानना जरूरी होता है कि आपके शोध पत्र प्रबंध पर पहले क्या क्या काम हो चुके हैं और उस विषय की वर्तमान शोध अंतर क्या है। ताकि आपके शोध को सही दिशा मिल सके।

गोविंद चंद्र पांडे (2008), ऋग्वेद

इस पुस्तक में लेखन ने व्यापार से जुड़ी उन आयामों की बात की है जिससे व्यापार को टिकाऊ और सामाजिक स्तर पर 'भरोसे की दुकान' की तरह समाज में अपना अस्तित्व बनाए रखे। हालांकि यह पुस्तक सीधे तौर पर व्यापार या उद्योग पर आधारित नहीं है लेकिन इस पुस्तक के माध्यम से जिस विचार और सिद्धांत की बात की गई है वो व्यापार की परिभाषा को समझने या समझाने के लिए पर्याप्त है। लेखक ने इस पुस्तक में कहा है कि सत्य, अनुशासन, धैर्य, संतुलन और व्यवहार, व्यापारिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

R. SHAMASASTRY (1915) KAUTILYA" S ARTHSHAstra

इस पुस्तक में लेखन ने भारतीय ज्ञान परंपरा के नींव को और मजबूत किया है, लेखक ने कौटिल्य के अर्थशास्त्र व्यापार को अर्थव्यवस्था का अत्यंत व्यवस्थित और सामाजिक व वैज्ञानिक रूप से व्यापारिक विश्लेषण किया है। इस पुस्तक में कौटिल्य द्वारा न्यायसंगत व्यापार को अपनाया गया है ताकि वस्तुओं की लाभ की सीमा तय हो, जिससे उपभोक्ताओं का शोषण न हो। ग्रामीण स्तर से शुरू करते हुए उन्होंने माप तौल की एकरूपता, बाजार नियंत्रण जैसे व्यापारिक नियमों को आवश्यक बताया। जो आज भारतीय दृष्टिकोण से इस ज्ञान परंपरा को एक व्यापार मॉडल के रूप में मान लिया गया है।

बी. सिंह गहलोत (2017), आर्थिक विचारों का इतिहास

इस पुस्तक में विभिन्न आर्थिक विचारकों के सिद्धांतों के माध्यम से आर्थिक विकास प्रक्रिया को समझने का प्रयास किया गया है। ग्रामीण व्यापार को लेकर इस पुस्तक में यह कहा गया है कि गांवों में व्यापार मुख्यतः कृषि उत्पाद, हस्तशिल्प और स्थानीय बाजार पर आधारित होता है। पारंपरिक अर्थशास्त्र में ग्रामीण बाजार या व्यापार को सीमित माना गया, लेकिन आधुनिक विचारकों ने इसे आर्थिक विकास का आधार बताया है। पुस्तक में यह भी बताया गया है कि आधुनिक दौर में व्यापार को गति देने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापार के विकास के लिए बाजार की उपलब्धता, बुनियादी सड़कें, बाजार प्रणाली और सरकारी नीतियों का होना अत्यंत आवश्यक बताया है।

अमर्त्य सेन (1999), आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य

इस पुस्तक में अमर्त्य सेन ने परंपरागत 'आय आधारित विकास' की अवधारणा को चुनौती दिया है। सेन ने यह तर्क दिया है कि वास्तविक विकास का अर्थ है दू लोगों की वास्तविक स्वतंत्रताओं का विस्तार हो, लोगों में सहकारी विचारों का प्रभाव हो। उन्होंने कहा है कि जबतक हमारे विचार, सरकार की व्यापार से जुड़ी नीतियाँ ग्रामीण स्तर तक नहीं पहुँच पाती तबतक हम एक विकसित राष्ट्र की कल्पना नहीं कर सकते। सेन के विचारों से एक मानव-केंद्रित ग्रामीण विकास और व्यापार मॉडल स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आता है।

वे कहते हैं कि ग्रामीण लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल उपलब्ध कराकर उन्हें स्वावलंबी व्यापार करने योग्य बनाना चाहिए। उन्होंने सहकारी समितियाँ, स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं और गरीब वंचित वर्गों को व्यापार में भागीदार बनाने की बात कही है। जबतक ग्रामीण उत्पादों (जैसे हस्तशिल्प, कृषि उत्पाद) को स्थानीय और बाहरी बाजारों से जोड़ने का काम नहीं किया जाएगा तबतक व्यापार का स्तर निम्न ही रहेगा। सरकार को चाहिए कि ग्रामीण क्षेत्रों में संचार सेवा और अन्य डिजिटल सुविधाओं को विस्तार करना चाहिए ताकि ग्रामीण व्यापार मॉडल को सुदृढ़ और समावेशी बनाया जा सके।

तिलक बागची व शशांक कुमार पांडे (2023), गांधी, जनजाति एवं ग्रामीण विकास

यह पुस्तक महात्मा गांधी के उन विचारों और दर्शन पर आधारित है जो उन्होंने भारत के ग्रामीण और आदिवासी समाज के पुनरुद्धार के लिए प्रस्तुत किए थे। ग्रामीण विकास की अवधारणा देते हुए गांधी जी ने कहा था कि "यदि गाँव नष्ट हो गए, तो भारत भी नष्ट हो जाएगा। पुस्तक के माध्यम से लेखन ने यह स्पष्ट किया है कि देश की प्रगति शहरों के बजाय ग्रामीण अर्थव्यवस्था, ग्रामोद्योग और ग्रामीण कौशल के विकास को मजबूत करने से हो सकती है। गांधी जी गांवों को आर्थिक कार्यक्रमों का केंद्र बिन्दु मानते थे। अंततः इस पुस्तक के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि यदि भारतीय ज्ञान

परंपरा को बनाए रखना है तो गाँधीवादी दृष्टिकोण को अपनाने की आवश्यकता है। क्योंकि गांधी के विचारों में गाँवों को रोजगार के साथ साथ व्यापार से भी जोड़ने का सिद्धांत शामिल है।

डॉ. बी. एल माथुर (2017), ग्रामीण अर्थव्यवस्था

इस पुस्तक में लेखक ने कृषि, कुटीर उद्योग और ग्रामीण रोजगार को अर्थव्यवस्था का आधार माना है, लेखक ने ग्रामीण गरीबी, बेरोजगारी और संसाधनों की कमी पर गहन तरीके से प्रकाश डाला है। उन्होंने कहा है कि सरकारी योजनाओं और सहकारी संस्थाओं की भूमिका अगर ग्रामीण स्तर पर मजबूत हो तो ग्रामीण व्यापार मॉडल का विस्तार राष्ट्रीय स्तर तक पहुँचने में कम समय लगेगा। साथ ही सरकारी सहायता, ऋण और बाजार से जुड़ाव सुगम हो तो ग्रामीण क्षेत्रों में भी उद्योग क्रांति लाई जा सकती है। अंततः यह पुस्तक से यह स्पष्ट होता है कि स्थानीय संसाधनों, स्थानीय लोगों और सामूहिक प्रयास से व्यापार नीति नियम का सही इस्तेमाल हो तो ग्रामीण व्यापार को मजबूत बनाया जा सकता है।

3 भारतीय ज्ञान परम्परा में आर्थिक विचार

(क) कौटिल्य का आर्थिक दृष्टिकोण

कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में राज्य की आय, कर व्यवस्था, व्यापार नियंत्रण, मूल्य निर्धारण और ग्रामीण उत्पादन प्रणाली का उल्लेख मिलता है। कौटिल्य ने कृषि, पशुपालन और हस्तशिल्प को राज्य की आय का मुख्य स्रोत बताया। उन्होंने स्थानीय बाजारों की निगरानी, उचित मूल्य निर्धारण और व्यापार में पारदर्शिता पर बल दिया।

(ख) वैदिक साहित्य में आर्थिक व्यवस्था

ऋग्वेद में 'समृद्धि' और 'सामूहिक उन्नति' की अवधारणा मिलती है। 'संगच्छध्वं संवदध्वं' का सिद्धांत सामूहिक प्रयास और सहयोग आधारित अर्थव्यवस्था को दर्शाता है।

(ग) धर्मशास्त्रों में व्यापार नैतिकता

मनुस्मृति में व्यापारियों के लिए नैतिक नियम, माप-तौल की शुद्धता और उपभोक्ता संरक्षण के सिद्धांत मिलते हैं।

4 ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वर्तमान चुनौतियाँ

- कृषि पर अत्यधिक निर्भरता
- मूल्य अस्थिरता
- ग्रामीण युवाओं का पलायन
- वित्तीय संसाधनों की कमी
- बाजार तक सीमित पहुँच

इन समस्याओं का समाधान केवल आधुनिक तकनीक से संभव नहीं है इसके लिए सांस्कृतिक एवं नैतिक आधार भी आवश्यक है। राज्य सरकार को स्थानीय सरकार के साथ समन्वय बनाकर चलने की जरूरत है।

5 भारतीय ज्ञान परम्परा आधारित ग्रामीण व्यापार मॉडल

(क) सामुदायिक सहयोग मॉडल

भारतीय परंपरा में 'सहकारिता' का भाव प्रमुख रहा है। ग्राम पंचायत और स्थानीय संस्थाएँ सामूहिक उत्पादन एवं विपणन को बढ़ावा दे सकती हैं। विनिमय प्रणाली भारतीय ज्ञान परंपरा का अभिन्न आर्थिक अंग है जो आज भारतीय ग्रामीण समाज में पुनः आवश्यकता के रूप में देखी जा रही है।

(ख) नैतिक व्यापार

व्यापार में ईमानदारी, पारदर्शिता और उचित मूल्य निर्धारण। हमने ग्रामीण स्तर पर यह देखा है कि गाँव के लोग आज भी व्यापार में अपने नैतिक व मौलिक भावना को जीवंत रखे हैं। आज भी आपसी जरूरतों के लिए एकदूसरे के भरोसा विश्वास के साथ ईमानदारी की व्यापार गाँव के लोग निभा रहे हैं।

(ग) प्रकृति-आधारित उत्पादन मॉडल

प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण के साथ उत्पादन जैविक खेती, पारंपरिक बीज, जल संरक्षण व वनोपज। इन सारे सिद्धांतों को हम अक्सर गाँव में ही पालन करते देख पाते हैं।

(घ) स्थानीय से वैश्विक (Local to Global) मॉडल

‘वोकल फॉर लोकल’ की अवधारणा भारतीय परंपरा के ‘स्वदेशी’ सिद्धांत से जुड़ी है। स्थानीय उत्पादों को डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा जा सकता है। डिजिटल प्लेटफॉर्म और भी सुगम और सस्ता बनाने की आवश्यकता है ताकि गाँव के लोग डिजिटल माध्यम से जुड़कर अपने व्यापार को गति दे सकें।

(ङ) कौशल-आधारित ग्रामीण उद्यमिता

गुरुकुल परंपरा की तर्ज पर स्थानीय कौशल प्रशिक्षणकृहस्तशिल्प, हथकरघा, खाद्य प्रसंस्करण। हालांकि सरकार द्वारा विभिन्न योजनाएँ चलाई जा रही जिससे युवा विभिन्न क्षेत्रों में कौशल सीख रहे हैं। पर ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार और उद्योग से जुड़ी योजनाओं के लिए प्रशिक्षण केंद्र ग्रामीण स्तर पर भी विस्तार करने की आवश्यकता है।

6 आधुनिक संदर्भ में उपयोगिता

(क) आत्मनिर्भर भारत अभियान

भारत सरकार द्वारा संचालित ‘आत्मनिर्भर भारत’ अभियान ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देता है। आज गाँव स्तर से लेकर जिला तक आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत रोजगार व व्यापार के लिए ऋण उपलब्ध कराया जा रहा है।

(ख) सहकारिता आंदोलन

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम ग्रामीण व्यापार को सशक्त करने में भूमिका निभाता है।

(ग) स्वयं सहायता समूह मॉडल

महिलाओं के माध्यम से वित्तीय समावेशन और स्थानीय उत्पादन में वृद्धि। आज हम ग्रामीण क्षेत्रों में अधिकतम व्यापार देख रहे हैं जिसको चलाने में अहम योगदान स्वयं सहायता समूहों का ही रहा है।

7 प्रस्तावित मॉडल की संरचना

घटक	विवरण
उत्पादन	जैविक कृषि, हस्तशिल्प
वित्त	सामुदायिक कोश, सूक्ष्म उद्योग
विपणन	स्थानीय बाजार, डिजिटल प्लेटफॉर्म
प्रशिक्षण	परंपरागत कौशल, आधुनिक तकनीक
नैतिकता	धर्म आधारित व्यापार नीति

8 केस अध्ययन (संक्षेप में)

कुछ राज्यों जैसे कि छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश में सहकारी दुग्ध उत्पादन और महिला स्वयं सहायता समूहों ने सामुदायिक मॉडल को सफल बनाया है। इससे आय वृद्धि और सामाजिक सशक्तिकरण दोनों हुआ है। आज गाँव गाँव डेयरी फार्म खुलने लगे हैं जिसका सीधा लाभ आम जन के साथ साथ सरकार को भी हो रहा। परिवार के सदस्यों व ग्रामीणों को स्थानीय रोजगार भी मिलने लगा है। आज हम देख रहे हैं दूध, दही, घी, पनीर जैसे उत्पादों का व्यापार ग्रामीण क्षेत्रों में तेजी से फैल रहा है।

9 शोध पद्धति

यह शोध पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों/प्राचीन ग्रंथ, सरकारी रिपोर्ट, शोध लेखकृका उपयोग किया गया है। अधिकतर दूसरे स्रोतों का ही इस्तेमाल किया गया है।

10 सुझाव

भारतीय ज्ञान परंपरा में स्वावलंबन, स्थानीय संसाधनों का उपयोग, सामूहिकता और प्रकृति के साथ संतुलन को प्रमुख माना गया है। इन्हीं सिद्धांतों पर आधारित ग्रामीण व्यापार मॉडल विकसित करना आज की आवश्यकता है।

सबसे पहले, गांवों में स्थानीय उत्पादन-स्थानीय उपभोग (Local to Local) को बढ़ावा दिया जाए, जैसे कृषि, हस्तशिल्प, वन उत्पाद और डेयरी। इससे लागत कम होगी और आय बढ़ेगी। पारंपरिक हाट-बाजार प्रणाली को आधुनिक रूप देकर डिजिटल प्लेटफॉर्म से जोड़ा जा सकता है, जैसे eNAM और GeM, जिससे किसान और कारीगर सीधे बड़े बाजारों तक पहुंच सकें।

दूसरा, सहकारी समितियां और स्वयं सहायता समूह को मजबूत किया जाए, जिससे सामूहिक उत्पादन और विपणन संभव हो। इसमें महिलाओं की भागीदारी विशेष रूप से बढ़ाई जानी चाहिए। तीसरा, डिजिटल साक्षरता और तकनीकी प्रशिक्षण देकर ग्रामीण युवाओं को ई-कॉमर्स, ऑनलाइन भुगतान और विपणन से जोड़ा जाए। सरकार की योजनाओं का प्रभावी उपयोग आवश्यक है, जैसे डिजिटल इंडिया, स्टार्टअप इंडिया, पी.एम मुद्रा योजना। अंततः इस मॉडल को परंपरा, तकनीक व नीति के समन्वय से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर, समावेशी और टिकाऊ बना सकता है।

11 निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परम्परा केवल सांस्कृतिक धरोहर नहीं, बल्कि व्यावहारिक आर्थिक मार्गदर्शक भी है। ग्रामीण व्यापार मॉडल यदि धर्म, नैतिकता, सहकारिता और प्रकृति-संतुलन के सिद्धांतों पर आधारित हो, तो यह टिकाऊ और समावेशी विकास का आधार बन सकता है। जो की ग्रामीण समाज का मजबूत स्तम्भ है। आज आवश्यकता है कि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जाए। इससे ग्रामीण भारत आत्मनिर्भर, सशक्त और समृद्ध बन सकता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करती है, जिसमें आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय, पर्यावरण संरक्षण और नैतिकता का संतुलन स्थापित होता है। यदि नीति-निर्माता, शिक्षाविद और ग्रामीण समुदाय मिलकर इस मॉडल को व्यवहार में लाए तो ग्रामीण भारत आत्मनिर्भर, समावेशी और टिकाऊ विकास की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

संदर्भ सूची

- कंगाले, आर.पी (अनुवादक). (1960-1965). द कौटिल्या अर्थशास्त्रा (अंक 1-3). यूनिवर्सिटी ऑफ बॉम्बे.
- अमर्त्य सेन. (1999). आर्थिक विकास और स्वातंत्र्य. राजपाल एंड संस
- गोविंद चंद्र पांडे. (2008). ऋग्वेद. लोकभारती, इलाहाबाद
- मनु. (2015). मनुस्मृति (अनुवाद रूगीता प्रेस). गीता प्रेस
- डॉ. बी.एल माथुर. (2017), ग्रामीण अर्थव्यवस्था. अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- बी. सिंह गहलोत. (2017). आर्थिक विचारों का इतिहास. अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- तिलक बागची - शशांक कुमार पाण्डेय. (2023). गांधी, जनजाति एवं ग्रामीण विकास. रावत पब्लिकेशन्स, जयपुर
- भारत सरकार। (2011 -2025). ग्रामीण विकास रिपोर्ट
- भारत सरकार। (2010 - 2024). राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम वार्षिक प्रतिवेदन

विषय-भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद विज्ञान

श्रीमती अंजना खरे गुप्ता

सहायक प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र) वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही,
जिला, जी.पी.एम. (छ.ग)

Abstract (सारांश)

प्राचीन भारत में मानव न केवल आध्यात्मिक वरन संसारिक जीवन के व्यावहारिक ज्ञान को अनदेखा नहीं करते थे। इसी कारण वे विज्ञान जगत के अनेक विद्याओं नक्षत्र विज्ञान, गणित, रसायन, भौतिक, ज्योतिष तथा चिकित्सा के क्षेत्र में काफी महत्वपूर्ण योगदान दिया। यूँ तो वैदिक काल से ही भारतीय चिकित्सा पद्धति का आरंभ हुआ। किंतु बाद में चरक और सुश्रुत द्वारा ही इसका वास्तविक विकास हुआ। आयुर्वेद चिकित्सा विज्ञान की स्वदेशी प्रणाली है, जिसे भारतीय ज्ञान परंपरा में एक स्तंभ के रूप में देखा जा सकता है। प्राचीन चिकित्सकों में चरक, सुश्रुत माधव, जीवक, वागभट्ट आदि प्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक थे।

आधुनिक युग में जब मानव जाति तीव्र गति से विकास पथ पर बढ रहा है किंतु न कहीं व अपने स्वास्थ्य को अनदेखा कर रहा है, जिससे कई गंभीर रोगों से उनका जीवन संकट में पडत्र गया है। कोरोना संकट के समय समस्त विश्व ने आयुर्वेद की जीवन शक्ति को न केवल जाना वरन उनके प्रति जनमानस में विश्वसनीयता भी बढी। आधुनिक युग में शल्य क्रिया हेतु जिन प्रणालियों का प्रयोग किया जा रहा है, उनका विकास आज से सैकड़ों वर्ष पूर्व भारत में पहले ही हो चुका है।

मूलशब्द-चरक, सुश्रुत, शल्य क्रिया, औषधि

प्रस्तावना:-विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में प्राचीन भारत अपने समय से आगे था। इनमें गणित, रसायन, ज्योतिष कृषि अभियांत्रिकी और चिकित्सा विज्ञान महत्वपूर्ण थे। भारतीय ज्ञान परंपरा में प्राचीन चिकित्सा विज्ञान की महत्ता वर्तमान में उत्पन्न हुए शारीरिक मानसिक विकारों के कारण और भी बढ जाती है। अतः यह आवश्यक है कि जीवन को आरोग्यमय दीर्घायु तथा सभी विकारों से मुक्त रखा जाये। आयुर्वेद की यात्रा वैदिक काल से आरंभ होकर निरंतर विकसित होती रही, जिसकी प्रासंगिकता आज भी बनी हैं।

(1) वैदिक काल में आयुर्वेद:- वैदिक साहित्य में धर्म के साथ-साथ जीवन को आरोग्यमुक्त रखने के लिए चिकित्सा विज्ञान संबंधी अनेक तत्व और सिद्धांत निहित है। चिकित्सा विज्ञान अथर्ववेद से संबंधित है किन्तु ऋग्वेद से भी हमें आयु संबंधी मंत्रों की जानकारी मिलती है। इन मंत्रों में प्राकृतिक वस्तुओं से स्वास्थ्य प्राप्ति के निर्देश है।² ऋग्वैदिक काल में वैद्यों को बडे ही आदर की दृष्टि से देखा जाता था क्योंकि उनमें विशिष्ट कुशलता थी। सर्वश्रेष्ठ चिकित्सक के रूप में रूद का आह्वान किया गया है। सोम, वरुण आदि को औषधि देने वाला बताया गया है। कई रोगों अजक (जहर से होने वाले रोग) यक्ष्मा अपचित (गण्डमाला) हरिमाण हृद रोगर श्रीपाद आदि का उल्लेख है। रोग के कारणों में अनुमिवम अर्थात् कीटाणुओं को माना गया है।³ पूरा एक अध्याय औषधियों का विवरण देता है। देवताओं के चिकित्सक अश्विनी कुमार द्वारा कटे हुए पैरों को शल्य क्रिया द्वारा जोडे जाने का उल्लेख मिलता है।⁴

आयुर्वेद का संबंध अथर्ववेद से है। सुश्रुत के अनुसार अथर्ववेद का उपवेद आयुर्वेद है। यह आयु का वेद है। चरक के अनुसार आयु शरीर, मन, इन्द्रिय और आत्मा चारों का संगम है।⁵ यथा-

शरीरेन्द्रियसत्वाम संयोगों धारि जीवितम्

नित्यगश्चानुबंधश्चयपोशैरायुरूच्यते (चरक संहिता 1/4/8)

अथर्ववेद में कुल 20 कांड 731 सूक्त और 5967 मंत्र है, इनमें से 1200 मंत्र ऋग्वेद से लिये गये हैं। अथर्ववेद का 8वां कांड मनुष्य की आयु से संबंधित है, जिसमें विभिन्न मंत्रों द्वारा मानव की लम्बी आयु की कामना की गयी है। आयुर्वेद की उत्पत्ति के भी दो सिद्धांत बताये गये हैं 1.दैवी उत्पत्ति के सिद्धांत 2. लौकिक उत्पत्ति के सिद्धांत। चरक और सुश्रुत (आयुर्वेद के संहिताकार) ने आयुर्वेद की उत्पत्ति ब्रम्हा से मानी है। ब्रम्हा ने श्रृष्टि की रचना के पूर्व ही आयुर्वेद की रचना की, जिससे

प्राणियों के जीवन की रक्षा की जा सके। ब्रम्हा से यह ज्ञान दक्ष प्रजापति ने प्राप्त किया, जिसे उन्होंने अश्विनीकुमारों को दिया और अश्विनीकुमारों ने इन्द्र को दिया। तब आयुर्वेद देवलोक तक ही सीमित था।⁶ जहां तक आयुर्वेद के लौकिक उत्पत्ति का प्रश्न है उसके संबंध में बताया गया कि हमारे प्राचीन महर्षियों ने प्राणियों को रोगमुक्त करने के लिए हिमालय पर्वत में एक संगोष्ठी का आयोजन किया, जिसमें यह निर्णय लिया गया था कि महर्षि भारद्वाज ऋषि ने यह ज्ञान आत्रेय ऋषि को दिया जिसे उन्होंने अपने 6 शिष्यों को दिया।⁷

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट होता है कि अति प्राचीन काल से ही मानव अनेक रोगों से पीड़ित था। जिसका उपचार उस समय उपलब्ध नहीं था। आयुर्वेद के माध्यम से उन रोगों का उपचार कर पाना संभव हो सका। सुश्रुत संहिता में भी आयुर्वेद को इन्द्र से धनवन्तरि और बाद में सुश्रुत आदि शिष्यों को दिये जाने का विवरण है। प्राचीन चिकित्सा संहिताओं में आयुर्वेद के 8 अंग बताये गये हैं जिनमें शल्य व काय चिकित्सा प्रमुख है। शल्य तंत्र के ग्रंथों में सुश्रुत का और काय चिकित्सा में चरक संहिता प्रमुख है।

आयुर्वेद के विकास क्रम को देखें तो प्रतीत होता है कि वैदिक काल में शरीर संरचना का ज्ञान था, जिसमें सहायक था। यज्ञों में पशुओं के शरीर का विच्छेदन। यजुर्वेद में रोग के कारण प्रकार उपचार की विधियाँ सुझाई गयी है। वैदिक काल में कबीलाई जीवन व्यतीत करने के कारण अपने, शारीरिक कष्टों के लिए दैवीय देन मानते थे, जिसका उपचार वे झाड़ू-फूक से करते थे। किन्तु जब आर्य सभ्यता का विकास हुआ तो उन्हें यह विश्वास हो गया कि अलौकिक नहीं वरन् लौकिक कारणों से बीमारी होती है। जिसके उपचार में जड़ी बूटियाँ का प्रयोग किया जाने लगा। तब धीरे-धीरे तंत्र-मंत्र समाप्त होने लगा। इसी कारण अर्थववेद में दोनों ही विधियों का उल्लेख है।⁸

अर्थववेद में रोग के तीन कारण बताये गये हैं। पहला विष (यक्ष्म) दूसरा, यातुधान और तीसरा वात, पित्त और कफ (अग्नि) को बताया गया है। इसके अतिरिक्त ऋतु परिवर्तन से भी ज्वर होने का कारण बताया गया है। गंदगीको भी बीमारी का कारण मानते थे। इसी कारण जल की तुलना अमृत से की गयी है। कई रोगों का विवरण भी हमें अर्थववेद से मिलता है। जैसे शीर्षमय, (सिर की बीमारी) तक्मन (बुखार) अपति (गण्डमाला) अर्ष (बवासीर) कर्णशूल (कान का दर्द) ऐलव (एलर्जी) कुष्ठ रोग, यक्ष्मा (टी.बी.) हृदय रोग, विष्कन्ध (गठिया) हरिमा (पीलिया) आदि। हड्डियों के टूटने पर उनके जोड़ने की विधि का भी ज्ञान मिलता है।⁹ अर्थववेद के 10 वें मंडल के 2 सुक्त में आठ मंत्र हैं, जिसमें मानव हड्डियों के नाम मिलते हैं- अंगुलि, स्कन्, कपाल, ललाट, उर, जंघ आदि। प्रमुख औषधि वनस्पतियों में पिप्पली, आपामार्ग, रोहिणी, श्यामा आदि। औषधियों के अतिरिक्त शल्य क्रिया के माध्यम से तीर के नोंक के भीतर टूटने पर, फोड़ा चीरने में, प्रसव कराने में इसका उपयोग होता था।

वैदिक संस्कृति में उपचार की अपेक्षा स्वस्थ रहने पर भी जोर दिया जाता था। उचित जीवन पद्धति योग के माध्यम से स्वयं को निरोग रखने का प्रयास किया जाता था। जीवामि शरद शतम् अर्थात् सौ वर्षों तक जीने की कामना की जाती थी। नियमित स्नान, गाय के गोबर से लीपना कीटाणुनाशक पानी में न थूकने, मूत्र त्याग हेतु घास वाले स्थान का प्रयोग ऐसे कुछ निर्देश थे जिससे गंदगी न हो। इस प्रकार संपूर्ण वैदिक साहित्य में आयु की वृद्धि हेतु विभिन्न उपचारों का वर्णन किया गया जो वर्तमान में भी प्रासंगिक है।

(2) बौद्धकालीन आयुर्वेद विज्ञान-वैदिक काल के बाद का काल चिकित्सा विज्ञान के विकास की दृष्टि से संघर्ष का काल रहा है, क्योंकि यज्ञ और कर्मकाण्डों के चलते समाज में पुरोहित वर्ग का वर्चस्व बढ़ा और यह वर्ग चिकित्सा पद्धति को हेय दृष्टि से देखता था। पुरोहित वर्ग चिकित्सा में दैव-व्यापाश्रय पद्धति जिसमें मंत्र, औषध, यज्ञ करने, तपस्या, भजन आदि कर्मों द्वारा रोग दूर करने के प्रयास किया जाये। जबकि युक्ति व्यापाश्रय चिकित्सा पद्धति का जिसमें आहार-विहार और औषध-द्रव्यों का प्रयोग करने पर बल दिया गया। इस प्रकार बौद्धकाल से पूर्व चिकित्सा विज्ञान के क्षेत्र में कठोरता बढ़ती जा रही थी और इस कठोरता का पहला प्रहार आयुर्विज्ञान बना क्योंकि प्राचीन भारत में जितनी भी विचारधाराएं पनप रही थी। उनमें आयुर्वेद ही अकेला वह विषय था जो प्रकृति और मनुष्य के संबंधों के बारे में वस्तुपरक ज्ञान प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध था। तत्कालीन पुरोहित वर्ग इस विचार को निन्दनीय बताया।

बौद्धकाल में चिकित्सा विज्ञान का स्वरूप अत्यंत विकसित था। पालि में इसके लिए 'तिकिच्छा' शब्द का प्रयोग किया गया है। बौद्ध साहित्य में चिकित्सक को भैषज्य, वैद्यक कहा जाता है।¹⁰ बुद्ध स्वयं एक दार्शनिक चिकित्सक थे। बुद्ध की भैषज्य गुरु के रूप में उपासना चीन, जापान, तिब्बत आदि कई देशों में है। बौद्ध संघों का वातावरण भी आयुर्वेद के विकास के

अनुरूप था। स्वयं बुद्ध का आदर्श वाक्य था जो रोगी की सेवा करता है, वह मेरी सेवा करता है। उन्होंने आयुर्वेद को आवश्यक विज्ञान समझकर गौरव प्रदान किया। कुमार भूतजीवक जैसे आयुर्वेदज्ञों को सम्मान दिया। बौद्ध साहित्य विनयपिटक से आयुर्वेद की जानकारी मिलती है। विनयपिटक का एक भाग महावग्ग कहलाता है जिसमें आयुर्वेद संबंधी एक पूरा स्कंधक चिकित्सा विज्ञान संबंधित है। इस ग्रंथ में जिस चिकित्सा पद्धति का उल्लेख है वह पूर्णतः तर्कसंगत है। इसी ग्रंथ में भगवान बुद्ध द्वारा विस्तार से औषधियों के निर्माण, सेवन तथा वितरण का उल्लेख किया गया है। इस ग्रंथ में स्वेद, चीर-फाड़, विष चिकित्सा भूत विद्या आदि आयुर्वेदांगों का वितरण है।¹¹

(3) मौर्यकाल में आयुर्वेद विज्ञान- बौद्धकाल के बाद भी आयुर्वेद का विकास जारी रहा। मौर्यकाल से गुप्तकाल तक यह चिकित्सा विज्ञान की दृष्टि से चरमोत्कर्ष का काल था। इस समय तक इसका विकास ग्रीक, सीरिया तथा अन्य पश्चिमी देशों तक हो गया था। स्वयं सिकंदर जब वापस लौटने लगा तो साथ कई सर्पविष चिकित्सक ले गया क्योंकि यूनानी वैद्यों को इसकी जानकारी नहीं थी। यूनानी राजदूत मेगस्थनीज भी चिकित्सकों को प्रतिष्ठित मानता था। ईरानी वैद्य क्टेसिय जो 400 ईसा. पूर्व में हुआ था, वह लिखता है कि भारतीयों को सिरदर्द, दंतशूल, अक्षिशोध, मुख पाक आदि रोग नहीं होते थे, जो भारतीयों के स्वास्थ्य संबंधी ज्ञान को दर्शाता है।

मौर्य युग के संस्करणों में आयुर्वेद का जो इतिहास मिलता है वह इसके उन्नत विज्ञान होने का परिचयक है। मौर्यकाल जनकल्याणकारी शासन व्यवस्था थी। जनता की सुविधा के लिए निशुल्क चिकित्सालय होते थे। जो औषधियां नहीं मिलती थी, उन्हें दूसरी जगहों से लाया जाता था। अर्थशास्त्र से पता चलता है कि चिकित्सालयों में अलग-अलग कक्ष विशिष्ट रोगों के लिए बनाये जाते थे। जैसे सामान्य कक्ष, प्रसूति कक्ष आदि। आपातकालीन चिकित्सा हेतु प्रत्याखात चिकित्सा (आपातकालीन) का उल्लेख मिलता है। मौर्यकाल से ही हमें एक नियमित चिकित्सा व्यवस्था आरंभ हुई। चिकित्सकों को विशेष सम्मान प्राप्त था, उन्हें राज्य की ओर से कई सुविधाएं प्राप्त होती थी। चिकित्सकों द्वारा तैयार औषधि को बड़े-बड़े भण्डार में एकत्र किया जाता था। जिनका भण्डारण वैज्ञानिक तरीके से किया जाता था।¹³ आयुर्वेद विज्ञान की शिक्षा और चिकित्सा की व्यवस्था करना वैद्य का ही नहीं वरन् राजा का कर्तव्य होता था। बिना राजकीय सहयोग के यह जनसाधारण की शक्ति से बाहर था।

राजा के साथ वैद्य भी रहते थे। वैद्यों को भी विशेष प्रकार की चिकित्सकीय ज्ञान दिया जाता था। जैसे बाल चिकित्सा, प्रसूति चिकित्सा, विष चिकित्सा आदि। चिकित्सा में विशेषीकरण चिकित्सा का आरंभ हो चुका था। चिकित्सक को राजा के दरबार में रखा जाता था। कारण सदैव यह भय रहता था कि कहीं कोई राजा को विष न दे दें।¹⁴ इस काल में विदेशियों के लिए भी चिकित्सा की अलग व्यवस्था थी। यदि कोई विदेशी बीमार हो जाता था तो उसकी देखरेख के लिए संपूर्ण व्यवस्था होती थी। चन्द्रगुप्त मौर्य ने कटकशोधन नामक न्यायालय बनाये थे जिनमें वैद्य भी नियुक्त किये जाते थे, जो संदिग्ध दशा में कन्याओं पर बलात्कार होने या न होने का निर्णय के आधार पर न्यायालय द्वारा निर्णय दिया जाता था।¹⁵ मौर्यकालीन भारत में आयुर्वेद के अष्टांग विभाग कई चिकित्सालयों का वर्णन भी करता है। जैसे भिष्क चिकित्सालय (काय चिकित्सक) जांगलीविद चिकित्सालय (विष चिकित्सक) गर्भ व्याधि संस्था, सूतिका चिकित्सालय (प्रसव) आदि।

इस काल में पूर्व काशी और पश्चिम में तक्षशिला चिकित्सा के प्रमुख केन्द्र हुआ करते थे। इस युग में चिकित्सा कार्य में स्त्रियां भी सहयोग करती थी। वे धात्री (नर्स) और परिचारक (कम्पाउंडर) दोनों का काम देखती थी। युद्ध में घायल सैनिकों की चिकित्सा हेतु वैद्य के साथ-साथ ये स्त्रियां भी जाती थी। कभी-कभी रसायनिक क्रिया द्वारा भी शत्रु पक्ष को पीड़ित करने का ज्ञान मिलता है। इसके लिए वायु को दूषित कर शत्रु पक्ष को स्वस्थ तथा मानसिकता को नुकसान पहुंचाया जाता था। इससे मनुष्य बहरा, अंधा, रूग्ण, गूंगा, निष्क्रिय बन जाता था। इसे आज की रसायनिक युद्ध की संज्ञा दी जा सकती है। उस समय इसे कूट युद्ध की श्रेणी में रखा गया था।

(4) मौर्योत्तर और गुप्तकाल में आयुर्वेद:- मौर्यों के बाद भी चिकित्सा के क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई। कनिष्क के दरबारी वैद्य चरक काय चिकित्सा के क्षेत्र में ख्यातिलब्ध हुए। यह आठ भागों में विभक्त है। अपने ग्रंथ चरक संहिता में उन्होंने मानव शरीर, संरचना विज्ञान, शारीरिक क्रियाएं, शारीरिक विकृतियों, रोगों और उनके लक्षणों एवं कारणों तथा उनके निदान और उपचार का उल्लेख किया है। इस ग्रंथ पर अनेक टीकाएं भी लिखी गयीं। यह ग्रंथ दवा और खान-पान पार आधारित विवरण प्रस्तुत करती है।

एक अन्य ग्रंथ सुश्रुत संहिता शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में क्रांति उत्पन्न करती है। सुश्रुत चरक अर्थ है “भली प्रकार सुना हुआ।” वह जिसने ठीक से सुनकर विद्या सीख लिया हो। इस ग्रंथ की काल गणना स्पष्ट नहीं है। इसके अनुसार शल्य क्रिया

से हीरोग को तत्काल ठीक किया जा सकता है। इसमें चीरा लगाने के बाद दवा और सफाई करने का भी महत्व बताया गया है। शल्य क्रिया में इस समय विशेष विकास हुआ था। मांस काटना, पट्टी बांधना, टांका लगाकर खून रोकना, विभिन्न तेलों के प्रयोग से घावों को सुखाना, बवासीर तथा भगन्दर को ठीक करना, मलहम बनाना आदि की जानकारी का ज्ञान प्राप्त होता है। भारतीय चिकित्सा पद्धति का विकास केवल भारत तक ही सीमित नहीं रहा वरन् यह पूर्वी द्वीपसमूह, स्याम, इण्डोचीन, चीन आदिके सुदूरवर्ती प्रदेश भी इनसे लाभ उठा रहे थे। महाकवि कालीदास ने गुप्तकाल में भारत का औषधि व्यापार पर्वीय द्वीप समूहों में होने का उल्लेख किया है।¹⁶ इसी काल में बुद्धघोष कुमारजीव, दीपकर, श्रीज्ञान आदि विद्वानों ने चीन तिब्बत और जापान आदि पूर्वीय देशों में भारत की दार्शनिक और वैज्ञानिक तत्त्वों का प्रचार किया था। इनमें आयुर्वेद भी प्रमुख था। औषधीशास्त्र पर गुप्तकाल में अनेकों ग्रंथों का प्रणयन हुआ। वात्सायन ने कामसूत्र कीरचना की जिसमें शरीर स्वास्थ्य का उल्लेख किया गया। बल वृद्धि एवं पुष्टि के लिए अश्वगंधा का प्रयोग तेल, चूर्ण या घी के रूप में बताया गया है। इसके अतिरिक्त वराहमिहिर से भी आयुर्वेद संबंधी जानकारी मिलती है।

इस प्रकार मौर्यकाल से गुप्तकाल तक आयुर्वेद विज्ञान के क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हुई। इस समय राजनीतिक स्थिरता से शासन के प्रत्येक क्षेत्रमें उन्नति हुई और स्थायित्व आया। मौर्य, कुषाण एवं गुप्त शासकों द्वारा चिकित्सकों को प्रश्रय दिया गया। इस समय के विख्यात शिक्षण संस्थानों में काशी, नालंदा एवं विक्रमशिला में आयुर्वेद प्रधान विषय के रूप में पढ़ाया जाता था। चरक, सुश्रुत, कुमारजीव, अग्नीवेष, भेल, जतुकर्ण, हारीत, नागार्जुन आदि प्रमुख आयुर्वेदाचार्य इसी काल में हुए।

निष्कर्ष:-

भारतीय ज्ञान परंपरा भारतीय ज्ञान की एक सामूहिक श्रृंखला हैं जो जानने के व्यवस्थित तरीकों से प्रदर्शित होती हैं। भारत एक देश नहीं बल्कि ज्ञान, संस्कार, आदर्श की कर्मभूमि है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बहु आयात्मक और विविध ज्ञान की परंपरा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में आयुर्वेद शिक्षा एवं संस्कृति ने समृद्धि और समान्तर सुरक्षा का समर्थन किया है। योग, मन, शरीर और आत्मा के संतुलन को बनाये रखने के लिए एक प्रमुख उपाय है जो विश्वभर में आगे बढ़ रहा है। इसके माध्यम से व्यक्ति अपने आत्मा को शुद्ध और सात्वना एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति के लिए शिक्षा प्राप्त था। आयुर्वेद, भारतीय चिकित्सा प्रणाली, जीवन का एक अभूतपूर्ण है, जो प्राकृतिक उपचारों, आहार और ध्यान को समाहित है। यह दीर्घकालिक अनुभव और शोध पर आधारित है और सदैव स्वस्थ जीवन जीने के लिए मार्गदर्शन करता है। भारतीय संस्कृति योग और आयुर्वेद को सद्गुण से जोड़कर मानव जीवन को संतुलन और स्वास्थ्य में समर्थन करने का सिद्धांत आता है। इनके माध्यम से भारतीय समृद्धि का अद्वितीय सिद्धांत उजागर होता है जो समृद्धि और सामरिक समृद्धि की प्राप्ति के लिए एक पूर्ण दृष्टि प्रदान करता है।

संदर्भ-सूचना -

- प्रो. गिरी (2019), योद एवं आयुर्वेद द्वारा संपूर्ण स्वास्थ्य एवं काटदरे इ., फडके व. और करंजगावकर एस. (2017) शिक्षा: संकल्पना एवं स्वरूप, पुनरूथान प्रकाशन सेवा ट्रस्ट।
- चरक संहिता, सूत्र 3/41
- सुश्रुत संहिता, सूत्रस्थान 7.4 अष्टांगहृदय पू. 304।
- पतंजलि योगसूत्र .2

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक गणित के गणितीय पहलू: वर्तमान और भविष्य की संभावनाएं

श्रीमती प्रियंका खरे अहरवाल

व्याख्याता, भौतिकशास्त्र, स्वामी आत्मानंद उत्कृष्ट हिन्दी माध्यम शास. कन्या उ.मा.वि., चकरभाटा (छ.ग.)

श्रीमति अंजना खरे गुप्ता

सहायक प्राध्यापक, वनस्पति विज्ञान, वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही, जी० पी० एम०

Abstract (सारांश)

भारत में वैदिक गणित का विशाल इतिहास रहा है, जिसकी उत्पत्ति प्राचीन वैदिक साहित्य और आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और ब्रह्मगुप्त जैसे गणितज्ञों के कार्यों से हुई है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों पर आधारित वैदिक गणित, जटिल गणनाओं को प्रभावी बनाने वाली समस्याओं को हल करने के लिए प्रभावी रणनीतियां प्रदान करता है। यह अध्ययन छवि प्रसंस्करण, शतरंज रणनीति और कैलकुलस जैसे क्षेत्रों में वैदिक गणित को लागू करने वाले वर्तमान अध्ययनों की पड़ताल करता है। हम भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्मूल्यांकन और पुनरुद्धार करके तथा भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जोड़कर एक अधिक नवीन, समावेशी और सांस्कृतिक रूप से जागरूक शैक्षिक ढांचा तैयार कर सकते हैं। हम गणित में भविष्य की प्रगति के लिए इस पारंपरिक प्रणाली का उपयोग करने में आने वाली कठिनाइयों और अवसरों का भी पता लगाते हैं। वैदिक गणित जैसे विषयों को समाहित करने वाली भारतीय ज्ञान परंपरा गणितीय समस्या-समाधान और गणना दक्षता में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती है।

मुख्य शब्द-वैदिक गणित, शतरंज रणनीति, छवि प्रसंस्करण, भारतीय ज्ञान परंपरा का समन्वय।

भारतीय ज्ञान परंपरा और वैदिक गणित -

भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक गणित प्राचीन भारतीय पद्धति है, जिसका पुनर्विकास 26वीं सदी में जगतगुरु स्वामी भारती कृष्णमूर्ति जी (1884-1960) ने वेदों, मुख्यतः अथर्ववेद से प्राप्त 16 सूत्रों और उप-सूत्रों के आधार पर किया। ये सूत्र जटिल गणनाओं (गुणा, भाग, वर्ग, वर्गमूल) को मौखिक और अत्यंत तीव्र गति से हल करने में सक्षम है।

वेदों में व्याकरण ज्योतिष शास्त्र वास्तुशास्त्र, मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, धनुषविद्या इत्यादि को बहुत ही सूक्ष्म ढंग से उल्लेखित किया गया है। लगभग एक शताब्दी पूर्व तक इन वैदिक दस्तावेजों का संस्कृत विद्वानों द्वारा अन्य भाषाओं में अनुवाद करने का प्रयास किया गया। लेकिन इसमें गणित सूत्र के शीर्षक से पाये गये दस्तावेजों का गणित के पदों में अनुवाद एवं इन गणितीय सूत्रों की अनुसुलझी पहली को सुलझाने का कार्य स्वामी भारती कृष्णतीर्थ जी ने 1911 से 1918 के बीच गहन अध्ययन एवं शोध कार्य से किया। भारतीय कृष्ण तीर्थ जी ने इस विषय पर 16 पुस्तकें लिखीं लेकिन दुर्भाग्य से सभी नष्ट हो गये। जब नष्ट होना सुनिश्चित हो गया तो 1958 में केवल एक पुस्तक प्रस्तावनात्मक वैदिक गणित ही लिखा पाया और आगे का कार्य होने से पूर्व ही 1960 में नका देहावासन हो गया। प्रमुख सूत्र सरलता व गति उनका समस्त अनुसंधान गणित के 16 सूत्रों व 13 उपसूत्रों पर आधारित है। जैसे ऊर्ध्ववर्तियक सूत्र (अर्धवर्तियक सूत्र) की सहायता से किसी भी छात्र सरलता व शीघ्रता से किसी भी संख्या को किसी भी संख्या से गुणन संक्रिया कर हल कर लेते हैं। मूलभूत गणितीय संक्रियाओं गुणनखण्ड, अनुपात, महत्तम समापवर्तक वर्ग व वर्गमूल, घन व घनमूल बीजगणित, समीकरण इत्यादि को बहुत तेज और मानसिक रूप से संभव बनाते हैं।

वर्तमान व आधुनिक:- वैदिक गणित ओलंपियां और प्रणाली की सहायता से छात्र CATèBanking JET, SAT प्रतियोगी परीक्षा कम समय व श्रम में अधिक प्रश्नों को शुद्धता से हल करने में दक्ष हो सकेगे। स्वामीजी के अनुसार वैदिक गणित अभ्यास से छात्रों की क्षमता व गणना गति पाँच गुना बढ़ जाती है। यह छात्रों में एकाग्रता, रचनात्मकता और तार्किक सोच का विकास करता है।

वैदिक गणित इमेज प्रोसेसिंग कम्प्यूटर विज्ञान और जटिल बीजगणितीय समस्याओं को सरल बनाने में सहायक है।

अपनी तेज गणना क्षमताओं के कारण इसका उपयोग कम्प्यूटर एल्गोरिदम और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (A) में किया जा सकता है।

भविष्य में वैदिक गणित का उपयोग:- वैदिक गणित का उपयोग भविष्य में जटिल गणनाओं को सैकड़ों में हल करने प्रतियोगी परीक्षाओं में गति और सटीकता बढ़ाने मानसिक क्षमता को तेज करने और कोडिंग AI में तर्क (Logic) विकसित करने तथा कम्प्यूटर एल्गोरिदम बनाने में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में किया जा सकता है।

व्यापार और फाइनेंस में भी बड़ी संख्याओं की त्वरित गणना प्रतिशत निकालना और सही खाते के कामों को आसान बनाया जा सकता है।

डिजिटल शिक्षा और AI एकीकरण जैसे ऑनलाइन कोर्स एआई आधारित एप्स और इंटरैक्टिव इंबुक्स के माध्यम से वैदिक गणित विश्व स्तर पर सुलभ हो सकता है।

वैदिक गणित केवल गणना तक सीमित नहीं है, बल्कि यह गणित को एक रोचक और रचनात्मक विषय बनाता है।

ज्यामिति कैल्कुलस और कम्प्यूटरिंग में वैदिक सूत्र के नए सरल और शक्तिशाली अनुप्रयोगों पर शोध करके इसे आधुनिक तकनीक के साथ जोड़ा जा सकता है।

निष्कर्ष:-

संक्षेप में वैदिक गणित प्राचीन ज्ञान और आधुनिक व्यावहारिक अनुप्रयोगों का एक उत्कृष्ट मिश्रण है, जो भविष्य के शैक्षणिक और तकनीकी परिदृश्य को बदलने की क्षमता रखता है। यह अध्ययन छवि प्रसंस्करण, शतरंज रणनीति और कैल्कुलस जैसे क्षेत्रों में वैदिक गणित को लागू करने वाले वर्तमान अध्ययनों की पड़ताल करता है।

हम भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक से जोड़कर एक नवीन समावेशी और सांस्कृतिक रूप से जागरूक शैक्षणिक ढांचा तैयार कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ:

1. वैदिक गणित -डॉ. जे. डी. सिंह महेन्द्र कुमार लाठर
2. वैदिक गणित सुरेन्द्र खण्डेलवाल
3. Vedic Mathematics Made Easy Bathia

भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक संस्कृत साहित्य का महत्व

प्रेमानंद महिलांग

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत, शासकीय वीर सुरेन्द्रसाय स्नातकोत्तर महा. गरियाबंद, गरियाबंद (छ.ग.)

सारांश: भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और समृद्ध बौद्धिक परंपराओं में से एक है, जिसका मूल आधार वैदिक संस्कृत साहित्य है। वेद, ब्राम्हण, आरण्यक, उपनिषद एवं पुराणों में विद्यमान ज्ञान ने भारतीय संस्कृति, दर्शन और सामाजिक व्यवस्था को गहराई से प्रभावित किया है। विशेष रूप से ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अथर्ववेद भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत माने जाते हैं। इन ग्रंथों में केवल धार्मिक विचार ही नहीं बल्कि दर्शन नैतिकता, शिक्षा, विज्ञान पर्यावरण और सामाजिक जीवन से संबंधित महत्वपूर्ण सिद्धांत भी प्रस्तुत किए गए हैं। जो वर्तमान समय में आपस में चल रहे संघर्ष, वर्ग भेद को दूर करने के लिए आवश्यक है। वैदिक साहित्य में अनेक महावाक्य और सूत्र मानव जीवन को सत्य, ज्ञान और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं। उदा. - के लिए ऋग्वेद का प्रसिद्ध वाक्य “एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति” यह दर्शाता है कि सत्य एक ही है, किन्तु विद्वान उसे विभिन्न रूपों में व्यक्त करते हैं। इसी प्रकार तैत्तिरीय उपनिषद में “सत्यं वद, धर्मं चर” के माध्यम से सत्य और धर्म के पालन की शिक्षा दी गई है। वही अथर्ववेद का वाक्य “माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः” प्रकृति और पर्यावरण के प्रति सम्मान की भावना को प्रकट करता है।

इस प्रकार वैदिक संस्कृत साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की आधार शिला है। यह न केवल आध्यात्मिक और दार्शनिक चिंतन का स्रोत है बल्कि मानव जीवन के नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास का मार्गदर्शक भी है। आधुनिक युग में भी वैदिक विचार मानवता को सत्य सहिष्णुता, ज्ञान और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन जीने के प्रेरणा प्रदान करते हैं। इसलिए वैदिक साहित्य का अध्ययन भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

मुख्य शब्द:- भारतीय ज्ञान परंपरा, वैदिक संस्कृत साहित्य, वेद और उपनिषद् वैदिक महावाक्य, वैदिक दर्शन और संस्कृति।

(i) प्रस्तावना:-

भारतीय संस्कृति और सभ्यता का विकास वैदिक ज्ञान परंपरा के आधार पर हुआ है। वैदिक साहित्य मानव इतिहास की सबसे प्राचीन और समृद्ध साहित्यिक धरोहरों में से एक है। इसमें ब्राम्हण, प्रकृति, देवताओं, मानव जीवन तथा सामाजिक व्यवस्था से संबंधित गहन विचार प्रस्तुत किए गए हैं। वैदिक ऋषियों ने अपने अनुभव और चिंतन के आधार पर जो ज्ञान प्रदान किये हैं, वही आगे चलकर भारतीय दर्शन, संस्कृति और जीवन मूल्यों का आधार बना।

भारतीय ज्ञान परंपरा का उद्देश्य केवल बौद्धिक ज्ञान प्राप्त करना नहीं था, बल्कि जीवन को सत्य, धर्म और नैतिकता के आधार पर व्यवस्थित करना भी था। इसलिए वैदिक साहित्य में ज्ञान के साथ-साथ जीवन उपयोगी शिक्षाएं भी दी गई हैं। जो वैदिक दर्शन की अमूल्य धरोहर है, और मानव जीवन को सत्य धर्म और कल्याण की दिशा प्रदान करती है तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP-2020) में भारतीय ज्ञान परंपरा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने को उल्लेख है, जो वैदिक साहित्य को रेखांकित करता है। इसके बिना किसी अतिशयोक्ति के भारतीय ज्ञान परंपरा की धुरी है।

(ii) वेदों का महत्व

चार वेद

- (1) ऋग्वेद
- (2) यजुर्वेद
- (3) सामवेद
- (4) अथर्ववेद

भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल स्रोत हैं।

1) ऋग्वेद का प्रसिद्ध मंत्र:-

अर्थ:- “संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।” ऋग्वेद (10.191.2)

व्याख्या:-हम सब प्रेम से मिलकर एक साथ चले, एक साथ बोले, और हमारे मन एक हो” समाज में यह मंत्र प्रेम, एकता, सत्यता, सहयोग को स्वीकार करने का संदेह देता है।

2) “एक सद् विप्रा बहुधा वदन्ति” ऋग्वेद (1.164.46)

अर्थ - “एक ही सत्य है, जिस विद्वान लोग अनेक प्रकार से कहते हैं।”

व्याख्या - यह महा वाक्य कहता है कि परमात्मा एक ही है, लेकिन विद्वान लोग उसे अलग-अलग नामों और रूपों में वर्णित करते हैं।

3) “आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः” ऋग्वेद (1.89.1)

अर्थ - सभी दिशाओं से हमारे पास कल्याणकारी विचार आए।

व्याख्या - यह महावाक्य मनुष्य को हर दिशा से अच्छे ओर उपयोगी विचार ग्रहण करने के लिए प्रेरित करता है।

4) “ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्” यजुर्वेद(40.1)

अर्थ - इस संसार में जो कुछ भी चल-अचल है वह सब ईश्वर से व्याप्त है।

व्याख्या - यह महावाक्य हमें बताता है कि समस्त जगत में ईश्वर का वास है। इसलिए मनुष्य को लोभ-मोह का त्याग कर संयम और धर्म के साथ जीवन व्यतीत करना चाहिए।

5) “तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मागृथः कस्यविवद्भनम्” शुक्ल यजुर्वेद (40.1)

अर्थ - “त्याग की भावना से इस संसार के पदार्थों का उपभोग करें। और किसी दूसरे के धन के प्रति लालच मत करो।”

व्याख्या - इस मंत्र में मनुष्यों को संसार की वस्तुओं को उपयोग समय और त्याग की भावना से करना चाहिए। हमें दूसरों की सम्पत्ति का लोभ नहीं करना चाहिए। यह नैतिकता को दर्शाता है।”

(6) “आगम्यताम्” सामवेद (1.1.1)

अर्थ - “आओ हमारे पास आओ” या आओ हमारा रास्ता दिखाओं”

व्याख्या - हे! परमात्मा! हमारे पास आओ और हमें ज्ञान और प्रकाश दिखाओं।

7) “माता भूमि पुत्रोऽहं पृथिव्याः” अथर्ववेद (12.1.12)

अर्थ - “पृथ्वी मेरी माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ।”

व्याख्या: इस मंत्र में पृथ्वी को माता के समान माना गया है। जैसे माता अपने पुत्र-पुत्रियों का पालन-पोषण करती है वैसे ही पृथ्वी सभी प्राणियों का पालन करती है। इसलिए मनुष्यों का कर्तव्य है कि वह पृथ्वी की रक्षा करें और प्रकृति का सम्मान करें।

(iii) ब्राह्मण ग्रंथो का मंत्र - ब्राह्मण ग्रंथ वेदो का व्याख्या करते हैं और यज्ञ तथा धार्मिक अनुष्ठानों का विवरण प्रस्तुत करता है।

8) “यज्ञौ वै श्रेष्ठतमं कर्म” शतपथ ब्राह्मण (1:1.1)

अर्थ - “यज्ञ सर्वोत्तम कर्म है।”

व्याख्या: वैदिक समाज में यज्ञ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का महत्वपूर्ण अंग था।

9) “प्रज्ञानं ब्रह्म” ऐतरेय ब्राह्मण 3.3

अर्थ - “चेतना ही ब्रह्म है।”

व्याख्या: यह वाक्य बाद में उपनिषद् का महावाक्य भी माना गया और अद्वैत दर्शन का महत्वपूर्ण सिद्धांत बना।

10) “अन्नं वै प्राणाः” तैत्तिरीय ब्राह्मण 3.2

अर्थ - अन्न ही प्राणों का आधार है।

व्याख्या: यह वाक्य जीवन में अन्न और पोषण के महत्व को बताता है।

11) “प्राणों वै प्रजापतिः (कौषोतकि ब्राह्मण 3.2)

अर्थ - “प्राण ही प्रजापति है।”

व्याख्या: यह वाक्य प्राण (जीवन शक्ति) को सृष्टि के मूलतत्त्व के रूप में प्रस्तुत करता है।

12) “ऋतं च सत्यं चाभीद्धात् तपसोऽध्यजायत” (पंचविंश ब्राह्मण 1.1)

अर्थ - “तप से ऋत और सत्य की उत्पत्ति हुई।”

व्याख्या: यह वाक्य सत्य और धर्म के मूल स्रोत के रूप में तप (आत्मसंयम) को दर्शाता है।

(iv) आरण्यक ग्रंथ:-

आरण्यक ग्रंथों में आध्यात्मिक चिंतन का विकास को दर्शाता है। इन ग्रंथों में ध्यान, तप और आत्मज्ञान से संबंधित विचारों का वर्णन मिलता है।

13) “प्राणो वै ब्रह्म।” ऐतरेय आरण्यक 2.3.1

अर्थ - “प्राण ही ब्रह्म है”

व्याख्या: इस वाक्य में प्राण (जीवन शक्ति) को परम सत्य के रूप में स्वीकार किया गया है।

14) “सर्वं खल्विदं ब्रह्म।” ऐतरेय आरण्यक (3.1)

अर्थ - “यह सम्पूर्ण जगत् ब्रह्म ही है।”

व्याख्या: यह वाक्य विचार अद्वैत दर्शन की मूल भावना को व्यक्त करता है।

15) “सत्यं वद। धर्मं चर।” तैत्तिरीय (आरण्यक 1.11.1)

अर्थ - “सत्य बोलो और धर्म का आचरण करो।”

व्याख्या - यह वाक्य वैदिक जीवन में नैतिकता और धर्म के महत्व को दर्शाता है।

16) “तत्त्वमसि” छान्दोग्य आरण्यक/उपनिषद् 6.8.7

अर्थ - वह ब्रह्म तुम ही हो।

व्याख्या - यह महा वाक्य आत्मा और ब्रह्म की एकता को स्पष्ट करता है।

17) “असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय मृत्योर्माऽमृत गमय॥”

बृहदारण्यक उपनिषद् (1.3.28)

असत्य से सत्य की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर मृत्यु से अमरता की ओर से चलो।

यह वाक्य प्रार्थना मानव जीवन में आध्यात्मिक उन्नति और ज्ञान की खोज को दर्शाती है।

(v) उपनिषदों का दार्शनिक महत्व:

उपनिषद् भारतीय दर्शन के महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

18) महावाक्य “अहं ब्रह्मास्मि” बृहदारण्यक उपनिषद् 1.4.10

अर्थ - मैं ही ब्रह्म हूँ।

यह महावाक्य अद्वैत वेदांत का आधार है और आत्मा तथा ब्रह्म की एकता को दर्शाता है।

19) “तत्त्वमसि” (छान्दोग्य उपनिषद् 6.8.7)

अर्थ - वह (ब्रह्म) तुम ही हो।

यह महावाक्य आत्मा और परमात्मा की एकता का सिद्धांत प्रस्तुत करता है।

20) “अयमात्मा ब्रह्म” (माण्डूक्य उपनिषद् 2.1)

अर्थ - यह आत्मा ही ब्रह्म है।

21) “उतिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत” (कठोपनिषद् 1.3.14)

अर्थ - उठो जागो और श्रेष्ठ ज्ञान प्राप्त करो।

22) “ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्” (ईशोपनिषद् 1.1)

अर्थ - इस जगत में जो कुछ भी है वह सब ईश्वर से आवृत है।

(vi) वेदांगों के महत्व:

वेदांग वेदों के अध्ययन के लिए सहायक शास्त्र है।

23) “वर्णः स्वरः मात्रा बलं साम सन्तानः।” (तैत्तिरीय उपनिषद् शिक्षा वल्ली 1.2)

वर्ण, स्वर, मात्रा, बल, साम और संतान - ये शिक्षा (उच्चारण विज्ञान) के प्रमुख अंग हैं।

यह सूक्त वेदों के 23 उच्चारण के महत्व को बताता है।

24) कल्प “वेदोऽषिलो धर्ममूलम्।” (गौतम धर्मसूत्र 1.1)

अर्थ: सम्पूर्ण वेद ही धर्म का मूल स्रोत है।”

यह सूक्त दर्शाता है कि वैदिक धर्म और सामाजिक व्यवस्था का आधार वेद है।

25) व्याकरण पाणिनी: “वृद्धिरादैच् यागिकि अष्टाध्यायी) 1.1.1

अर्थ - “आ, ऐ, औ, को वृद्धि स्वर कहा जाता है।

व्याख्या:- यह संस्कृत व्याकरण का पहला सूत्र है और भाषा के वैज्ञानिक अध्ययन की प्रारंभ को बतलाता है।

26) निरुक्त (यास्व)

निरुक्तं नाम शब्दानां व्युत्पत्तिः॥ निरुक्त 1.1

अर्थ:- निरुक्त शब्दों की उत्पत्ति और अर्थ की व्याख्या करने वाले शास्त्र है।

व्याख्या:- यह वेदों में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ समझाने का शास्त्र है।

27) “छन्दः पादौतु वेदस्या।” पिंगल छन्द सूत्र

छन्द वेदों के चरण (आधार) है।

वेदों के मंत्र विशेष छन्दों में रचे गए हैं।

28) ज्योतिष “कालोहि यज्ञस्य प्रमुखः। (वेदांग ज्योतिष)

अर्थ - यज्ञ और वैदिक कर्मों में समय का विशेष महत्व है।

व्याख्या - ज्योतिष शास्त्र वैदिक अनुष्ठानों के उचित समय का निर्धारण करता है।

(vii) पुराणों का महत्व

29) “सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः” विष्णु पुराण

अर्थ - सभी सुखी हो और सभी रोगमुक्त हो। मंगल कामनाए।

30) “धर्मः प्रोज्झितकैतवोऽत्र” भागवत पुराण 1.1.2

अर्थ - इस ग्रंथ में कपट रहित धर्म का वर्णन किया गया है।

31) “अहिंसा परमो धर्मः पद्यपुराण

अर्थ - अहिंसा सबसे बड़ा धर्म है।

32) “धर्मेण हीणाः पशुभिः समानाः” विष्णुपुराण

अर्थ - धर्म के बिना मनुष्य पशु के समान है।

33) “धर्मो रक्षति रक्षितः मनुस्मृति 8.11

जो धर्म की रक्षा करता है, धर्म उसकी रक्षा करता है।

(viii) निष्कर्ष:-

उपरोक्त अध्ययन से स्पष्ट होता है कि वैदिक साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की आधारशिला है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद्, वेदांग और पुराणों में निहित ज्ञान न केवल प्राचीन काल में, बल्कि वर्तमान युग में भी मानव जीवन के आध्यात्मिक, नैतिक और सामाजिक विकास का प्रभावी मार्गदर्शन करता है। आज जब विश्व में युद्ध, संघर्ष तथा तनाव के दौर में एवं तकनीकी उन्नति और भौतिकवादी प्रवृत्तियों के कारण मानव जीवन में नैतिक मूल्यों का हास, मानसिक तनाव और पर्यावरणीय संकट बढ़ रहे हैं, तब वैदिक ग्रंथ ज्ञान, संतुलित, समन्वित और मानवीय दृष्टिकोण प्रदान करता है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैदिक साहित्य की उपयोगिता विशेष रूप से तीन स्तरों पर दिखाई देती है। पहला, नैतिक एवं सामाजिक स्तर, जहाँ “धर्मो रक्षति रक्षितः” जैसे सिद्धांत सामाजिक न्याय, कर्तव्यबोध और नैतिक आचरण को सुदृढ़ करते हैं; दूसरा, आध्यात्मिक स्तर, जहाँ “अहं ब्रह्मास्मि” और “तत्त्वमसि” जैसे महावाक्य आत्मज्ञान और आंतरिक शांति की दिशा में प्रेरित करते हैं; और तीसरा, पर्यावरणीय एवं वैश्विक स्तर, जहाँ “माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः” जैसी अवधारणाएँ प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की भावना को बढ़ावा देती हैं।

भारत की नई शिक्षा नीति 2020 (एनईपी 2020) भी भारतीय ज्ञान परंपरा के पुनर्स्थापना और समावेशन पर विशेष बल देती है। यह नीति शिक्षा को केवल रोजगारोन्मुखी न मानकर उसे समग्र विकास (Holistic Development) का माध्यम मानती है। इसमें भारतीय भाषाओं, संस्कृत, पारंपरिक ज्ञान, नैतिक शिक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों को पाठ्यक्रम में शामिल करने की अनुशंसा की गई है। वैदिक साहित्य के अध्ययन से छात्रों में आलोचनात्मक चिंतन, नैतिकता, आत्मानुशासन, पर्यावरण चेतना और वैश्विक दृष्टिकोण का विकास होता है, जो नई शिक्षा नीति के प्रमुख उद्देश्यों के अनुरूप है।

इसके अतिरिक्त, वेदांगों के माध्यम से भाषा-विज्ञान, गणितीय संरचना (छन्द), समय-निर्धारण (ज्योतिष) और तर्कशक्ति का विकास होता है, जो आधुनिक शिक्षा में बहुविषयक (Multidisciplinary) दृष्टिकोण को सुदृढ़ करता है। उपनिषदों का दार्शनिक चिंतन विद्यार्थियों को आत्मविश्लेषण और नवाचार (Innovation) के लिए प्रेरित करता है, जो 21वीं सदी की आवश्यकताओं के अनुरूप है।

अतः निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वैदिक साहित्य केवल अतीत की धरोहर नहीं है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की शिक्षा व्यवस्था के लिए भी एक सशक्त आधार प्रदान करता है। नई शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में इसका समुचित समावेशन भारतीय शिक्षा प्रणाली को अधिक मूल्यपरक, समग्र, सांस्कृतिक रूप से समृद्ध और वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

(ix) संदर्भ सूची:-

- 1) ऋग्वे सायणभाषा सहित - चौखंबा संस्कृत सीरीज वाराणसी
- 2) यजुर्वेद संहिता - चौखंबा संस्कृत संस्थान वाराणसी
- 3) साववेद संहिता - चौखंबा विद्या पवन वाराणसी
- 4) अथर्ववेद संहिता - चौखम्बां विद्या भवन वाराणसी
- 5) ऐतरेम ब्राम्हण - चौखम्बां संस्कृत सीरीज
- 6) शतपथ ब्राम्हण चौखंबा संस्कृत सीरीज।
- 7) तैत्तिरीय आरण्यक, गीता प्रेस, गोरखपुर
- 8) बृहदारण्यक उपनिषद, गीता प्रेस गोरखपुर
- 9) छान्दोग्य उपनिषद गीता प्रेस गोरखपुर
- 10) शिक्षा पाणिनी - चौखम्बां विद्या भवन वाराणसी
- 11) ज्योतिष (वेदांग ज्योतिष - चौखम्बां सीरीज वाराणसी

“भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति”

श्रीमती कालिन्दी कौशिक

शोधार्थी, शा०पंडित माधवराव सप्रे महाविद्यालय, पेंडा रोड, जिला गौरेला, पेंडा मरवाही (छ.ग.)

डॉ० अर्चना शुक्ला

शोध निर्देशक, (प्राध्यापक समाजशास्त्र) शा०माता शबरी नवीन कन्या स्नात० महाविद्यालय, बिलासपुर (छ.ग.)
अटल बिहारी वाजपाई विश्वविद्यालय, बिलासपुर (छ०ग०)

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का स्रोत मुख्यतः सामाजिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं में निहित है। अध्ययन में प्राप्त आँकड़ों के अनुसार लगभग 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि पारंपरिक ज्ञान का प्रमुख स्रोत समुदाय के बुजुर्ग हैं, जिनके माध्यम से अनुभव और परंपराएँ पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होती हैं। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराएँ (20%), लोककथाएँ एवं लोकगीत (15%) तथा पारंपरिक चिकित्सक (10%) भी ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्वों में लोकनृत्य एवं लोकगीत (30%), पारंपरिक चिकित्सा (25%), त्योहार (20%), प्रकृति पूजा (15%) तथा कृषि ज्ञान (10%) प्रमुख रूप से सम्मिलित पाए गए, जो उनके सामाजिक जीवन, आस्था और आजीविका से गहराई से जुड़े हुए हैं। इसके साथ ही पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के प्रमुख तरीकों में पारिवारिक परंपरा (38%), त्योहार एवं अनुष्ठान (24%), लोकगीत एवं लोककथाएँ (19%), पारंपरिक शिक्षा (14%) तथा अन्य माध्यम (5%) शामिल हैं, जिनके द्वारा यह ज्ञान एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक संरक्षित रहता है।

इसके अतिरिक्त द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा में वैदिक ज्ञान (30%), आयुर्वेद (25%), योग (20%), पर्यावरण संबंधी ज्ञान (15%) तथा सामाजिक मूल्य (10%) महत्वपूर्ण घटक हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली बहुआयामी है, जो मानव जीवन, स्वास्थ्य, प्रकृति संरक्षण तथा सामाजिक नैतिकता से गहराई से जुड़ी हुई है। अतः पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण न केवल सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह समाज के सतत और संतुलित विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बीज शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, जनजातीय लोक संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान प्रणाली, प्रकृति संरक्षण, लोक परंपराएँ।

1. प्रस्तावना

भारत की सांस्कृतिक विरासत केवल प्राचीन ग्रंथों में सुरक्षित ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के लोक जीवन और सांस्कृतिक अनुभवों में भी अभिव्यक्त होती है। भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप अत्यंत व्यापक है जिसमें दर्शन, आयुर्वेद, योग, सामाजिक मूल्य तथा प्रकृति के साथ संतुलित जीवन की अवधारणा प्रमुख रूप से सम्मिलित है (Agarwal,2013)।

भारत के जनजातीय समुदाय इस ज्ञान परंपरा के महत्वपूर्ण संरक्षक माने जाते हैं। उनका जीवन प्रकृति के साथ गहरे संबंध पर आधारित होता है और उनके सामाजिक तथा सांस्कृतिक व्यवहार में पर्यावरण के संरक्षण की भावना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है (Behera,2010)।

जनजातीय लोक संस्कृति में ज्ञान का संचरण मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता है। लोकगीत, लोकनृत्य, कथाएँ तथा अनुष्ठान ऐसे माध्यम हैं जिनके द्वारा पारंपरिक ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता रहता है (Roy Burman,2009)।

आधुनिक समय में सामाजिक परिवर्तन और वैश्वीकरण के प्रभाव से जनजातीय समाज की पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन दिखाई दे रहा है, फिर भी उनके पास ऐसा समृद्ध अनुभवजन्य ज्ञान उपलब्ध है जो पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है (Sinha,2016)।

इसी संदर्भ में प्रस्तुत अध्ययन भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के पारस्परिक संबंधों का विश्लेषण करने का प्रयास करता है।

2. साहित्य समीक्षा

भारतीय समाज की सांस्कृतिक संरचना को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने भारतीय ज्ञान परंपरा तथा जनजातीय लोक संस्कृति के संबंध में अनेक अध्ययन किए हैं। इन अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल शास्त्रीय ग्रंथों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह लोक जीवन और सामाजिक व्यवहार में भी व्यापक रूप से विद्यमान है।

अग्रवाल (2013) ने भारतीय ज्ञान परंपरा की व्याख्या करते हुए यह स्पष्ट किया है कि भारतीय समाज में ज्ञान का विकास केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से नहीं हुआ, बल्कि यह सामाजिक अनुभवों और सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से भी विकसित हुआ है। उनके अनुसार भारतीय ज्ञान प्रणाली का आधार मानव और प्रकृति के बीच संतुलन तथा सामाजिक मूल्यों की निरंतरता पर आधारित है।

बेहरा (2010) ने जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक संरचना का अध्ययन करते हुए यह बताया कि जनजातीय समाज में प्रकृति के साथ सहअस्तित्व की भावना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। उनके अनुसार जनजातीय समुदायों की धार्मिक मान्यताएँ, कृषि पद्धतियाँ और सामाजिक व्यवहार पर्यावरण के संरक्षण से गहराई से जुड़े हुए हैं।

राय बर्मन (2009) ने अपने अध्ययन में यह उल्लेख किया है कि जनजातीय समाजों में ज्ञान का संचार मुख्यतः मौखिक परंपरा के माध्यम से होता है। लोककथाएँ, लोकगीत, नृत्य और सामुदायिक परंपराएँ इस ज्ञान को संरक्षित करने और अगली पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

सिन्हा (2016) ने जनजातीय समाज और सामाजिक परिवर्तन के संबंध में यह बताया कि आधुनिकता और विकास प्रक्रियाओं के प्रभाव से जनजातीय समाज की पारंपरिक जीवन शैली में परिवर्तन हो रहा है। इसके बावजूद जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक परंपराएँ और पारंपरिक ज्ञान आज भी उनके सामाजिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

उपरोक्त अध्ययनों के अवलोकन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच गहरा संबंध विद्यमान है। यद्यपि विभिन्न विद्वानों ने जनजातीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान के अनेक पहलुओं पर चर्चा की है, फिर भी भारतीय ज्ञान परंपरा के संदर्भ में जनजातीय लोक संस्कृति की भूमिका का समग्र विश्लेषण अपेक्षाकृत कम किया गया है। इसलिए प्रस्तुत अध्ययन इस संबंध को समझने का प्रयास करता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य

- भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन करना।
- जनजातीय लोक संस्कृति के स्वरूप को समझना।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के संबंधों का विश्लेषण करना।
- जनजातीय समाज में विद्यमान पारंपरिक ज्ञान की उपयोगिता का अध्ययन करना।

4. उपकल्पनाएँ

- भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ भारतीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में परिलक्षित होती हैं।
- जनजातीय लोक संस्कृति का स्वरूप भारतीय ज्ञान परंपरा से प्रभावित है।
- भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच घनिष्ठ संबंध पाया जाता है।
- जनजातीय समाज में विद्यमान पारंपरिक ज्ञान सामाजिक जीवन एवं आजीविका के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

5. अध्ययन क्षेत्र

यह अध्ययन छत्तीसगढ़ राज्य के बिलासपुर क्षेत्र के आसपास स्थित जनजातीय बहुल ग्रामीण क्षेत्रों में किया गया। इन क्षेत्रों में गोंड, बैगा तथा अन्य जनजातीय समुदाय निवास करते हैं। इन समुदायों की जीवन शैली मुख्यतः कृषि, वनोपज और पारंपरिक व्यवसायों पर आधारित है। अध्ययन के दौरान इन समुदायों की सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों का अवलोकन किया गया।

6. अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत अध्ययन में भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के विभिन्न आयामों को समझने के लिए वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक तथा द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों से जानकारी प्राप्त की गई है।

6.1 प्राथमिक स्रोत

प्राथमिक जानकारी प्राप्त करने के लिए अध्ययन क्षेत्र के जनजातीय समुदायों के चयनित व्यक्तियों से प्रत्यक्ष संपर्क स्थापित किया गया। इसके अंतर्गत साक्षात्कार तथा प्रत्यक्ष अवलोकन की विधियों का उपयोग किया गया। उत्तरदाताओं से उनकी सांस्कृतिक परंपराओं, लोक व्यवहार, पारंपरिक ज्ञान तथा सामाजिक गतिविधियों से संबंधित जानकारी प्राप्त की गई।

6.2 द्वितीयक स्रोत

द्वितीयक जानकारी विभिन्न पुस्तकों, शोध पत्रों, सरकारी रिपोर्टों तथा विश्वसनीय वेबसाइटों के अध्ययन के माध्यम से संकलित की गई। इन स्रोतों के माध्यम से भारतीय ज्ञान परंपरा तथा जनजातीय संस्कृति से संबंधित सैद्धांतिक और ऐतिहासिक जानकारी प्राप्त की गई।

6.3 नमूना चयन

अध्ययन के लिए उद्देश्यपूर्ण नमूना पद्धति (Purposive Sampling Method) का उपयोग किया गया। इस पद्धति के अंतर्गत ऐसे व्यक्तियों का चयन किया गया जो जनजातीय संस्कृति और पारंपरिक ज्ञान के बारे में पर्याप्त जानकारी रखते हैं। कुल 20 उत्तरदाताओं को अध्ययन में शामिल किया गया।

6.4 डेटा विश्लेषण की विधि

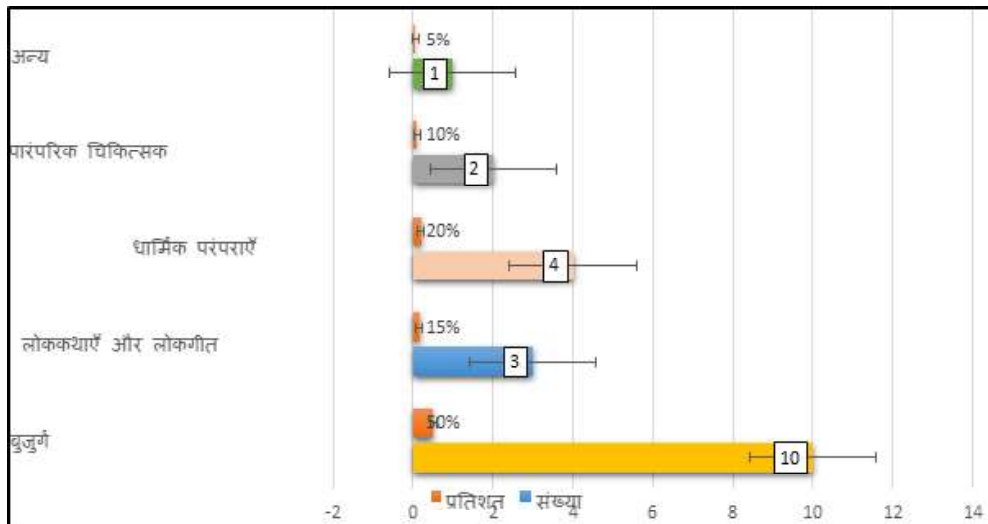
संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण वर्णनात्मक पद्धति के आधार पर किया गया है। प्राप्त जानकारी को तालिकाओं और प्रतिशत के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे अध्ययन के परिणामों को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

7. प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण

तालिका 7.1 - जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रमुख स्रोत

ज्ञान का स्रोत	संख्या	प्रतिशत
बुजुर्ग	10	50%
लोककथाएँ और लोकगीत	3	15%
धार्मिक परंपराएँ	4	20%
पारंपरिक चिकित्सक	2	10%
अन्य	1	5%
कुल	20	100%

चित्र - 7.1 जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रमुख स्रोतों का क्षेत्रीय स्तंभ आरेख द्वारा प्रदर्शन -

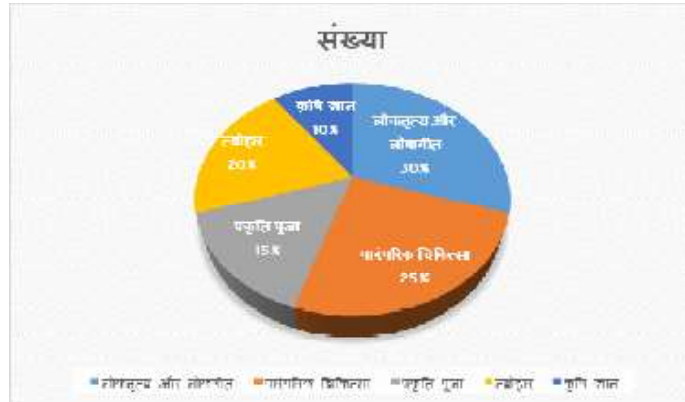


विश्लेषण - उपरोक्त चित्र - 7.1 से स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में बुजुर्गों की भूमिका सबसे महत्वपूर्ण है। लगभग 51 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने बताया कि उन्हें पारंपरिक ज्ञान अपने परिवार के बुजुर्गों से प्राप्त होता है। इससे यह संकेत मिलता है कि जनजातीय समुदाय में अनुभव और परंपरा के माध्यम से ज्ञान का हस्तांतरण प्रमुख रूप से पीढ़ी-दर-पीढ़ी होता है। इसके अतिरिक्त धार्मिक परंपराएँ (20%) भी पारंपरिक ज्ञान के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान देती हैं। वहीं लोककथाएँ और लोकगीत (15%) जनजातीय संस्कृति और ज्ञान को संरक्षित रखने का एक प्रभावी माध्यम हैं। पारंपरिक चिकित्सक (10%) भी स्थानीय उपचार पद्धतियों के माध्यम से पारंपरिक ज्ञान को आगे बढ़ाने में भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा अन्य स्रोतों (5%) से भी सीमित मात्रा में ज्ञान प्राप्त होता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान मुख्यतः सामाजिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक माध्यमों से संरक्षित एवं प्रसारित होता है।

तालिका 7.2 - जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्व

तत्व	संख्या	प्रतिशत
लोकनृत्य और लोकगीत	6	30%
पारंपरिक चिकित्सा	5	25%
प्रकृति पूजा	3	15%
त्योहार	4	20%
कृषि ज्ञान	2	10%

चित्र - 7.2 जनजातीय लोक संस्कृति के प्रमुख तत्वों का पाई आरेख द्वारा प्रदर्शन -

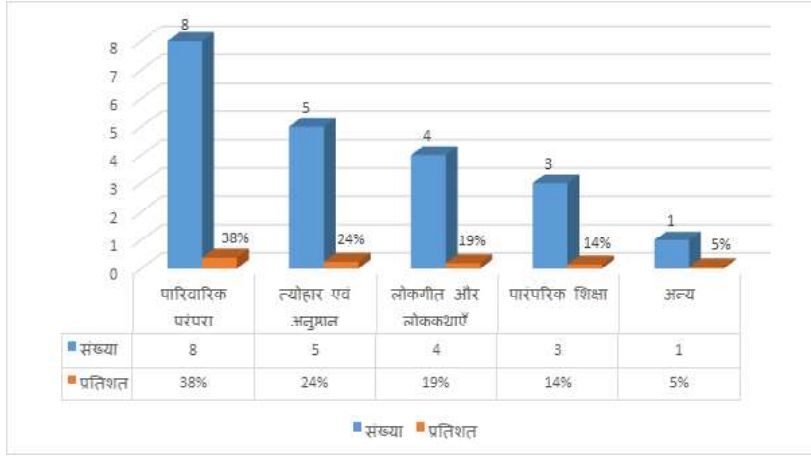


विश्लेषण - उपरोक्त चित्र - 7.2 से स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज की लोक संस्कृति में लोकनृत्य और लोकगीत का विशेष महत्व है। लगभग 30 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इसे प्रमुख सांस्कृतिक तत्व बताया है। इसके अतिरिक्त पारंपरिक चिकित्सा (25%) भी जनजातीय संस्कृति का महत्वपूर्ण भाग है, जो स्थानीय जड़ी-बूटियों और पारंपरिक ज्ञान पर आधारित है। त्योहार (20%) तथा प्रकृति पूजा (15%) भी जनजातीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं को दर्शाते हैं। इसके अलावा कृषि ज्ञान (10%) भी जनजातीय जीवन और आजीविका से जुड़ा एक महत्वपूर्ण तत्व है। इस प्रकार जनजातीय समाज की लोक संस्कृति विविध परंपराओं और मान्यताओं से निर्मित होती है।

तालिका 7.3 पारंपरिक ज्ञान संरक्षण के तरीके

तरीका	संख्या	प्रतिशत
पारिवारिक परंपरा	8	38%
त्योहार एवं अनुष्ठान	5	24%
लोकगीत और लोककथाएँ	4	19%
पारंपरिक शिक्षा	3	14%
अन्य	1	5%

चित्र - 7.3 पारंपरिक ज्ञान संरक्षण के तरीके का स्तंभ आरेख द्वारा प्रदर्शन -

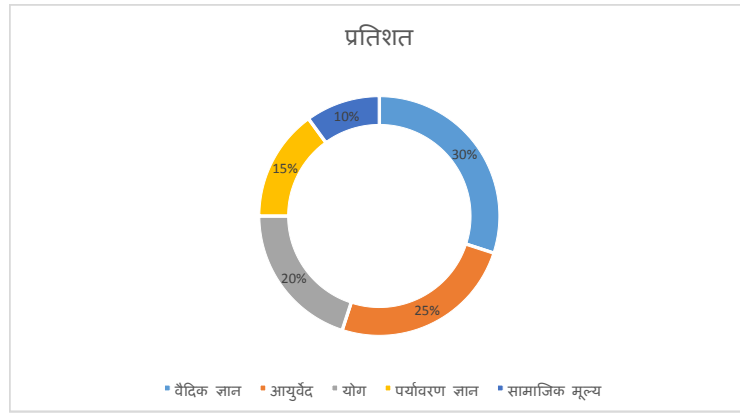


विश्लेषण - चित्र 7.3 से स्पष्ट होता है कि पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण में पारिवारिक परंपरा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका है। कुल 21 उत्तरदाताओं में से 8 (38%) ने बताया कि परिवार के बुजुर्गों द्वारा पारंपरिक ज्ञान अगली पीढ़ी तक पहुँचाया जाता है। इसके अतिरिक्त त्योहार एवं अनुष्ठान भी ज्ञान के संरक्षण का एक प्रमुख माध्यम हैं, जिसे 5 (24%) उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया। लोकगीत और लोककथाएँ भी पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिनका प्रतिशत 19 है। वहीं पारंपरिक शिक्षा के माध्यम से 14 प्रतिशत लोग ज्ञान के संरक्षण को मानते हैं। इसके अलावा 5 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने अन्य माध्यमों को भी महत्वपूर्ण बताया। इससे स्पष्ट होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण मुख्यतः पारिवारिक एवं सांस्कृतिक परंपराओं के माध्यम से होता है।

तालिका 7.4 - भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख घटक (द्वितीयक स्रोत)

क्षेत्र	प्रतिशत
वैदिक ज्ञान	30%
आयुर्वेद	25%
योग	20%
पर्यावरण ज्ञान	15%
सामाजिक मूल्य	10%

चित्र - 7.4 भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रमुख घटकों का पाई आरेख द्वारा प्रदर्शन



विश्लेषण ख्र द्वितीयक स्रोतों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा बहुआयामी और समृद्ध है। इसमें वैदिक ज्ञान का प्रमुख स्थान है, जो लगभग 30 प्रतिशत के रूप में परिलक्षित होता है। इसके अतिरिक्त आयुर्वेद (25%) और योग (20%) भारतीय ज्ञान प्रणाली के महत्वपूर्ण अंग हैं, जो स्वास्थ्य और जीवन शैली से जुड़े हैं। पर्यावरण ज्ञान (15%) भारतीय

संस्कृति में प्रकृति के संरक्षण और संतुलन की भावना को दर्शाता है। वहीं सामाजिक मूल्य (10%) समाज में नैतिकता, सहयोग और सामूहिक जीवन के सिद्धांतों को सुदृढ़ करते हैं। इससे स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा विभिन्न क्षेत्रों के समन्वय से विकसित हुई है।

8. निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के बीच गहरा संबंध पाया जाता है। अध्ययन में प्राप्त तथ्यों से ज्ञात होता है कि जनजातीय समाज में पारंपरिक ज्ञान का प्रमुख स्रोत बुजुर्ग हैं, जिनके माध्यम से यह ज्ञान पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होता है। इसके साथ ही लोककथाएँ, लोकगीत, धार्मिक परंपराएँ तथा पारंपरिक चिकित्सक भी ज्ञान के संरक्षण और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्ययन से यह भी स्पष्ट हुआ कि जनजातीय लोक संस्कृति में लोकनृत्य, लोकगीत, त्योहार, प्रकृति पूजा और कृषि संबंधी ज्ञान जैसे तत्व प्रमुख रूप से विद्यमान हैं, जो उनके सामाजिक जीवन और सांस्कृतिक पहचान से जुड़े हुए हैं। इसके अतिरिक्त पारिवारिक परंपरा, त्योहार एवं अनुष्ठान, लोककथाएँ तथा पारंपरिक शिक्षा पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण के महत्वपूर्ण माध्यम हैं।

इस प्रकार अध्ययन से यह निष्कर्ष निकलता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएँ जनजातीय समाज की सांस्कृतिक परंपराओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं तथा यह ज्ञान सामाजिक जीवन, संस्कृति और आजीविका के लिए उपयोगी सिद्ध होता है। इसलिए पारंपरिक ज्ञान के संरक्षण और संवर्धन के लिए इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाना अत्यंत आवश्यक है।

9. सुझाव

1. जनजातीय समाज में प्रचलित पारंपरिक ज्ञान और सांस्कृतिक परंपराओं को संरक्षित करने के लिए स्थानीय स्तर पर सामुदायिक पहल को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। ग्राम स्तर पर सांस्कृतिक गतिविधियों, लोक उत्सवों और पारंपरिक ज्ञान से संबंधित कार्यक्रमों का आयोजन इस दिशा में सहायक हो सकता है।
2. जनजातीय लोक संस्कृति से संबंधित ज्ञान जैसे लोककथाएँ, लोकगीत, पारंपरिक कृषि पद्धतियाँ तथा औषधीय ज्ञान का व्यवस्थित रूप से संकलन और दस्तावेजीकरण किया जाना आवश्यक है, ताकि यह ज्ञान समय के साथ लुप्त न हो।
3. भारतीय ज्ञान परंपरा और जनजातीय लोक संस्कृति के अध्ययन को शिक्षा के क्षेत्र में अधिक महत्व दिया जाना चाहिए। विद्यालयों और उच्च शिक्षण संस्थानों में इससे संबंधित विषयों को पाठ्यक्रम में शामिल करने से नई पीढ़ी को अपनी सांस्कृतिक विरासत के बारे में जागरूक किया जा सकता है।
4. आधुनिक विकास योजनाओं के निर्माण में जनजातीय समुदायों के पारंपरिक ज्ञान और अनुभवों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए, क्योंकि ये ज्ञान प्रणालियाँ पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं।
5. जनजातीय क्षेत्रों में सांस्कृतिक संरक्षण के लिए स्थानीय प्रशासन, शिक्षण संस्थानों और सामाजिक संगठनों के बीच समन्वय स्थापित किया जाना चाहिए, जिससे जनजातीय समाज की सांस्कृतिक पहचान और ज्ञान परंपरा को दीर्घकाल तक सुरक्षित रखा जा सके।

10. संदर्भ सूची

- अग्रवाल, ए. (2013). भारतीय ज्ञान परंपरा और संस्कृति. नई दिल्ली: प्रकाशन संस्थान।
- बेहरा, डी. के. (2010). भारत की जनजातीय संस्कृति और विरासत. नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
- रॉय बर्मन, बी. के. (2009). जनजातीय समाज और विकास के परिप्रेक्ष्य. नई दिल्ली: कॉन्सेप्ट पब्लिशिंग कंपनी।
- सिन्हा, बी. (2016). जनजातीय समाज और संस्कृति. नई दिल्ली: ओरिएंट पब्लिशिंग।

वेबसाइट स्रोत

- भारतीय संस्कृति पोर्टल। (2024). भारतीय ज्ञान परंपरा से संबंधित जानकारी. प्राप्त किया गया: <https://www.indianculture.gov.in>
- भारत सरकार, जनजातीय कार्य मंत्रालय। (2024). जनजातीय समाज और संस्कृति से संबंधित जानकारी प्राप्त किया गया: <https://tribal.nic.in>

भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य

Indian Knowledge Tradition Social Values

डॉ० नीरज कुमार खरे

विभागाध्यक्ष (समाज शास्त्र विभाग) वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय मरवाही, जिला: जी.पी.एम.(छ.ग.)

सारांश (Abstract)

भारतीय ज्ञान परंपरा मानव सभ्यता की सबसे प्राचीन और समृद्ध ज्ञान प्रणालियों में से एक है। यह परंपरा केवल दार्शनिक और आध्यात्मिक चिंतन तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक जीवन के नैतिक और सांस्कृतिक आधार को भी निर्धारित करती है। भारतीय ज्ञान परंपरा में सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, कर्तव्यनिष्ठा, परोपकार, समन्वय और प्रकृति के प्रति सम्मान जैसे सामाजिक मूल्यों को अत्यंत महत्वपूर्ण माना गया है। इन मूल्यों का उद्देश्य केवल व्यक्तिगत विकास नहीं बल्कि सामाजिक समरसता और वैश्विक कल्याण की स्थापना करना है। वर्तमान वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और बढ़ते भौतिकवाद के दौर में इन मूल्यों की प्रासंगिकता और अधिक बढ़ जाती है। प्रस्तुत शोध-पत्र भारतीय ज्ञान परंपरा में निहित सामाजिक मूल्यों का विश्लेषण करता है तथा आधुनिक समाज में उनकी उपयोगिता को स्पष्ट करता है।

मुख्य शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, सामाजिक मूल्य, संस्कृति, नैतिकता, समरसता।

प्रस्तावना (Introduction)

भारत की सभ्यता और संस्कृति हजारों वर्षों पुरानी है। भारतीय समाज का विकास केवल आर्थिक या भौतिक उन्नति पर आधारित नहीं रहा है, बल्कि आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों पर भी आधारित रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा में वेद, उपनिषद, स्मृतियाँ, पुराण, महाकाव्य और दर्शन शास्त्रों के माध्यम से जीवन के आदर्शों और सामाजिक व्यवस्था के सिद्धांतों का वर्णन किया गया है।

प्राचीन भारतीय चिंतन में मानव जीवन को केवल व्यक्तिगत सुख प्राप्त करने का साधन नहीं माना गया, बल्कि समाज और विश्व के कल्याण से जोड़कर देखा गया है। “सर्वे भवन्तु सुखिनः” और “वसुधैव कुटुम्बकम्” जैसे सिद्धांत इस विचारधारा को स्पष्ट करते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य मानव को नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक रूप से समृद्ध बनाना है। इसी कारण इस परंपरा में सामाजिक मूल्यों को विशेष महत्व दिया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समग्र ज्ञान प्रणाली है जिसमें धर्म, दर्शन, शिक्षा, चिकित्सा, कला, साहित्य, विज्ञान और सामाजिक व्यवस्था से संबंधित ज्ञान शामिल है। प्राचीन ग्रंथों जैसे Rigveda, Upanishads और Bhagavad Gita में जीवन के नैतिक और सामाजिक सिद्धांतों का विस्तार से वर्णन मिलता है। भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता यह है कि यह केवल सैद्धांतिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि व्यवहारिक जीवन में नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी को भी महत्वपूर्ण मानती है।

शोध साहित्य:-

- जफर उल्लाह खान द्वारा रचित है इस आलेख में जफर उल्ला खान ने भारत और यूनियन की सांस्कृतिक समन्वयी की प्रतिमा का विश्लेषण किया है इसमें कर दो भी शताब्दी ईसापूर्व की गुरुकुल परंपरा और यूनानी प्रभाव का अध्ययन किया गया है।
- डॉ. कनिका पवार की रचना में उन्होंने डिजिटल युग में शिक्षा के क्षेत्र में संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण किया है इसमें डिजिटल तकनीक के उपयोग उसकी प्रभावशीलता और उसके समक्ष आने वाली चुनौतियों पर चर्चा की गई है।
- आदित्य काव्य रामायण और महाभारत में प्रयुक्त युद्ध कला सुरक्षा तथा युद्ध विधियां पर चर्चा करता है। इस पत्र का लेखन डॉक्टर सीमा सैनी द्वारा किया गया है इसमें उन्होंने इस महाकाव्य में उद्भूत युद्ध तकनीक अस्त्र-शास्त्रों और सैन्य रणनीतियों का विस्तृत वर्णन किया है।

4. विवेक व्यास, सुचित्रा पुरोहित एवं शिवानी विकास के द्वारा रचित भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत सहित एवं प्रबंधन सांख्य दर्शन एवं याज्ञवल्क्य के (व्यवहार अध्याय) के विशेष संदर्भ में विषय पर केंद्रित हैं। जिसमें भारतीय ज्ञान परंपरा विशेष का संस्कृत साहित्य और प्रबंधन के क्षेत्र में सांख्य दर्शन और यज्ञ बालक के व्यवहार अध्याय का विश्लेषण किया है। इसमें प्राचीन भारतीय प्रबंधन सिद्धांतों की आधुनिक प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला गया है।
5. डॉक्टर राजशेखर पुरोहित ने रियासत कालीन बीकानेर के हस्तशिल्प और व्यावसायिक परिवेश का विश्लेषण किया है इसमें रियासत कालीन हस्तशिल्प की परंपरा एवं उनके सामाजिक आर्थिक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

परिकल्पना:-

- i. भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक मूल्य प्राचीन ग्रंथ पर आधारित है।
- ii. भारतीय ज्ञान परम्परा सत्य अहिंसा सहिष्णुता और परोपकार का समन्वय है।
- iii. भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व बन्धुत्व को बढ़ावा देता है।
- iv. भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य से व्यक्ति का सर्वांगीण विकास संभव है।
- v. भारतीय ज्ञान परम्परा और सामाजिक मूल्य आधुनिक समय में प्रासंगिक है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study):-

इस शोध का उद्देश्य निम्नलिखित है-

1. भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा को स्पष्ट करना।
2. भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य का विश्लेषण करना।
3. आधुनिक समाज में इन मूल्यों की प्रासंगिकता को समझना।
4. शिक्षा और सामाजिक जीवन में इन मूल्यों की उपयोगिता का अध्ययन करना।

शोध-पद्धति (Research Methodology)

यह शोध मुख्यतः वर्णनात्मक और विश्लेषणात्मक पद्धति (Descriptive and Analytical Method) पर आधारित है।

इस अध्ययन के लिए प्राचीन भारतीय ग्रंथों, पुस्तकों, शोध-पत्रों और अन्य द्वितीयक स्रोतों का उपयोग किया गया है। उपलब्ध साहित्य के विश्लेषण के आधार पर भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य का अध्ययन किया गया है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रमुख सामाजिक मूल्य:

1. सत्य (Truth): भारतीय संस्कृति में सत्य को सर्वोच्च मूल्य माना गया है। उपनिषदों में “सत्यं वद, धर्मं चर” का संदेश दिया गया है। सत्य का पालन व्यक्ति के चरित्र को मजबूत बनाता है और समाज में विश्वास तथा न्याय की स्थापना करता है।
2. अहिंसा (Non-violence): अहिंसा भारतीय संस्कृति का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसका अर्थ है किसी भी जीव को शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट न देना। इस सिद्धांत को आधुनिक काल में डींजड ळंदकीप ने सामाजिक और राजनीतिक संघर्ष का आधार बनाया। अहिंसा केवल हिंसा का अभाव नहीं है, बल्कि प्रेम, करुणा और सहानुभूति की भावना का विकास भी है।
3. सहिष्णुता और समन्वय: भारतीय समाज विविधताओं से भरा हुआ है। विभिन्न धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ होने के बावजूद भारतीय समाज में सहिष्णुता और समन्वय की भावना विद्यमान रही है। “वसुधैव कुटुम्बकम्” का सिद्धांत पूरे विश्व को एक परिवार मानने की भावना को व्यक्त करता है।
4. कर्तव्य और धर्म: भारतीय ज्ञान परंपरा में धर्म का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं है, बल्कि कर्तव्य और नैतिक आचरण से है। Bhagavad Gita में कर्तव्य पालन को अत्यंत महत्वपूर्ण बताया गया है। प्रत्येक व्यक्ति को अपने सामाजिक और नैतिक कर्तव्यों का पालन करना चाहिए।

5. सेवा और परोपकार: भारतीय संस्कृति में सेवा और परोपकार को महान धर्म माना गया है। समाज के कमजोर और जरूरतमंद लोगों की सहायता करना नैतिक कर्तव्य माना जाता है। यह मूल्य समाज में सहयोग, करुणा और मानवता की भावना को बढ़ावा देता है।
6. परिवार और सामाजिक एकता: भारतीय समाज में परिवार को सामाजिक व्यवस्था की मूल इकाई माना गया है। संयुक्त परिवार प्रणाली में प्रेम, सहयोग, सम्मान और सामूहिकता की भावना विकसित होती है। परिवार के माध्यम से सामाजिक और नैतिक मूल्यों का संरक्षण और प्रसार होता है।
7. प्रकृति के प्रति सम्मान: भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को पूजनीय माना गया है। नदियाँ, वृक्ष, पर्वत और पशु-पक्षियों को भी जीवन का महत्वपूर्ण अंग माना गया है। यह दृष्टिकोण पर्यावरण संरक्षण और प्रकृति के साथ संतुलित जीवन को प्रोत्साहित करता है।
8. आधुनिक समाज में भारतीय सामाजिक मूल्यों की प्रासंगिकता: आज के समय में वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और भौतिकवाद के कारण समाज में कई नैतिक चुनौतियाँ उत्पन्न हो रही हैं। व्यक्तिगत स्वार्थ और प्रतिस्पर्धा के कारण सामाजिक संबंध कमजोर होते जा रहे हैं।

ऐसी स्थिति में भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्य समाज को संतुलित और मानवीय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता और परोपकार जैसे मूल्य सामाजिक संघर्षों को कम कर सकते हैं और शांति तथा सद्भाव को बढ़ावा दे सकते हैं।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण संकट और जलवायु परिवर्तन जैसी समस्याओं के समाधान के लिए भी भारतीय परंपरा में निहित प्रकृति-सम्मान की भावना अत्यंत उपयोगी है।

शिक्षा में भारतीय सामाजिक मूल्यों का महत्व:

शिक्षा केवल रोजगार प्राप्त करने का साधन नहीं है, बल्कि व्यक्तित्व और चरित्र निर्माण का माध्यम भी है। भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक मूल्यों को शिक्षा प्रणाली में शामिल करना आवश्यक है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में नैतिक शिक्षा, योग, ध्यान और सांस्कृतिक अध्ययन के माध्यम से इन मूल्यों को विकसित किया जा सकता है।

इससे समाज में नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और सहयोग की भावना को मजबूत किया जा सकता है।

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान परंपरा और सामाजिक मूल्य मानव जीवन और समाज के संतुलित विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। सत्य, अहिंसा, सहिष्णुता, कर्तव्य, सेवा और प्रकृति-सम्मान जैसे मूल्य भारतीय संस्कृति की आत्मा हैं। आधुनिक वैश्विक समाज में इन मूल्यों की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ जाती है। यदि समाज और शिक्षा व्यवस्था में इन मूल्यों को पुनः स्थापित किया जाए तो एक नैतिक, समरस और शांतिपूर्ण समाज की स्थापना संभव है।

संदर्भ (References)

- I. जफर उल्लाह खॉ -4-2वीं शताब्दी ईसा.पूर्व की गुरुकुल प्रतिमा में भारत एवं उन्न के संस्कृति समन्वय का शिल्पांकन।
- II. डॉक्टर कनिका पवार -डिजिटल युग में शिक्षा संभावनाएं और चुनौतियां।
- III. डॉक्टर सीमा सैनी- आदि का रामायण एवं महाभारत में प्रयुक्त सिद्ध कल सुरक्षा तथा युद्ध विधियां।
- IV. विवेक व्यास, सुचित्रा पुरोहित, शिवानी व्यास -भारतीय ज्ञान परंपरा में संस्कृत सहित एवं प्रबंधन सांख्य दर्शन एवं यज्ञ बालक के स्मृति के विशेष संदर्भ में।
- V. डॉ राजशेखर पुरोहित -रियासत कालीन बीकानेर का हस्तशिल्प और व्यावसायिक परिवेश
- VI. Radhakrishnan, S. (2008). Indian Philosophy- Oxford University Press
- VII. Sharma, R. N. (2010). Indian Culture and Heritage. New Delhi.
- VIII. Rigveda
- IX. Upanishads
- X. Bhagavad Gita

भारतीय ज्ञान परम्परा और प्राचीन भारतीय वनस्पतिक

डॉ० रंजना सिंह

सहा० प्राध्यापक (वनस्पति शास्त्र) नवीन शा० कन्या महाविद्यालय, गौरेला, पेण्ड्रा, मरवाही,
जिला - जी० पी० एम. (छ.ग.)

शोध सारांश :-

भारतीय ज्ञान परम्परा अत्यन्त समृद्ध, विविधतापूर्ण, प्राचीन और सतत् प्रवाहमान ज्ञान प्रणाली है, जो भारत में हजारों वर्षों से चली आ रही है। संक्षेप में अगर कहे तो यह ज्ञान का वह भंडार है जो “वसुधैव कुटुम्बम्” और “सर्वे भवन्तु सुखिनः” के भाव पर आधारित है। यही भारत की पहचान और बौद्धिक सम्पदा है। इस परम्परा में प्रकृति, जीव जगत और पर्यावरण के प्रति गहरी समझ दिखाई देती है। वनस्पति विज्ञान भी इस परंपरा का महत्वपूर्ण भाग रहा है और इसका इतिहास प्राचीनकाल से शुरू होता है जब मानव ने पौधों का उपयोग औषधि, भोजन और अन्य आवश्यकताओं के लिए करना शुरू किया। विभिन्न वेदों, उपनिषदों, संहिताओं में पौधों का वर्गीकरण पौधे के अंगों, पौधों के जीवन और उनकी उपयोगिता का विस्तृत वर्णन किया गया है। ये पौधे न केवल मनुष्यों की उपयोगिता के लिए आवश्यक हैं, बल्कि प्राकृतिक पर्यावरण के संतुलन और संरक्षण में अपनी अहम भूमिका निभाते हैं।

प्रस्तावना:-

वनस्पति विज्ञान एक प्राकृतिक विज्ञान है, जिसका ज्ञान अत्यन्त प्राचीन और समृद्ध है। प्राचीन भारतीय वेदों, उपनिषदों, संहिता एवं आयुर्वेद में वनस्पति विज्ञान की गहरी समझ, विश्लेषक और उपयोगिता का वर्णन किया गया है। भारत में प्राचीन वनस्पति ज्ञान केवल औषधीय ज्ञान तक सीमित नहीं था बल्कि धार्मिक, अध्यात्मिक और पर्यावरण संरक्षण से भी जुड़ा था। विभिन्न वेदों, पुराणों एवं संहिता में वनस्पति की उत्पत्ति, वर्गीकरण, उपयोग आदि का वर्णन मिलता है। इन ग्रंथों में वर्णित पौधों से संबंधित ज्ञान उस समय के तपस्वी मनीषियों द्वारा प्राकृतिक वन्य क्षेत्रों में उनके प्रवासों के क्रम में संग्रहीत जानकारी के कारण ही संभव हो सका है, तथा बाद में इन्हीं कालों के पुस्तकों में निहित ज्ञान ही परम्परा के रूप में परिमार्जित एवं स्थानान्तरित होता हुआ आज लोक वनस्पति विज्ञान के रूप में सूचित किया जाने लगा। अगर सही अर्थों में कहा जाए तो इस ज्ञान के वास्तविक संरक्षक, विशेष भौगोलिक क्षेत्र में निवास करने वाले एथनिक (आदिवासी) समूह ही हैं जो वनस्पति के महत्व के परम्परिक ज्ञान को अपनी अगली पीढ़ी तक स्थानान्तरित कर उसे संरक्षित कर रहे हैं।

वेदों, उपनिषदों एवं पुराणों में वनस्पति विज्ञान:-

प्राचीनकाल से ही पौधों के विषय में हमारा ज्ञान विस्तृत रहा है जो कि आज भी पहले के अभिलेखों से प्रमाणित होता है। प्राचीन ग्रंथ जैसे ऋग्वेद, अथर्ववेद, चरक संहिता, सुश्रुत संहिता, विष्णु पुराण आदि में पौधों एवं पौधों के जीवन का विस्तृत वर्णन है

ऋग्वेद:-

ऋग्वेद में वनस्पति का बहुत ही दिव्य, औषधीय एवं आदरणीय वर्णन है। ऋग्वेद के 10 वे मंडल में औषधियों के “दिव्य माता” माना गया है। जो रोगों से मुक्त करती है। ऋग्वेद में वनस्पति को तीन वर्गों में विभाजित किया गया है। वृक्ष (पेड़), औषधी (मनुष्यों के लिए उपयोगी जड़ी-बूटी) एवं विरुद्ध (लताएँ), विशाखा (झाड़ियाँ), शाकाहार (जड़ी-बूटियाँ), ब्रवति (लताएँ), प्रातनवती (ऊपर चढ़ने वाली लताएँ), आलस्य (जमीन में फैलने वाले) में उपविभाजित किया गया है। घासों को (तृण), पुष्पवती (पुष्पीय पौधे) एवं फलवती (फलदायी पौधे) को कहा गया है।

अर्थववेद:-

अर्थववेद में वनों एवं वनस्पतियों को सुखदायी एवं समस्त प्राणियों का भरण-पोषण करने वाला कहा गया है। इसमें वन को “अरण्यानी” कहकर संबोधित किया गया है एवं इसे औषधीय विज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत माना जाता है।

अर्थववेद में वनस्पतियों को कई वर्गों में विभाजित किया गया है - विशाखा (फैली हुई शाखाओं वाले पौधे), मंजरी (लंबे गुच्छों वाले पौधे), स्तभिणी (झाड़ीदार पौधे), प्रास्थानवती (जमीन में फैलने वाली लताएँ एवं बेल), अंशुमती (कई शाखाओं वाले पौधे), काण्डिनी (गांठदार पौधे), वृक्ष (बड़े पेड़), शाक (जड़ी-बूटियाँ)।

वैदिक काल में सबसे उल्लेखित पौधा पीपल (*Ficus religiosa*) है, इसके अतिरिक्त समी (*Prosopis Cineraria*), आँवला (*Emblica ffoicinalis*), पलास (*Butea monas perma*) विल्व (*Aegle marmelos*) जैसे आदि वनस्पति का उल्लेख मिलता है।

वेदों में वनस्पति की अवधारणा:-

वैदिक वनस्पति शास्त्र प्राचीन भारतीय ज्ञान की वह शाखा है जो पौधों, वृक्षों और जड़ी बूटियों के औषधीय और आध्यात्मिक पहलुओं का अध्ययन करती है। वैदिक ग्रंथों में वृक्षादि को ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण वन सम्पदा, वनस्पति जगत वृक्षों को भी “वन्दनीय” एवं “पूजनीय” कहा गया है।

वैदिक ज्ञान हमें वनस्पति की रक्षा एवं संरक्षण की शिक्षा देती है। साथ ही प्रकृति के साथ समन्वय स्थापित करती है। उपनिषदों में पेड़-पौधों को प्राण तत्व मानकर उन्हें “चेतन जीव” की तरह माना गया है साथ ही जीवनदायी माना गया है।

भारतीय लोक वनस्पति में पादपों की भूमिका:-

लोक वनस्पति विज्ञान की वैज्ञानिक अवधारणा एवं पावर्स (1874) एवं परिभाषा हर्श बर्गर (1895) में दी लेकिन भारत में लोकवनस्पति विज्ञान की बुनियाद यूरोपीय वैज्ञानिक गार्सिया दा ओर्टा (1563) ने डाली। इन्होंने भारत में पायी जाने वाली 50 औषधीय महत्व वाले पौधे एवं वनस्पतियों का उल्लेख किया जो भारत के मलाबार तट के क्षेत्रों में पायी जाती है। बीसवीं शताब्दी का मध्यकाल भारत में लोक वनस्पति विज्ञान की दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण रहा। डॉ. जानकी अम्माल, डॉ. एस. के. जैन आदि ने लोकवनस्पति विज्ञान के उत्थान में महत्वपूर्ण कार्य किया।

कुछ प्रमुख लोकवनस्पतिक औषधीय पौधे एवं उनके औषधीय उपयोग:-

1. अडूसा (*Adhatoda vasica*) - कफ, अस्थमा का उपचार
2. ब्राम्ही (*Bacopa Monniera*) - याददाश्त बढ़ाने, तनाव दूर करने में
3. कालमेघ (*Andrographis Paniculata*) अपच, दर्द के उपचार में
4. तुलसी (*Ocimum sanctum*) - सर्दी, खाँसी, श्वसन विकारों के उपचार में
5. नीम (*Azadirachta indica*) - चर्म रोग, रक्त शुद्धिकरण में
6. शतावर (*Asparagus racemosus*) - बांझपन एवं प्रजनन संबंधी विकारों के उपचार में
7. अश्वगंधा (*withania somnifera*) दमा, सर्दी, श्वसन संबंधी विकारों में
8. बेल (*fregle marmelos*) - उदर संबंधी रोगों के उपचार में
9. हल्दी (*Curcuma Longa*) - प्रतिजैविक गुण उपस्थित
10. गिलोय (*Tinospora Cardifolia*) - शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ाता है।

निष्कर्ष:-

भारत के प्राचीन साहित्य, लिखित ग्रंथों एवं पुस्तकों के दस्तावेजों के आधार पर यह निष्कर्ष किया जा सकता है कि पौधों का अध्ययन एवं उसकी उपयोगिता का अध्ययन वैदिक काल से विकसित था। इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि वैदिक काल में कृषि, चिकित्सा, बागवानी का व्यापक विकास हुआ। वेदों में उल्लेखित है कि भारतीयों को खाद्य उत्पादन, प्रकाश का प्रभाव, पौधों में ऊर्जा के भंडार की भी जानकारी थी। वैदिक काल के पश्चात् अरस्तु (384 - 322 BC^{1/4}), थियोफ्रास्टस

(370 -287 BC), हिप्पोकैटस (460 - 370 BC), आदि आधुनिक वैज्ञानिक आए और इन्ही वेदी, पुराणों में उल्लेखित पौधों के आधार पर औषधीय पादपों का वर्णन किया गया। अर्थात् वनस्पति विज्ञान केवल प्रयोगशाला का विषय नहीं बल्कि प्रकृति के साथ तालमेल बिठाकर जीने की एक जीवन शैली है।

बीज शब्द (Keywords):- औषधी, संरक्षण, पर्यावरण, संतुलन, लोकवनस्पति

संदर्भ:-

1. Ghose, A-K- 1971. Botany: prehistoric period. In a concise History of science in India.
2. Prasad, J. S. R. A. : - Botanical Science in Sanskrit literature & Exploring its Contemporary relevance.
3. Rajan, S. Sundara, 2001. Plant Science In medicine and life science in India.
4. Jain, S.K. and etal. (1981) : Notable plants of Indian medicine of India.
5. Pal and Jain (1998) & Tribal medicine.

भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीतिक चिंतन की प्रासंगिकता

डॉ० राजेश कुमार रमण

सहायक प्राध्यापक, वीरांगना रानी दुर्गावती महाविद्यालय, मरवाही जिला जी पी एम, छत्तीसगढ़

भारतीय राजनीतिक चिंतन की शुरुआत का कोई प्रारंभिक समय का उल्लेख तो नहीं मिलता है लेकिन प्राचीन ग्रंथों के आधार पर जैसे कौटिल्य के अर्थशास्त्र, मनु के मनुस्मृति, वेद एवं महाभारत में शासन, न्याय राजा के कर्तव्य आदि के विस्तृत उल्लेख देखने को मिलता है आज मनुष्य समाज तकनीक और विज्ञान के आधार पर दंभ भरता है, कि वह खूब प्रगति कर लिया है परंतु जब हम वर्तमान शासन और राजनीति के परिणामों को देखते हैं तो प्रतीत होता है कि हम निम्नतम दौर में शासन राजनीति को लेकर चले गए हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीति के केंद्र में जनकल्याण, शांति, न्याय जैसे विषय महत्वपूर्ण थे जिसका वर्तमान समय में लोप देखने को मिलता है इस शोध पत्र में हमने पाया कि हजारों साल पहले के राजनीतिक चिंतन को यदि वर्तमान समय में बड़े स्तर पर लागू किया जाय तो काफी सकारात्मक परिणाम आने के आसार हैं।

बीज शब्द- राजनीतिक चिंतन, मनुस्मृति, शासन और राजनीति, विस्तृत, परिणाम

प्रस्तावना -

किसी भी देश का इतिहास वहां की व्यवस्था स्थिति एवं वर्तमान परिदृश्य का साक्षी होता है ऐसे में भारत भूमि अब अपने इतिहास को देखता है तो एक स्वर्णिम संस्कृति को पाता है। भारतीय राजनीतिक चिंतन के स्रोत का अवलोकन करें तो वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, अर्थशास्त्र एवं स्मृतियां ही इसका आधार हैं जिसमें राज्य के उत्पत्ति से लेकर उनके द्वारा संपादित की जानी वाली सभी कार्यों एवं गतिविधियों का वर्णन देखने को मिलता है। जहां राजा के निर्माण में आठ देवताओं के अंश का उल्लेख देखने को मिलता है वही अनुचित कार्य किए जाने पर राजा को सामान्य लोगों से अधिक दंड का भी विधान बताया गया है। भारतीय राजनीति का इतिहास राजतंत्र के इर्द-गिर्द में ही घूमता है, लेकिन राजा के ऊपर कठोर नियंत्रण कर्तव्य आदि का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। कर-प्रणाली का उल्लेख करें तो कौटिल्य अर्थशास्त्र में जनता से इतना ही कर लेने का उल्लेख करते हैं जैसे तितली फूल से मधु का रसपान करती है जिसमें फूल पर कोई नकारात्मक असर नहीं पड़ता है।

आज के युग में जहां दुनिया के तमाम देशों में लोकतांत्रिक व्यवस्था है ऐसे में शासन का केंद्र बिंदु जनकल्याण की व्यवस्था है तो आवश्यक कि है भारतीय राजनीतिक चिंतन की रूपरेखा का विस्तार से अध्ययन करें एवं दुनिया के समक्ष एक दृष्टि दें जिससे वसुधैव कुटुम्बकम् का मार्ग प्रशस्त हो। भारतीय ज्ञान परंपरा के आधार ऋषि कश्यप, अत्री, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, वेदव्यास, वाल्मीकि, कपिल मुनि, पतंजलि, कनाद, कौटिल्य एवं मनु के अलावा अन्य कई ऋषि हैं जिन्होंने भारतीय ज्ञान परंपरा को पुष्टि प्रदान किया।

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप -

- आध्यात्मिकता केंद्रित
- समग्र दृष्टिकोण
- प्रकृति के साथ सामंजस
- विविधता में एकता
- नैतिकता एवं मूल्य आधारित
- वैज्ञानिकता और व्यावहारिक स्वरूप

भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में अध्यात्म की झलक देखने को मिलती है धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की चर्चा एक समग्र दृष्टिकोण की ओर इशारा करती है। जब विश्व के अन्य सभी देश रोटी, कपड़ा और मकान के विषय में अपने चिंतन को धार दे रहा था ऐसे में भारत के ऋषियों द्वारा मोक्ष की अभिलाषा किया जाना वास्तव में आश्चर्य से कम प्रतीत नहीं होता है। समग्र दृष्टिकोण का आशय है इस परंपरा में शरीर उसके बाद मन और फिर आत्मा तीनों के विकास पर ध्यान दिया गया है। वेद की उपस्थिति ही इसका प्रमाण है। इस परंपरा ने प्रकृति के साथ खूब सामंजस्य किया है। वटवृक्ष, आवलां, तुलसी, नदी, पशु-पक्षी, मवेशी सभी को अपनी संस्कृति में समेटे हुए सभी की पूजा का विधान देखने को मिलता है। वेद, उपनिषद, गीता, पुराण और भी तमाम ग्रंथ के होने के बावजूद मूल भाव में एकता देखने को मिलती है, यह सबसे अलग और उत्तम मिसाल पेश करता है। विविधता में एकता का यह पक्ष भारतीय ज्ञान परंपरा को और अधिक पुष्टि प्रदान करता है। इन ग्रंथों के मूल में जाने पर हमें सत्य, अहिंसा, कर्तव्य एवं मूल्यों का ज्ञान होता है।

परहित सरिस धर्म नहीं भाई

पर पीरा पीरसम नहीं अधमाई.

अर्थात् दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को तकलीफ देने के समान कोई पाप नहीं है। ऐसे मूल्य का प्रसार होते देखने से हृदय गौरव से भर जाता है और हम कह उठते हैं कि भारत इन्हीं ज्ञान परम्परा के कारण विश्व गुरु था। गणित से लेकर खगोल विज्ञान तक, चिकित्साशास्त्र से लेकर योग्यशास्त्र तक सभी कुछ का दर्शन हमें भारतीय ज्ञान परंपरा के अंदर देखने को मिल जाती है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप अत्यंत विराट एवं जीवन उपयोगी है, यह केवल ग्रंथ या विचार नहीं अपितु वर्तमान समय में मार्गदर्शन के रूप में भी हमारी माहिती भूमिका निभा सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषता -

- धर्म और नैतिकता आधारित चिंतन
- राजधर्म केंद्रित चिंतन
- लोक कल्याण केंद्रित
- योग एवं ज्ञान आधारित
- अर्थशास्त्र एवं स्मृति
- दर्शन की व्यापकता
- अन्य

धर्म और नैतिकता आधारित चिंतन -

भारतीय इतिहास धर्म का सबसे प्रमुख स्रोत वेद है - (1) ऋग्वेद - जिसमें देवताओं की स्थिति मंत्र आदि का उल्लेख है। (2) यजुर्वेद- जिसमें कर्मकांड हवन एवं अनुष्ठान का उल्लेख मिलता है। (3) सामवेद- संगीत का आधार एवं मंत्रों का गान का वर्णन मिलता है। (4) अथर्ववेद-समाज, स्वास्थ्य, औषधि एवं दैनिक जीवन से संबंधित है। उपनिषद जिसके माध्यम से वेद की समझ को और अधिक आसान बनाने का प्रयास किया गया है। इसके अलावा स्मृति, ब्रह्मण आदि ग्रंथ केवल कर्मकांड नहीं अपितु न्याय, कर्तव्य एवं नैतिकता पर जोर देखने को मिलता है इन सभी धार्मिक ग्रंथों का सार लोक कल्याण है ऐसा प्रतीक होता है।

राजधर्म केंद्रित चिंतन -

महाभारत एवं रामायण जैसे ग्रंथ में राजधर्म के ऊपर विशेष ध्यान दिया गया है महाभारत का शांति पर्व राजा के कार्य एवं कर्तव्यों पर केंद्रित है। रामायण में श्री राम की मर्यादा न केवल राजधर्म अपितु समाज को भी एक सही दिशा देने का प्रयास कर रहा है।

लोक कल्याण केंद्रित-

भारतीय राजनीतिक चिंतन लोक कल्याण केंद्रित है जहां कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुगम कर-प्रणाली का जिक्र है जिसमें तितली द्वारा फूल से मधु निकालने की प्रक्रिया के अनुसरण पर जोर देती है। प्रजा के सुख को राजा के सुख का आधार बताया गया है इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा हमें लोकोन्मुखी प्रतीत होती है।

योग एवं ज्ञान आधारित -

भारतीय ज्ञान परंपरा योग एवं ज्ञान जैसे विषय को महत्वपूर्ण स्थान दिया है पतंजलि के योगशास्त्र ने दुनिया भर का ध्यान अपनी तरफ खींचा है। ऐसे में योग परंपरा की नींव भारत की ही देन है और आवश्यक है कि योग से मनुष्य निरोग की तरफ बढ़े।

अर्थशास्त्र एवं स्मृति -

कौटिल्य के अर्थशास्त्र में मंडल सिद्धांत जिसमें विदेश नीति का ऐसा वर्णन देखने को मिलता है कि वर्तमान काल में इसकी प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। इस ग्रंथ में कूटनीति एवं विदेश नीति, कर-व्यवस्था, प्रशासन, राज्य के अंगों का विस्तार पूर्वक उल्लेख किया गया है। मनु स्मृति में राज्य की उत्पत्ति, राजा का कर्तव्य आदि का वह वर्णन है जिसका एक ही सार देखने को मिलता है:-प्रजा सुखे सुखं राज्ञः प्रजानं च हिते हितांइसका अर्थ है प्रजा का सुखी होने में राजा का सुख निहित है।

दर्शन की व्यापकता -

दर्शनशास्त्र एक महत्वपूर्ण विषय है 6 प्रमुख दर्शन का उद्भव भारत में देखने को मिला जो इस प्रकार है न्याय, वैशेषिक, सांख्य, योग, पूर्व मीमांसा, उत्तर मीमांसा इस तरह भारतीय ज्ञान परंपरा दर्शन के आधार को भी दुनिया के समक्ष रखा है।

अन्य-

इस प्रकार भारतीय ज्ञान परंपरा वैदिक से लेकर रसायन तक आयुर्वेद से लेकर नाट्य शास्त्र आदि तमाम क्षेत्रों को अपने भीतर समाहित किए हुए हैं। ऐसे में वर्तमान समय के वैज्ञानिक प्रगति को अगर छोड़ दिया जाए तो लगभग सभी महत्वपूर्ण विषय भारतीय ज्ञान परंपरा के परिधि में समाहित हो जाती है यह गौरव का विषय है किसी सभ्यता संस्कृति के लिए।

आधुनिक समय में प्रासंगिकता -

वर्तमान समय विश्व में कई युद्ध चल रहे हैं अमेरिका इजराइल एवं ईरान युद्ध, रूस-यूक्रेन युद्ध, भारत एवं पाकिस्तान के मध्य भी युद्ध की स्थिति बनती रहती है। यह कहा जाए कि विश्व तीसरे महायुद्ध के मुहाने पर खड़ा है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। युद्धों के पीछे जाकर देखा जाए तो व्यक्तिगत अहंकार एवं असंतोष के अलावा कोई बड़ा कारण देखने को नहीं मिल रहा है। महाभारत में दुर्योधन के अहंकार के कारण ही पूरे साम्राज्य का विनाश देखने को मिला। अतः आवश्यकता है कि उपनिषद् के मंत्र

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्। का अनुसरण करते हुए राज्य का संचालन करना चाहिए जिसके मूल में जियो और जीने दो का भाव केंद्रित हो। भारतीय ज्ञान परंपरा के माध्यम से मनुष्य समाज को चाहिए कि वह एक सुयोग्य राष्ट्र का निर्माण करें।

निष्कर्ष:-

भारतीय ज्ञान परंपरा एक समृद्ध परंपरा रही है जिसके केंद्र में लोक कल्याण, जनमानस, वसुधैव कुटुंबकम जैसे विचार हैं। ऐसे में विश्व के समक्ष इस विचार को स्पष्ट करके रखा जाए जिससे तमाम लोग इसके मौलिक भावना को समझें एवं इसका मूल लाभ को अत्मसात करें। समाज में अपराध बढ़ रहा है, देश में शांति जगह अशांति का प्रकोप है। भारतीय परम्परा पर अगर जोर दिया गया तो युद्ध की चर्चा बंद हो सकती है जिससे मानव समाज एक नया स्वर्णिम युग बना सकता है। वसुधैव कुटुंबकम को आत्मसात कर विश्व एक परिवार के रूप में एक नए आयाम को गढ़ सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

- भारतीय संस्कृति के चार अध्याय, रामधारी सिंह दिनकर
- भारत एक खोज, पं. जवाहरलाल नेहरू
- रामचरितमानस, श्री तुलसीदास
- भारतीय दर्शन, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
- महाभारत, महर्षि वेदव्यास
- अर्थशास्त्र, कौटिल्य
- योगसूत्र, पतंजलि

भारतीय ज्ञान परंपरा में राजनीतिक चिंतन एवं कौटिल्य के मंडल सिद्धांत पर एक अध्ययन

डॉ० कंचन सिंह चौहान

वीरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, गौरेला पेंडा मरवाही छत्तीसगढ़

सारांश--

कौटिल्य का अर्थशास्त्र राजनीतिक कूटनीतिक और रणनीति पर एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है। जिसमें कौटिल्य ने किसी राज्य का अपने पड़ोसी राज्यों के साथ विदेश नीति के निर्धारण के अनेक तत्वों का उल्लेख किया है। कौटिल्य ने शांति से राजनीतिक व्यवस्था के संचालन हेतु षाढगुष्य युक्तियों को विदेश नीति में शामिल करने पर जोर दिया है। कौटिल्य के अनुसार किसी राज्य का कल्याण उस राज्य की सक्रिय विदेश नीति पर निर्भर होती है। सक्रिय विदेश नीति किसी राज्य के कल्याण के साथ-साथ राज्य की सुरक्षा को भी रेखांकित करती है। कौटिल्य ने अर्थशास्त्र की सातवी पुस्तक में विदेश नीति को एक मण्डल सिद्धांत के रूप में वर्णित किया है। कौटिल्य के साथ-साथ मनु की मनुस्मृति एवं वेद में भी मण्डल सिद्धांत का उल्लेख मिलता है। अपितु कौटिल्य ने राज्य की सुरक्षा का विस्तृत वर्णन अपने मंडल सिद्धांत में किया है। कौटिल्य का मंडल सिद्धांत एक व्यापक सिद्धांत है जो राज्य की शक्ति व सफलता पर केंद्रित होता है। जिसका उपयोग राज्य के कल्याण में किया जाना बताया गया है। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत का मुख्य लक्ष्य राज्य को अपने पड़ोसी राज्यों के साथ दुश्मन या मित्र के रूप में राज्यों के साथ संबंध स्थापित करने से है। कौटिल्य के मंडल सिद्धांत में विजिगिशु को मुख्य बिंदु माना गया है। जिसके चार मुख्य बुनियादी वृत्त हैं। की प्रथम तीन दूत में प्राचनिक राजा को रखा गया है। जिसमें विजिगिशु उसका मित्र एवं उसके मित्र होता है। और सभी के पास उनके संप्रभुता के पाच तत्व आमात्या, दुर्ग, कोष, जनपद और दण्ड होते हैं। इस प्रकार राजाओं को एक चक्र में 18 तत्व होते हैं तथा कौटिला ने तर्क दिया है कि दो या दोसे अधिक राज्यों के बीच स्थापित करने के लिए विशेष अंतर्दृष्टि एवं दूरदर्शिता और कौशल का होना आवश्यक है। कौटिल्य किसी राज्य के कल्याण के लिए उसे राज्य की भौगोलिक एवं आर्थिक स्थिति का भी मजबूत होना बताया गया है।

शब्दकुंजी- समप्रभुता, विदेश नीति, रेखांकित, मित्र, दुश्मन और वृत्त।

परिचय :-

कौटिल्य के अर्थशास्त्र की समझ के बिना, प्राचीन भारतीय राजनीतिक सिद्धांत का अध्ययन अपर्याप्त माना जाता है। भारतीय वैदिक सभ्यता में अर्थशास्त्र राजनीति विज्ञान में सबसे सम्मोहक और पूर्ण ग्रंथों में से एक है। प्राचीन भारत में, कौटिल्य ने राजनीति को एक वैज्ञानिक अनुशासन में बदल दिया और वैज्ञानिक सिद्धांतों और वास्तविक साक्ष्यों का उपयोग करके राजनीतिक सिद्धांतों का मूल्यांकन करने की कोशिश की। कई लोग कौटिल्य को दुनिया का पहला राजनीतिक यथार्थवादी मानते हैं। 317 से 293 ईसा पूर्व तक, कौटिल्य ने चंद्रगुप्त मौर्य के राज्य के मंत्री के रूप में कार्य किया। उन्हें अपने दिनों के सबसे बुद्धिमान मंत्रियों में से एक माना जाता था, और अपने काम अर्थशास्त्र में, उन्होंने राज्य, युद्ध, सामाजिक संरचनाओं कूटनीति नैतिकता राजनीति और शासन कला पर अपने विचारों को अच्छी तरह से व्यक्त किया। मौर्य साम्राज्य ब्रिटिश भारत से भी बड़ा था, जो हिंद महासागर से हिमालय और पश्चिम में ईरान तक फैला हुआ था। सिकंदर के जाने के बाद मगध भारत का सबसे शक्तिशाली राज्य था और कौटिल्य एक मंत्री था जिसने सम्राट को परामर्श दिया था। चाणक्य (C.350- C.275 BC) को कौटिल्य या विष्णु गुप्त के नाम से भी जाना जाता है।

मंडल का सिद्धांत प्राचीन भारतीय शासन कला में सबसे आश्चर्यजनक विचारों में से एक है। यह एक अंतर-राज्य संबंध सिद्धांत है जो बताता है कि एक राज्य विजेता के संबंध में अपनी भौगोलिक स्थिति के आधार पर एक सहयोगी या विरोधी है। इस परिकल्पना की उत्पत्ति कहां से हुई इस पर कोई विश्वसनीय प्रमाण नहीं है। वैदिक या ब्राह्मण साहित्य में इसका उल्लेख नहीं किया गया है लेकिन मनुस्मृति और महाभारत में इसकी व्यापक चर्चा की गई है। कौटिल्य ने मंडल विचार और अर्थशास्त्र

में राज्य की सुरक्षा और अस्तित्व के लिए इसकी सापेक्ष प्रासंगिकता का कहीं अधिक गहन चित्रण किया। कौटिल्य के अंतर-राज्य कनेक्शन के विचार को इस हद तक परिष्कृत किया गया था कि इसका उपयोग सभी युगों में किया जा सकता है, उनके समय की आवश्यकताओं के अनुसार स्पष्ट और वास्तविक रूप से प्रस्तुत किया जा सकता है।

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत :-

कौटिल्य का मंडल सिद्धांत इसी सिद्धांत पर आधारित था, और कौटिल्य की रचनाओं को पढ़ते समय सबसे पहली बात दिमाग में आती है घ मंडल एक संस्कृत शब्द है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मंडलियां। कौटिल्य ने अपने अर्थशास्त्र में एक सैद्धांतिक राज्य-निर्माण के रूप में मंडल प्रणाली की रचना की। कौटिल्य ने राज्य के विदेश संबंधों की व्याख्या और विश्लेषण करते हुए मंडल सिद्धांत का प्रस्ताव किया है। उनका मानना है कि यदि कोई राजा अन्य राज्यों से लड़कर और उन पर विजय प्राप्त करके अपने राज्य का विस्तार करना चाहता है तो उसे अपने शत्रु-राज्यों की संख्या के अनुपात में अपने मित्रों की संख्या में वृद्धि करनी चाहिए ताकि उन्हें अपने प्रभाव के प्रभावी क्षेत्र के अंदर रखा जा सके। दूसरी ओर, कमजोर राज्यों को अपने शक्तिशाली पड़ोसियों से सावधान रहना चाहिए। उन्हें समान स्थिति वाले राष्ट्रों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित करने चाहिए और विस्तारवादी नीतियों का अनुसरण करने वाली महाशक्तियों से खुद को बचाने के लिए ऐसे राज्यों का एक मंडल या सर्कल बनाना चाहिए। कौटिल्य मंडल सिद्धांत या राज्यों के चक्र को रेखांकित करने के लिए सबसे प्रसिद्ध है जिसमें 12 राज्य शामिल हैं -

1. **विजिगिशु:** - केंद्रीय शासक या भावी विजेता। यह ध्यान रखना आवश्यक है कि यद्यपि केंद्रीय राजा को विजिगिशु के रूप में जाना जाता है वह एकमात्र विजिगिशु नहीं है; मंडलों में तुलनीय लक्ष्यों और संभावित शक्ति वाले किसी भी अन्य राजा को विजिगिशु के रूप में भी संदर्भित किया जा सकता है।

2. **अरी** :-देश का निकटतम पड़ोसी अरी या शत्रु है। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया गया है हर पड़ोसी राज्य दुश्मन है इसलिए अरी एक प्राकृतिक दुश्मन है। विजिगिशु के सामने निकटवर्ती राज्य उसका दुश्मन है इसलिए वह अरी कहता है। कौटिल्य ने इसके तीन प्रकार दिए हैं: जिसमें उन्होंने प्राकृतिक शत्रु (प्राकृतिक अरी), सहज शत्रु (सहज अरी) और कृत्रिम शत्रु (कृत्रिम अरी) के नाम दिए हैं। राज्य जो राज्य की सीमाओं से घिरा हुआ है प्राकृतिक अरी है। राजा के पास एक सहज अरी है जो अपने ही वंश में उत्पन्न होती है। जो राजा खुद का विरोध करने या विरोध करने पर शत्रु बन जाता है उसे कृत्रिम अरी कहा जाता है। कौटिल्य का मत था कि अपने राज्य के विस्तार के लिए प्रत्येक राजा पड़ोसी राज्य के क्षेत्र को अपने नियंत्रण में रखना चाहता है इसलिए पड़ोसी राज्य आमतौर पर अरी या शत्रु राज्य होते हैं।

3. **मित्र** :-अरी का अगला पड़ोसी, या दुश्मन का दुश्मन। कौटिल्य की विदेश नीति इस विचार पर आधारित है कि "मेरे शत्रु का शत्रु मेरा मित्र है। संस्कृत में मित्र का अर्थ है 'मित्र' या 'सहयोगी। विजिगिशु का स्वाभाविक सहयोगी मित्र है। क्योंकि विजिगिशु और अरी का घनिष्ठ संबंध है इसलिए अरी के सामने राज्य का नाम मित्र या मित्र है। कौटिल्य के अनुसार मित्र राज्यों को तीन श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है:-

- (1) प्राकृतिक मित्र या प्राकृतिक मित्र राज्य।
- (2) सहज मित्र राज्य।
- (3) कृत्रिम मित्र या कृत्रिम मित्र राज्य।

प्राकृतिक मित्र राज्य ऐसे राज्य हैं जो अपने राज्य की सीमा की सीमा पर हैं; माता या पिता के रिश्तेदारों की स्थिति स्वाभाविक मित्र राज्य हैं; और जब एक राजा धन या जीवन के लिए दूसरे राजा की सुरक्षा चाहता है, तो ऐसे राज्यों को कृत्रिम मित्र राज्य कहा जाता है।

4. **अरी मित्र** :- अरी मित्र राज्य की कौटिल्य एक ऐसी अवस्था को संदर्भित करती है जो अरी का मित्र है। मित्र की अग्रिम सीमा से सटा अगला राज्य; या मित्र का स्वाभाविक शत्रु अरी मित्र है। स्वाभाविक रूप से, अरी मित्र अरी (शत्रु) का मित्र है और इसलिए विजिगिशु का दुश्मन है।

5. **मित्र** :-अरी मित्र राज्य के सामने स्थित राज्य को मित्र मित्र राज्य कहा जाता है क्योंकि यह मित्र राज्य का मित्र है। इस प्रकार उसकी मित्रता भी विजिगिशु के साथ बनी रहती है। वह स्वाभाविक रूप से मित्र का मित्र है और इसलिए विजिगिशु मित्र भी है ।

6. **अरी मित्र-मित्र** :- यह मित्र-मित्र के ठीक परे स्थित शत्रु मित्र का मित्र है। मित्र मित्र राज्य के सामने स्थित अरी मित्र राज्य को अरी मित्र कहा जाता है क्योंकि वह अरी राज्य का मित्र है इसलिए अरी राज्य के साथ उसका संबंध भी मैत्रीपूर्ण है। नतीजतन यह विजिगिशु के लिए अरी के समान है।

7. **पार्श्वनिग्रह** :-विजिगिशु के पीछे जो अवस्था होती है, उसे पार्श्वनिग्रह कहा जाता है। क्योंकि वह अरी राज्य की तरह विजिगिशु के साथ एक दुश्मन राज्य की तरह है।

8. **अकरंड** :-पार्श्वनिग्रह के पीछे स्थित राज्य को अकरंड कहा जाता है। वह विजिगिशु का मित्र है।

9. **पार्श्वसंहार**:-कौटिल्य के अनुसार पार्श्वसंहार वह राज्य है जो विजिगिशु के पीछे स्थित शत्रु राज्य (पार्श्वनिग्रह) का मित्र है।

10. **अक्रंदसार** :-पार्श्वसंहार के पीछे के राज्य को अक्रंदसार कहा जाता है और यह अकरंद का मित्र है।तो विजिगिशु का मित्र ।

11. **मध्यम** :-कौटिल्य द्वारा प्रतिपादित मध्य अवस्था की अवधारणा एक तरह से विशेष अवस्था की अवधारणा है। यह विजय महत्वाकांक्षी अरी राज्यों के बीच में स्थित है। यह दोनों राज्यों के अंतर्गत आता है। कौटिल्य के अनुसार यह मध्यम अवस्था अधिक शक्तिशाली होनी चाहिए। यहां तक कि दोनों राज्यों की संयुक्त शक्ति भी अधिक शक्तिशाली होनी चाहिए। यह इतना शक्तिशाली होना चाहिए कि जरूरत पड़ने पर यह इन दोनों राज्यों पर कृपा और कृपा साबित करने में सफल हो सके।

उदासिना :-विजिगिशु और उसके मित्र राज्य के बीच कहीं स्थित राज्य को तटस्थ राज्य कहा जाता है। वह युद्ध के दौरान पूरी तरह से तटस्थ या उदासिन रहता है। उसे विजिगिशु, अरी और मध्यम तिकड़ी से अधिक शक्तिशाली रहना चाहिए।

एक अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक संरचना का सबसे पहला मॉडल मंडल सिद्धांत था। इस तथ्य के बावजूद कि यह लगभग 2000 साल पहले लिखा गया था इसमें उच्च स्तर की जटिलता है। कौटिल्य की अंतर्राष्ट्रीय प्रणाली के सार्वभौमिक समुच्चय, साथ ही चार मंडलों (राज्यों के मंडलों) संरचनात्मक घटकों और उपसमुच्चयों की सीमाएं सभी को स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट किया गया है। कौटिल्य ने मंडला प्रणाली में पड़ोसियों के साथ बातचीत करने के लिए छह गुना नीति का प्रस्ताव रखा जिसमें सह-अस्तित्व, तटस्थता गठबंधन दोहरी नीति मार्च और युद्ध शामिल थे। उन्होंने सम्राट से इसे पूरा करने के लिए पांच रणनीतियों में से एक का उपयोग करने का आग्रह किया:- सुलह, उपहार और रिश्वतखोरी असहमति धोखा और दिखावा एकमुश्त हमला या युद्ध। नतीजतन जब संधियों और गठबंधनों की बात आती है तो वह सलाह देते हैं एक राजा को किसी भी दोस्ती या संबद्धता को तोड़ने में संकोच नहीं करना चाहिए जो बाद में नुकसानदेह दिखाया जाता है, क्योंकि कौटिल्य शक्ति और शक्ति में विश्वास करते हैं मंडल सिद्धांत वैश्विक विजय के लक्ष्य के साथ अभियान की योजना है डिजाइन है। शक्ति शक्ति का अधिकार है।

भारत के लिए समकालीन प्रासंगिकता :-

यद्यपि कौटिल्य के विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंधों के मंडल सिद्धांत को वर्तमान परिवेश में पूरी तरह से लागू होने का दावा नहीं किया जा सकता है लेकिन इसके महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। उनकी अवधारणा क्षेत्रीय और वैश्विक दोनों स्तरों पर एकीकरण के लिए एक बाधा के रूप में कार्य करती है, दुर्भाग्य से कौटिल्य आज क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय इंटरैक्शन पर हावी है चाहे वह जाने-अनजाने में हो। अब भी उनकी सैन्य रणनीति काफी फायदेमंद है। उन्होंने वास्तव में अपने सिद्धांतों को बहुत सटीक रूप से व्यक्त किया है। हम सभी जानते हैं कि आज की दुनिया में, प्रौद्योगिकी और रक्षात्मक तंत्र की प्रगति के साथ-साथ परिवहन प्रणालियों के विकास ने हममें से कई लोगों को यह महसूस करने के लिए प्रेरित किया है कि मंडल सिद्धांत अब अपने भय और विशेषताओं के संदर्भ में लागू नहीं है। प्रत्येक राजनीतिक सिद्धांत का सभी उम्र के लिए एक सार्वभौमिक अनुप्रयोग नहीं होता है इस प्रकार हमें उन पहलुओं पर ध्यान देना चाहिए जिनकी हम भारतीय विदेश संबंधों के लिए मंडल सिद्धांत से जांच कर सकते हैं। यह एक अपरिहार्य वास्तविकता है कि आधुनिक दुनिया में भी भारत की सबसे बड़ी चुनौतियां पाकिस्तान चीन और बांग्लादेश जैसे पड़ोसियों के कारण विभिन्न चिंताओं के कारण होती हैं। प्राथमिक व्याख्या पर यह मंडल सिद्धांत के महत्व का सुझाव देता है। कौटिल्य के सिद्धांत भावनात्मक विचारों पर आधारित नहीं हैं बल्कि किसी देश की सुरक्षा के लिए सभी कल्पनीय खतरों का आकलन करने में तर्क पर आधारित हैं। उन्होंने कहा एक राजा जो कूटनीति के वास्तविक निहितार्थों को जानता है वह पूरी दुनिया को जीत लेता है। स्वाभाविक विरोधियों

का मतलब यह नहीं है कि हम उनके साथ निरंतर युद्ध की स्थिति में हैं लेकिन अलर्ट मोड पर एक अंतरराष्ट्रीय संबंध ऑपरेशन चिंता का कारण है।

निष्कर्ष :-

कौटिल्य राजनीतिक यथार्थवाद विदेश नीति और नैतिक भ्रम के बिना सत्ता हासिल करने और बनाए रखने की कला के प्रोटोटाइप समर्थक हैं। राष्ट्रीय शक्ति और राष्ट्रीय हित पर उनके तर्क बौद्धिक और व्यावहारिक दोनों हैं। मंडल सिद्धांत के माध्यम से, उन्होंने विश्व विजय के लक्ष्य और उन तरीकों को स्थापित किया जिनका उपयोग एक धनी राज्य द्वारा किया जाना चाहिए, साथ ही साथ अंतर्राष्ट्रीय राजनीति की क्रूर वास्तविकता पर चर्चा की। उन्होंने सत्ता और प्रभुत्व हासिल करने के लिए व्यवस्थित तरीकों की रूपरेखा तैयार की, और उनका दावा है कि अंतर्राष्ट्रीय राजनीति इस उद्देश्य के लिए शक्तिशाली और कमजोर सरकारों की गैर-कानूनी लड़ाई है। कौटिल्य को महिमा या प्रतिष्ठा की कोई दिलचस्पी नहीं थी, वह सिर्फ 'अंत साधनों को सही ठहराता है' तथा विचार में विश्वास करता था। उनकी भू-रणनीतिक अंतर्दृष्टि प्रकृति में अविश्वसनीय रूप से परिष्कृत है, और यह आज भी लागू है। क्योंकि कौटिल्य की विदेश नीति के आवश्यक तत्व, जैसे सत्ता की लड़ाई, राष्ट्रीय हितों, गठबंधन, शत्रुता और कूटनीति समय के अंत तक अपरिवर्तित रहते हैं, इसलिए कौटिल्य की विदेश नीति अभी भी अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के दायरे में लागू है। नतीजतन वह अभी भी 'ट्रांस-मॉडर्न वैश्विक सभ्यता' की अवधि में प्रासंगिक है। इसके अलावा प्राचीन भारतीय राजनीतिक दर्शन को समझने के लिए अंतर-राज्य बातचीत की गहन समझ की आवश्यकता होती है यहीं पर कौटिल्य का योगदान आता है।

संदर्भ

1. कौटिल्य अर्थशास्त्र का हिन्दी भाषानुवाद (प्राणनाथ विद्यालङ्कार)
2. कौटिल्य अर्थशास्त्र (हिन्दी अनुवाद - प्राध्यापक उदयवीर शास्त्री)
3. Kaumalya. *Kautilya arthashastra*. Rajpal and Sons, 2001.
4. P, Kangle R., ed. *The Kautiliya Arthasastra*. [s.n.], 1991.

भारतीय ज्ञान परम्परा में नवीनतम शोध की आवश्यकता पर एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

डॉ० सुनीता कुमारी

(अतिथि व्याख्याता) विरांगना रानी दुर्गावती शासकीय महाविद्यालय, मरवाही-गौरेला पेन्ड्रा मरवाही छत्तीसगढ़

सारांश:-

भारतीय ज्ञान परम्परा भारत के प्राचीन ज्ञान और प्राचीन शिक्षा की एक समृद्ध और विविध प्रणाली है जिसमें वेदो, उपनिषदो, पुराणो, शास्त्रो और लोक-साहित्य में निहित ज्ञान शामिल है। जो दार्शनिक, आध्यात्मिक चिंतन सामाजिक, नैतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को शामिल करता है। यह परम्परा वेदो से प्रारम्भ होकर उपनिषदो पुराणो और विभिन्न शास्त्रो के माध्यम से विकसित हुई तथा संतो के माध्यम से जन साधारण तक पहुँचा। जिसमें कबीर, तुलसीदास, मीराबाई जैसे संतो ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

भारतीय ज्ञान परम्परा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन, सांस्कृतिक और बौद्धिक धरोहर का संरक्षण एवं पुनर्जीवित करना है। भारतीय उपमहाद्वीप की समग्र ज्ञान परम्परा प्राचीन काल में वैश्विक समुदाय के लिए अनुकूलनीय आदर्श रही हैं। जो भारत की गंभीर अनुसंधान गति उन्नत वैचारिक और वैज्ञानिक प्रगति के उन्नत परम्परा का परिणाम रहा है। भारतीय ज्ञान परम्परा भारत के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व के लिए आवश्यक है। अतः भारतीय ज्ञान परम्परा को पुनः स्थापित करने के लिए नई शिक्षा निति में शिक्षा के प्रत्येक स्तर में शामिल किया गया है।

शब्द कुंजी -उपनिषद, पुराणों, उपमहाद्वीप, कबीर, वैज्ञानिक

प्रस्तावना:-

जिस भूमि पर मानव का असत्त्व है। उस भूमि का नाम वसुन्धरा है। आज सम्पूर्ण मानव जगत 21 वी शताब्दी में अपना जीवन यापन कर रहा है। आज हम भारत भूमि के उन अविष्कारो का अनुमान लगा पाने में असमर्थ होते जा रहे हैं। जो हमारी प्राचीन परम्परागत तकनीक ने विश्व को दिया है। समय के साथ-साथ नवीन तकनीकों के प्रयोग से हमारा जीवन सरल तो हुआ है। परन्तु उसके दुष्परिणाम भी हमारे पास है। इन्ही दुष्परिणामों से बचने के लिए पुनः भारतीय ज्ञान परम्परा की परम्परागत तकनीकों को उपयोग में लाया जा रहा है। जिस कारण हमें अपनी भारतीय प्राचीन परम्परा पर नवीनतम शोध की आवश्यकता है। ज्ञान एवं संस्कृति की दृष्टि से भारतीय परम्परा को विश्व की सबसे प्राचीन सभ्यता मानी जाती है। जो लिखित एवं मौखिक दोनो रूपों में विद्यमान है। ऋग्वेद को विश्व का प्रथम ग्रंथ माना गया है। प्राचीन भारतीय ग्रंथों में मानव जीवन के विभिन्न घटनाक्रमों, प्रकृति, प्राकृतिक संसाधनों को विशेष महत्त्व दिया गया है।

उद्देश्य:-

1. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्पराओं के महत्त्व को समझना।
2. भारत के प्राचीनतम ज्ञान को पुनः स्थापित करना।
3. परम्परागत ज्ञान के स्रोतों का अध्ययन करना।
4. प्राचीन भारतीय ज्ञान परम्परा का मानव समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को दर्शाना।

साहित्य समीक्षा:-

1. यूनिशन सृजन (2019) भारतीय संस्कृति एवं परम्परा विशेषांक में उल्लेखित किया गया है। कि भारतीय संस्कृति का इतिहास वर्तमान एवं भविष्य के लिए क्यों आवश्यक है तथा देश के विकास का सर्वश्रेष्ठ साधन है।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा संक्षिप्त परिचय (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के परिप्रेक्ष्य में बताया गया है। कि कैसे मनु के सृष्टि निर्माण से ही भारतीय ज्ञान समृद्ध हैं। जिसमें मानव जीवन को संतुलित करने वाले सभी विषयो का स्पष्ट उल्लेख है एवं सृष्टि के वर्तमान तथा भविष्य में आने वाली समस्याओ का समाधान है।

3. डा. देवकी नन्दन शर्मा (2022) ने अपने शोध अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा और इसकी उपादेयता एक अध्ययन में बताया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा का ऐतिहासिक आधार, वेदो, उपनिषदों। पुराणों आचार्यों के सिद्धांतों पर प्रमाणित किया गया है। इस परम्परा ने जीवन के गहरे रहस्यों को समझने के लिए शास्त्रों, सात्विक सिद्धांतों, गुरुकुलीय सिद्धांतों, योग, आयुर्वेद, वास्तुशास्त्र, संगीत, गणित और साहित्य जैसे अनेक विषयों पर अध्ययन किया है।
4. डॉ अंजना अग्रवाल (2025) ने अपने शोध अध्ययन भारतीय ज्ञान प्रणाली का विकसित भारत में बताया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा प्रणाली शिक्षा का अतिरिक्त पहलु नहीं है। अपितु यह भारत को अपनी समृद्ध विरासत से जोड़ना है तथा ज्ञान आधारित नैतिकता से पूर्ण समाज निर्माण की दिशा में एक मौलिक कदम है।

शोध प्रविधि:-

प्रस्तुत शोध पत्र ऐतिहासिक विश्लेषण पद्धति पर आधारित है। शोध सामग्री को प्राचीनतम ग्रंथों, कथाओं, मान्यताओं, शोध कार्य एवं पुस्तकों से संकलित किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीयक एवं प्राथमिक आंकड़ों पर आधारित है।

शोध क्षेत्र:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन भारतीय ज्ञान परम्परा के प्रभाव तथा ज्ञान के महत्व से संबंधित है। भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व प्रसिद्ध है। जिसकी अपनी अलग पहचान है भारतीय ज्ञान परम्परा को संरक्षित करने के साथ पुनः दैनिक जीवन में उपयोग किया जाना निश्चित है।

शोध की आवश्यकता:-

वर्तमान युग तकनीकी ज्ञान से भली-भांति परिचित है। जिसने मानव जीवन को अत्यधिक सरल बना दिया है। किन्तु इसके विपरित प्रभाव से मानव जीवन में अस्थिरता आ गई है। विश्व की प्राचीनतम जीवन शैली भारतीय ज्ञान के परम्परा पर आधारित थी जिसमें तकनीकी ज्ञान, सांस्कृतिक ज्ञान एवं नैतिक मूल्यों का समावेश था। 21 वीं सदी में भारतीय ज्ञान मूल्यों को पुनः सामान्य जीवन में लाने के उद्देश्य से भारतीय ज्ञान परम्परा में नवीनतम शोध की आवश्यकता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में पेड़-पौधे:-

विभिन्न वृक्षों एवं पेड़-पौधों को किस समय एवं किस दिशा में लगाने के विशेष निर्देश अग्निपुराण तथा वृहत-संहिता में दिया गया है। जिसके अनुसार प्राचीन काल में घरों एवं महलों में अशोक वृक्ष लगाया जाता था। जो प्राचीन भारत की एक विशेष परम्परा है। अग्नि पुराण में उत्तर की ओर प्लाश। पूर्व की ओर वट वृक्ष, दक्षिण की ओर आम तथा पश्चिम की ओर पीपल को लगाने का सलाह दिया गया है।

भारतीय ज्ञान परम्परा में आयुर्वेद:-

भारतीय आयुर्वेद पद्धति एवं यूनानी आयुर्वेद पद्धति में समानता पायी जाती है। भारतीय आयुर्वेद का संबंध यूनान के साथ-साथ अरब, चीन में भी स्थापित है। अर्थात् कहां जा सकता है। कि भारतीय आयुर्वेद पद्धति को अन्य देशों ने प्राचीन काल से ही अपना रखा है तथा उस पर शोध कर वर्तमान नवीन बिमारियों पर दवाईया तैयार कर रहे हैं और हम भारतीय अपनी परम्परागत तकनीक को त्याग कर, चिकित्सा के लिए विदेशी तकनीकों पर निर्भर होते जा रहे हैं। भारतीय आयुर्वेद परम्परा के अनुसार कप-बात में समन्वय ना होने पर शरीर में अनेक प्रकार से रोग उत्पन्न होते हैं। चरक संहिता में ज्वर के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। भारतीय आयुर्वेद पद्धति अर्थवेद एवं चरक संहिता से प्रेरित है।

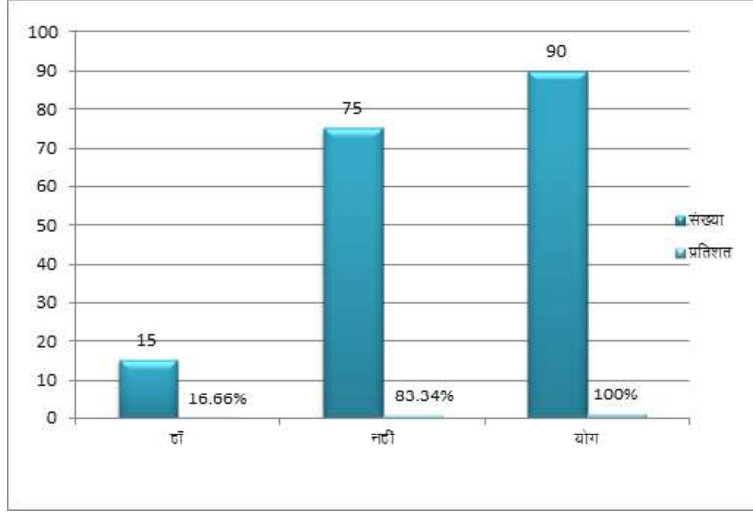
प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधि:-

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु आंकड़ों के संकलन के लिए 90 उत्तरदाताओं का चयन किया गया था। जिसमें से 45 उत्तरदाता महिला तथा 45 उत्तरदाता पुरुष वर्ग से शामिल थे। उत्तरदाताओं से आंकड़ों का संकलन प्रश्नावली विधि से संग्रहित किया गया है तथा उत्तरदाताओं से प्राप्त आंकड़ों का विश्लेषण सांख्यिकी विधि के ग्राफ चार्ट एवं सारणी के माध्यम से प्रदर्शित किया गया है।

सारणी क्रमांक 1

क्या आप को भारतीय ज्ञान परम्परा की जानकारी है।

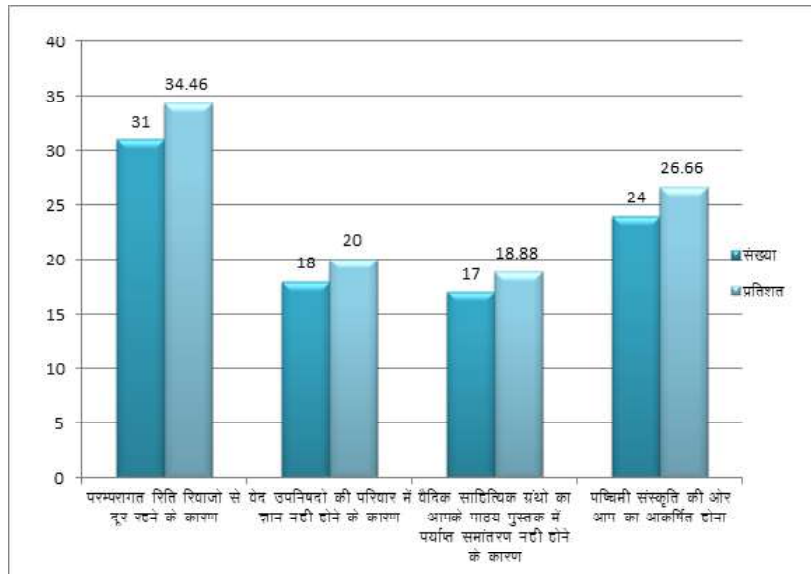
भारतीय ज्ञान की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
हाँ	15	16.66%
नहीं	75	83.34%
योग	90	100%



सारणी क्रमांक -1 (अ)

यदि नहीं तो क्यों ?

क्र.	भारतीय ज्ञान की जानकारी	संख्या	प्रतिशत
1.	परम्परागत रिति रिवाजो से दूर रहने के कारण	31	34.46
2.	वेद उपनिषदो की परिवार में ज्ञान नही होने के कारण	18	20
3.	वैदिक साहित्यिक ग्रंथो का आपके पाठय पुस्तक में पर्याप्त समांतरण नही होने के कारण	17	18.88
4.	पश्चिमी संस्कृति की ओर आप का आकर्षित होना	24	26.66

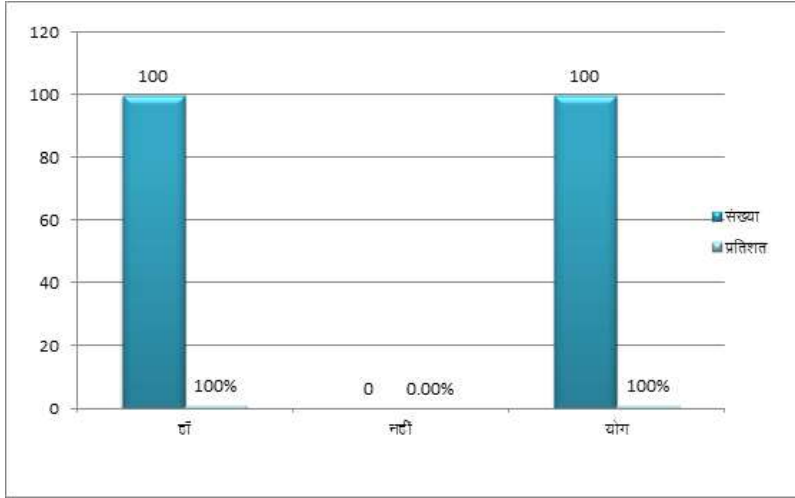


व्याख्या:- उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 16.66 प्रतिशत उत्तरदाताओं को अपनी भारतीय परम्परा का ज्ञान है। किन्तु 83.34 प्रतिशत उत्तरदाताओं को अपनी भारतीय परम्परा का ज्ञान नहीं है।

सारणी क्रमांक - 2

क्या भारतीय ज्ञान परम्परा ने विश्व को प्रभावित किया है।

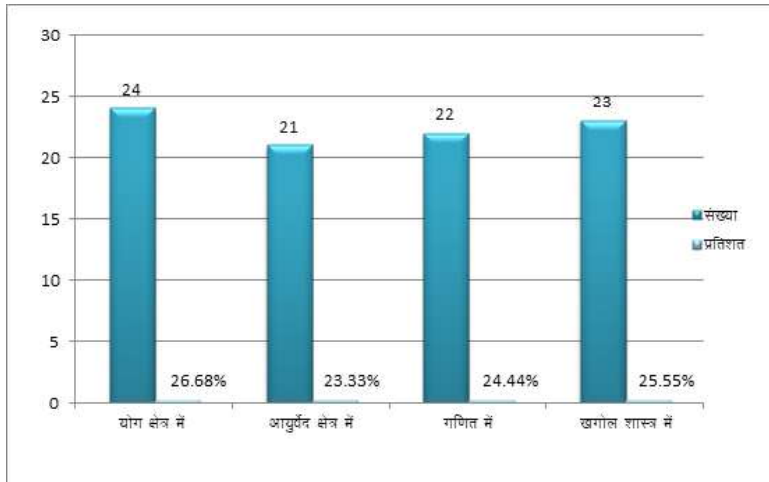
प्रभावित किया है।	संख्या	प्रतिशत
हाँ	100	100%
नहीं	00	0.00%
योग	100	100%



सारणी क्रमांक-2 (अ)

यदि हाँ तो किस प्रकार से -

किस प्रकार से	संख्या	प्रतिशत
योग क्षेत्र में	24	26.68%
आयुर्वेद क्षेत्र में	21	23.33%
गणित में	22	24.44%
खगोल शास्त्र में	23	25.55%



व्याख्या:- उपयुक्त तालिका में स्पष्ट होता है, कि 100 प्रतिषत उत्तरदाताओं का मानना है कि भारतीय ज्ञान परम्परा से विष्व को अत्यधिक प्रभावित किया है तथा 0.010 उत्तरदाताओं में बताया की भारतीय ज्ञान परम्परा से विष्व को कम प्रभावित किया है।

सुझाव:-

1. नवीन शोध से प्राप्त जानकारियों को विश्व के साथ साझा करना चाहिए। जिससे भारतीय ज्ञान परम्परा को विश्व में पुनः स्थापित किया जा सके।
2. भारतीय ज्ञान परम्परा पर एक व्यापक कार्य योजना की आवश्यकता है।
3. भारतीय ज्ञान परम्परा में प्रत्येक गाँवों में नवीनतम शोध की आवश्यकता है। जिससे की भारतीय परम्पराओं को वर्तमान से जोड़ा जा सके।
4. भारतीय ज्ञान को दैनिक जीवन में उपयोग में लाना चाहिए।

निष्कर्ष:-

1. नवीनतम शोध के द्वारा प्राचीन ग्रंथों को संरक्षित रखा जा सकता है।
2. मानव कल्याण के लिए भारतीय ज्ञान परम्परा में शोध की आवश्यकता है।
3. भारतीय ज्ञान परम्परा हर युग में मार्गदर्शक है।
4. भारतीय ज्ञान परम्परा लिखित, मौखिक, श्रव्य, पौराणिक कथाओं आदि रूपों में उपलब्ध है।
5. भारतीय ज्ञान परम्परा मानव जीवन के समस्त पक्षों को समग्र दृष्टी से देखता है।

संदर्भ ग्रंथ:-

1. अर्थवर्षेद 9/8/10
2. चरक संहिता 1/4/8
3. ऋग्वेद 9/4/11
4. पी० वी० शर्मा अयुर्वेद का वैज्ञानिक इतिहास
5. दयानिधि पाठक भारतीय ज्ञान परम्परा और शोध (2022)
6. प्रमोद भार्गव, आलेख - दुनिया के साथ साझा होंगे भारतीय ज्ञान परम्परा
7. भारतीय ज्ञान परम्परा संक्षिप्त परिचय 2020 डॉ. आनंद पाटील आलेख, भारतीय ज्ञान परम्परा जनहित।
8. आलेख भारतीय ज्ञान परम्परा में विश्व शांति का सामर्थ्य ब्लाग (2019)

भारतीय ज्ञान परंपरा, वाणिज्य और अर्थव्यवस्था

अनुप्रिया कुमारी

शोध छात्रा, अर्थशास्त्र विभाग, डॉ० भीमराव अम्बेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर

सारांश

भारतीय व्यापार प्रणाली का संबंध देश में प्रचलित औपचारिक तथा अनौपचारिक व्यापारिक पद्धतियों से हैं। दुनिया में लगभग सभी देशों की व्यापार प्रणाली में विविधता पाई जाती है और इसका प्रमुख कारण संबंधित देश का राजनीतिक-सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य होता है। अलग-अलग देश में पाए जाने वाली विविधता के कारण व्यापार प्रणाली भी प्रभावित होती है। भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता तथा विरासत के लिए जाना जाता है। हमारे देश की व्यापार प्रणाली की कई विशेषताएं हैं। सतत विकास एवं सामाजिक जिम्मेदारी की अवधारणा भारतीय व्यापार में प्राचीन समय से ही पाई जाती है ऐसे में भारतीय व्यापार प्रणाली के अध्ययन से इनको दुनिया भर में विभिन्न स्वरूपों में प्रयोग किया जा सकता है। बहुमूल्य धातुओं जैसे- सोने में निवेश का अत्यधिक चलन, विदेश में कार्यरत भारतीय द्वारा अपने परिजनों को लगातार भेजे जाने वाला धन, सतत विकास की अवधारणा, दान, सामाजिक जिम्मेदारी आदि भारतीय व्यापार प्रणाली की विशेषताएं हैं।

भारतीय ज्ञान परम्परा में अर्थशास्त्र का अर्थ केवल धन-संपदा के प्रबंधन तक सीमित नहीं था, बल्कि यह समाज, नीति, अर्थव्यवस्था और शासन के समग्र अध्ययन से जुड़ा था। अर्थशास्त्र का उद्देश्य था समाज के कल्याण के लिए संसाधनों का उचित प्रबंधन और न्यायपूर्ण वितरण।

भारतीय ज्ञान प्रणाली को एक विषय के रूप में कई प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों में शामिल किया गया है। इस पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति में भी जोर दिया गया है। इसी क्रम में भारतीय व्यापार प्रणाली को भी अकादमिक जगत में महत्व देने की आवश्यकता है। जहां तक भारतीय व्यापार प्रणाली के अध्ययन तथा उस पर शोध करने की बात है, तो इसके कई महत्वपूर्ण कारण हैं। भारत दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है और यह वैश्विक व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ऐसे में भारतीय व्यापार प्रणाली की समझ अंतर्राष्ट्रीय व्यापार की संभावनाओं को बढ़ाने में कारगर सिद्ध होगी। और भारतीय व्यापार प्रणाली का ज्ञान अंतर्राष्ट्रीय निवेशकों और व्यापारियों के लिए निवेश व साझेदारी में सहायक सिद्ध होगा। साथ ही भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे एवं वैश्विक स्तर पर वाणिज्य में अधिकतम सफलता प्राप्त की जा सकेगी। आज संपूर्ण दुनिया में, लोग भारत के सांस्कृतिक परिवेश तथा प्राचीन समय से प्रचलित व्यापारिक प्रणाली को जानने के उत्सुक हैं।

मूल शब्द: करियर, पेशेवर व्यवसाय, अनुसंधान, सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर की खोज

प्रस्तावना

भारतीय अर्थशास्त्र में अर्थ का अर्थ है धन, संसाधन और जीवनोपयोगी वस्तुएं। शास्त्रों में अर्थशास्त्र को चार पुरुषार्थों (धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष) में से एक माना गया है। अर्थशास्त्र का मुख्य उद्देश्य था सामाजिक व्यवस्था को स्थिर और समृद्ध बनाना। प्राचीन समय से ही भारत, वाणिज्य संबंधी कार्यों में बहुत अधिक प्रसिद्धि प्राप्त कर चुका है। प्राचीन आर्यों की आर्थिक अर्थव्यवस्था का पता वैदिक साहित्य से ही लगता है। वैदिक साहित्य से ही द्रविड तथा आर्य लोगों ने मिस्र और बेबीलॉन से व्यापारिक एवं सांस्कृतिक संबंध स्थापित किए। ईसा मसीह के सैकड़ों वर्ष पूर्व से ही भारत में शिल्प और वाणिज्य का सर्वांगीण विकास हुआ है। उस समय के विदेशी यात्रियों ने भी भारत के उन्नत उद्योग धंधे और वाणिज्य की बहुत प्रशंसा की है। प्राचीन समय से ही वाणिज्य या व्यापार दूसरे देशों से किया जाता रहा है। भारत से कई वस्तुओं का समुद्री माध्यम से व्यापार किया जाता रहा है। मुगल काल में भी भारत के गृह उद्योग उन्नत दशा में थे और एशिया, यूरोप, अफ्रीका के अनेक देशों में भारत

वस्त्र के अतिरिक्त मोती, मूंगा, हाथी दांत, मसाले, सुगंधित द्रव्य इत्यादि का भी खूब व्यापार होता था। पौराणिक कथाओं के अनुसार पोसीडॉन वाणिज्य के जनक हैं। वह समुद्र के देवता है और उस पर व्यापार करते थे इसलिए उन्हें वाणिज्य के पिता के रूप में जाना जाता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का वाणिज्य में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। भारतीय ज्ञान परंपरा का मुख्य उद्देश्य प्राचीन भारत को समझना है अर्थात् पूर्व युगों में व्यवसाय कैसा होता था? व्यवसायी, व्यापार करने हेतु कैसी पद्धति अपनाते थे? भारत देश विविधताओं का देश है। भारत में अलग-अलग भाषा, संस्कृति, प्राकृतिक विविधता, भौगोलिक परिस्थितियों में अंतर व अलग-अलग जाति और समुदाय के लोग पाए जाते हैं। अलग-अलग देश में पाए जाने वाली इसी विविधता के कारण व्यापार प्रणाली भी प्रभावित होती है। भारत अपनी सांस्कृतिक विविधता और विरासत के लिए जाना जाता है। हमारे देश की व्यापार प्रणाली में कई विविधता हैं।²

उदाहरण के रूप में भारत में विभिन्न राज्यों में लेखा पद्धति तथा वित्तीय नववर्ष में अंतर पाया जाता है। विभिन्न जातियां, विशिष्ट व्यवसाय से संबंधित रहती हैं और इन सभी का प्रभाव व्यापारिक प्रणाली पर पड़ता है अर्थात् व्यापार करने के लिए भारतीय ज्ञान प्रणाली का ज्ञान होना आवश्यक है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का प्रयोग हर व्यवसाय में किया जाता है एवं इसका उपयोग कृषि, पशुपालन, बागवानी, उद्यमशीलता आदि में रोजगार की दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण रहेगा। इसके साथ ही भारतीय ज्ञान का उपयोग कर व्यक्ति किसी भी देश में जाकर वहां की भाषाओं को सीख कर अपना व्यवसाय कर सकता है।³

भारतीय ज्ञान प्रणाली में कला, साहित्य, वेद, पुराण, कला, प्राचीन नीतियां, उपनिषद, भारतीय लिपियां, पांडुलिपियाँ एवं गीता, महाभारत, रामायण आदि का अध्ययन शामिल है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का उद्देश्य भारत की प्राचीन परंपराओं और ज्ञान को पुनर्जीवित करना है। भारत के पास अपार ज्ञान भंडार है जिसकी कई पांडुलिपियाँ अभी भी खोजी जाना बाकी है। भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से कैरियर, नौकरी, पेशेवर व्यवसाय, अनुसंधान, सामाजिक व सांस्कृतिक अवसर की खोज की जा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा (IKS) में कृषि, आयुर्वेद, हस्तशिल्प और अर्थशास्त्र (कौटिल्य) का समावेश है, जो आत्मनिर्भर भारत के लिए सतत और नैतिक विकास का आधार प्रदान करती है। यह ज्ञान प्रणाली केवल धन सृजन नहीं, बल्कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' के दर्शन के साथ 'नैतिक वाणिज्य' और स्थानीय संसाधनों के उपयोग पर जोर देती है।⁴

भारतीय ज्ञान परंपरा और अर्थव्यवस्था के मुख्य पहलू:

- स्थायी विकास (Sustainable Development): पारंपरिक कृषि पद्धतियां (जैसे- जैविक खेती) और जल प्रबंधन (स्टेपवेल्स, तालाब) पारिस्थितिक संतुलन के साथ आर्थिक विकास सुनिश्चित करते हैं।⁵
- आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था: लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs) में भारतीय ज्ञान, जैसे- आयुर्वेद, वस्त्र और हस्तशिल्प को अपनाने से स्थानीय रोजगार सृजन और उच्च मूल्य वाले उत्पाद तैयार हो रहे हैं।
- नैतिक वाणिज्य और प्रबंधन: कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राजा के लिए नैतिक शासन के साथ-साथ कुशल कर-प्रणाली और व्यापार प्रबंधन के सिद्धांत दिए गए हैं, जो आधुनिक प्रबंधन के लिए प्रासंगिक हैं।
- ज्ञान-आधारित अर्थव्यवस्था: प्राचीन विश्वविद्यालय (नालंदा, तक्षशिला) और परंपराएं (योग, विज्ञान) भारत को ज्ञान के केंद्र के रूप में पुनः स्थापित करने में मदद कर रही हैं।

शिक्षा मंत्रालय का भारतीय ज्ञान परंपरा विभाग इस ज्ञान को आधुनिक शिक्षा और उद्योगों से जोड़कर आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास कर रहा है।⁶

प्रमुख विचारक और उनके विचार

1. बृहस्पति

- बृहस्पति को प्राचीन काल का अर्थशास्त्रज्ञ माना जाता है।
- उन्होंने न्याय, अर्थ और नीति के सिद्धांतों को स्थापित किया।
- उनका अर्थशास्त्र सामाजिक न्याय और राज्य के कल्याण पर केंद्रित था।

2. शुक्राचार्य

- शुक्राचार्य ने अर्थशास्त्र को नीति शास्त्र के साथ जोड़ा।
- उन्होंने राज्य के आर्थिक प्रबंधन और धन संग्रहण के नियम बताए।
- उनका दृष्टिकोण था कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य राज्य की समृद्धि और स्थिरता है।

3. कौटिल्य (चाणक्य)

- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ की रचना की, जो प्राचीन भारतीय राजनीति और अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण स्रोत है।
- उन्होंने राज्य के प्रशासन, कर प्रणाली, व्यापार, कृषि, और सैन्य नीति पर विस्तृत विचार प्रस्तुत किए।
- उनका अर्थशास्त्र व्यावहारिक और रणनीतिक था, जिसमें राज्य की सुरक्षा और समृद्धि प्रमुख थी।

4. महात्मा गांधी

- गांधीजी ने अर्थशास्त्र को सरल और ग्राम-आधारित रखा।
- उनका विचार था कि अर्थशास्त्र का उद्देश्य स्वावलंबन, सादगी और नैतिकता होना चाहिए।
- उन्होंने बड़े औद्योगिक विकास की बजाय छोटे कुटीर उद्योगों और ग्राम स्वराज को महत्व दिया।

5. जे. के. मेहता

- जे. के. मेहता ने भारतीय अर्थशास्त्र में आधुनिक और परंपरागत विचारों का समन्वय किया।
- उन्होंने सामाजिक न्याय, आर्थिक विकास और नीति निर्धारण में भारतीय संदर्भ को महत्व दिया।

इस प्रकार, भारतीय ज्ञान परम्परा में अर्थशास्त्र का स्वरूप व्यापक और समग्र था, जिसमें न केवल आर्थिक बल्कि सामाजिक, नैतिक और राजनीतिक आयाम भी शामिल थे। विभिन्न विचारकों ने अपने-अपने काल और संदर्भ में अर्थशास्त्र को परिभाषित और विकसित किया।

भारतीय व्यवसाय को जानने की आवश्यकता

हम भारतीय ज्ञान परंपरा का उपयोग कर भारतीय व्यवसाय को जान सकते हैं कि पहले व्यापार कैसे किया जाता था। जब गांव में अधिक मुद्रा का चलन नहीं था या वहां के ग्रामीण अशिक्षित होने के कारण वस्तु विनिमय को अपनाते थे अर्थात् एक वस्तु के बदले दूसरी वस्तु का आदान प्रदान करके व्यापार किया जाता था। प्राचीन समय में जिन वेद, पुराण, महाभारत, रामायण आदि का जिक्र होता है उससे व्यवसाय एवं उसकी रणनीति ज्ञात होती है साथ ही प्रबंधन की श्रेणियां भी प्रदर्शित होती है एवं एक संगठन को भी इन सभी के माध्यम से समझा जा सकता है जैसे चाणक्य नीति में प्रबंधन से संबंधित कार्यों को बताया गया है। संत तुकाराम गाथा में एवं उसके अभंग में सामाजिक उद्यमिता को दर्शाया गया है।⁷

रामायण, महाभारत आदि व्यावसायिक नैतिकता, संगठनात्मक व्यवहार, व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं मानवीय संसाधन से संबंधित है। पंचतंत्र की कहानियाँ कॉर्पोरेट कल्चर से संबंधित होती हैं। तेनाली रामा की कहानियाँ व्यावसायिक अर्थशास्त्र एवं प्रबंधकीय निर्णय कौशल से संबंधित है। महाभारत मानवीय संसाधन प्रबंधन जैसे. नैतिकता, नवीन सोच, कार्य का विभाजन, महिला सशक्तिकरण जन संबंध आदि को दर्शाता है अर्थात् यह सभी वाणिज्य के महत्वपूर्ण अंग है इन सभी का व्यवसाय में महत्वपूर्ण योगदान है। इन सभी का ज्ञान हासिल करके हम अपनी व्यवसाय को ऊंचाइयों तक पहुंचा सकते हैं।⁸

भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से प्राप्त ज्ञान के विभिन्न क्षेत्र



भारतीय ज्ञान परंपरा का अध्ययन करने से हमें उपरोक्त सभी विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। यह सभी व्यवसाय के ही महत्वपूर्ण पहलू हैं उनके ज्ञान के बिना हम अपने व्यवसाय को सफल नहीं बना सकते हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से रोजगार के अवसर

- व्यापारिक एवं व्यवसायिक अवसर।
- सामाजिक सांस्कृतिक एवं नेटवर्किंग के अवसर।
- कॉर्पोरेट अवसर।
- सेना, सिविल सेवा, विदेश सेवा के अवसर।
- अनुसंधान के अवसर।
- करियर एवं रोजगार के अवसर।
- आईकेएस संकाय शिक्षक, आईकेएस विशेषज्ञ के रूप में अवसर।
- प्राचीन भारतीय खेल में अवसर।
- नृत्य, संगीत, कला, शिल्प विनिर्माण में अवसर आदि।

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान प्रणाली के माध्यम से खुद को पुनर्जीवित करने की भारत की यात्रा देश में महत्वपूर्ण बदलाव लाने के लिए तैयार है। भारत अपनी समृद्धि, सांस्कृतिक विरासत और ज्ञान परंपराओं को अपना कर भारत ब्रिटिश शासन की विरासत पर काबू पा सकता है और एक समृद्ध राष्ट्र के रूप में अपना सही स्थान हासिल कर सकता है। भारतीय ज्ञान प्रणाली द्वारा निर्देशित शिक्षा क्षेत्र का परिवर्तन इस पुनरुद्धार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा जिससे मानसिक स्वतंत्रता और वैदिक सशक्तिकरण के एक नए युग की शुरुआत होगी और समाज व देश में व्यापार के नए अवसर का सृजन होगा एवं वैश्विक व्यापार व वाणिज्य को भी प्रोत्साहन मिलेगा। जैसे-जैसे भारत प्रगति करेगा उसके प्राचीन ज्ञान को व्यावहारिक अनुप्रयोग मिलेगा जिससे न केवल उसके नागरिकों को बल्कि वैश्विक समुदाय को भी लाभ होगा तथा भारतीय ज्ञान परंपरा के अध्ययन से युवाओं के लिए भविष्य में भी करियर के कई अवसर उपलब्ध होंगे साथ ही उनमें व्यवसाय एवं वाणिज्य गतिविधियों के सफल संचालन का ज्ञान प्राप्त होगा जिससे वह अपने भविष्य में उत्तरोत्तर वृद्धि कर सकेंगे एवं देश के व्यवसाय को आगे बढ़ा सकेंगे।

सन्दर्भ

1. वर्मानी डॉ. साक्षी (2023) वर्तमान परिदृश्य में भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता।
2. रावल मोहित (2023) आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की उपयोगिता।
3. <https://rajbhawan.rajasthan.gov.in>
4. <https://www.alliance.edu.in>
5. <https://www.egyankash.ac.in>
6. <https://www.researchgate.net>
7. <https://ashutoshpareek.com>
8. <https://erupublication.com>

भारतीय ज्ञान परंपरा एवं इतिहास

डॉ० ममता कुमारी

अस्टिंट प्रोफेसर, राधा गोविन्द विश्वविद्यालय, रामगढ, झाडखण्ड

सारांश

हमारी प्राचीन ज्ञान परंपरा ने व्यक्ति के सर्वांगीण विकास पर ध्यान केन्द्रित किया है तथा शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त करने योग्य जीवन के लिए सहायक है। संपूर्ण वैदिक वाग्मय- रामायण, महाभारत, पुराण स्मृति ग्रंथ, दर्शन, धर्म ग्रंथ, काव्य, नाटक, व्याकरण तथा ज्योतिष शास्त्र संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इनकी महिमा को बढ़ाते हैं, जो भारतीय सभ्यता, संस्कृति की रक्षा करने में पूर्णतः सिद्ध होती है। सुसंस्कृत ज्ञान से ही संस्कारवान समाज का निर्माण होता है। संस्कारों से कायिक, वाचिक, मानसिक पवित्रता के साथ पर्यावरण भी स्वच्छ होता है। बदलते सामाजिक परिवेश और भारतीय मूल्यों के बीच हमारी शिक्षा व्यवस्था को समावेशी बनाना अत्यावश्यक है। यह समावेशी व्यवस्था भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा को लिये बिना नहीं चल सकती है, क्योंकि एक तरफ तो हम आधुनिकता के दौर की ओर तेजी से अग्रसर हैं, वहीं हमारी संस्कृति में निहित ज्ञान विज्ञान परंपरा को भूलते जा रहे हैं। इस अंधानुकरण में हमारी वही स्थिति हो चुकी है जैसा कि उपनिषदों में कहा गया है कि यदि दृष्टिहीन को रास्ता दिखाने वाला भी दृष्टिहीन हो तो लक्ष्य की प्राप्ति कठिन हो जाएगा।

भारत वर्ष ज्ञान भूमि से अलंकृत है जो आधुनिक युग के विज्ञान से भी परे है। जो समस्त ज्ञान प्रेमियों के लिए शोध का विषय है। अब समय है भारत के द्वारा विश्व को दिये गये ज्ञान को संजो कर इसका संवर्धन किया जाए और भारत वर्ष के जनता को संस्कृति, पहचान और प्राप्त ज्ञान से जोड़ा जाए। तभी इसकी उपादेयता सिद्ध होगी।

मूल शब्द: ज्ञान परंपरा, संस्कृति, सांस्कृतिक मूल्य, सर्वांगीण विकास

प्रस्तावना

प्राचीन काल की भारतीय ज्ञान परंपराएँ और संस्कृति मानवता को प्रोत्साहित करती रही हैं। पुराणों में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। भारत में तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञान अर्जन के लिए आते थे। प्राचीन भारतीय ज्ञान विज्ञान की गौरव मयी परंपरा समस्त जगत को आलोकित करने वाली है। संस्कृत भाषा में ज्ञान विज्ञान की महती श्रृंखला है जो वर्तमान वैज्ञानिक जगत के लिए कुतुहल का विषय ही है। आज जहां एक ओर आधुनिक विज्ञान सम्मुन्नत अवस्थिति में दिखायी दे रहा है वहीं दूसरी ओर इसके दोष एवं नाकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दे रहे हैं।

विज्ञान की प्रगति हर युग की आवश्यकता है किन्तु इसमें दूरदर्शिता और मानव कल्याण का भाव सर्वोपरि होना चाहिए। स्वदेशी विज्ञान आंदोलन के माध्यम से आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान वैभव से जोड़ने का अनवरत प्रयास किया जा रहा है।¹

भारतीय ज्ञान परंपरा जो वैदिक एवं उपनिषद काल में थी, वह बौद्ध और जैन काल में भी रही यह विभिन्न विश्वविद्यालयों की स्थापना और शिक्षा व्यवस्था से स्पष्ट परिलक्षित होता है। लेकिन इसका लोप विगत 200 से 300 वर्षों में हुआ है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में इसे भी उचित रूप में प्रतिबिम्बित करने की आवश्यकता है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा की गौरवमयी परंपरा

भारतीय ज्ञान परंपरा अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक है, जिसमें ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक, कर्म और धर्म, तथा भोग और त्याग का अद्भुत समन्वय है। ऋग्वेद के समय से ही शिक्षा प्रणाली जीवन के नैतिक, भौतिक, आध्यात्मिक और बौद्धिक मूल्यों पर केन्द्रित होकर विनम्रता, सत्यता, अनुशासन, आत्मनिर्भरता और सभी के लिए सम्मान जैसे मूल्यों पर जोर देती थी। वेदों में विद्या को मनुष्यता की श्रेष्ठता का आधार स्वीकार किया गया था। शिक्षा प्रणाली ने सीखने और शारीरिक विकास दोनों पर ध्यान केन्द्रित किया। कर्म वही है जो बन्धनों से मुक्त करे। और विद्या वही है जो मुक्ति का मार्ग दिखाए।

इसके अतिरिक्त जो भी कर्म हैं वह सब निपुणता देने वाले मात्र हैं। शिक्षा के इस संकल्प को भारतीय परंपरा में अंगीकृत कर तद अनुरूप ही विश्वविद्यालयों और गुरुकुलों में शिक्षा दी जाती थी। घर, मंदिर, पाठशाला तथा गुरुकुल में संस्कार युक्त स्वदेशी शिक्षा दी जाती थी।

प्राचीन काल की ज्ञान परंपराएँ और प्रथाएँ मानवता को प्रोत्साहित करती थी। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है। आचार्य यास्क निरुक्त में कहते हैं- “नह्येषु प्रत्यक्षमस्ति अनुषेत्पससो वा” (निरुक्त 13.12) अर्थात् जो ऋषि या तपस्वी नहीं हैं वह मंत्रों के यथसार्थ ज्ञान को नहीं जान सकता। अतः जिस प्रकार पूर्व को जानने के लिए पूर्व की ओर ही गमन करना होता है, उसी प्रकार आर्ष प्रणीत सिद्धान्तों व सूत्रों को समझने के लिए उन्हीं के अनुरूप चिंतन मनन के लिए अग्रसर होना होगा।²

वैज्ञानिक और तार्किक चिंतन का परिणाम

प्राचीन भारतीय सनातन ज्ञान परंपरा अति समृद्ध थी तथा इसका उद्देश्य धर्म, अर्थ का मोक्ष को समाहित करते हुए व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को विकसित करना था। जब सारा विश्व अज्ञान रूपी अंधकार में भटकता था तब सम्पूर्ण भारत के मनीषी उच्चतम ज्ञान का प्रसार करके मानव को पशुता से मुक्त कर, श्रेष्ठ संस्कारों से युक्त कर सम्पूर्ण मानव बनाते थे “संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनासि जानताम् देवाभागं यथा पूर्वं, सजनानां उपासते” ऋग्वेद 10.191.2

“साथ चलने, एक स्वर में बोलने और एक दूसरे के मन को जानने वाला समाज ही अपने युग को बेहतर बनाने की सामर्थ्य से युक्त हो सकता है और ऐसे युग में जीने वाले स्वयं के लिए बेहतर वर्तमान और आने वाली पीढ़ियों के लिए बेहतर भविष्य की संकल्पना करने वाले होते हैं।” ऋग्वेद का यह मन्त्र हमें ऐसे ही सनातन दृष्टि को प्रदान करने वाला है।³

भारतीय ज्ञान परंपरा का भू-सांस्कृतिक और सभ्यतागत संदर्भ

भारत भूमि की प्राचीनता, इसमें से उत्पन्न हुई सभ्यता और संस्कृति से स्थापित होती है। इस परिप्रेक्ष्य में भारत भूमि की भौगोलिक जानकारी होना भी आवश्यक है। और इससे जुड़ी हुई है भारत की ज्ञान परंपरा। यह सभी विषय परस्पर जुड़े हुए हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा के मूल में विद्यमान भू-सांस्कृतिक और सभ्यतागत विशेषताओं का पता लगाने और पहचानने के लिए हमें किसी प्रामाणिक ऐतिहासिक या प्रागैतिहासिक, मौखिक या लिखित रूप में सबसे पुराने उपलब्ध पाठ्य संदर्भ का पता लगाना होगा। यह तथ्य सर्वविदित है कि विभाजन पूर्व समय में भारत ने उत्तर पश्चिम में अपनी तात्कालिक भौगोलिक सीमाएँ अफगानिस्तान और इरान के साथ साझा की थी। लेकिन प्राचीन काल में इन राजनीतिक सीमाओं को आज की तरह चिन्हित नहीं किया गया था। प्रारंभ में भू-दृश्य कुछ भौगोलिक कारणों से अलग अलग थे, जैसे पहाड़, नदियाँ, रेगिस्तान या जंगल आदि। यही कारण है कि एक विशिष्ट भौगोलिक रूप से चिन्हित सीमाओं के भीतर रहने वाले लोगों के दृष्टिकोण उनकी जीवन शैली, व्यवहार और सोचने एक सामान्य और विशिष्टता हासिल कर ली थी।⁴

अक्षय ज्ञान परंपरा और इतिहास

प्राचीन काल से ही हमारा देश मानवीय मूल्यों एवं विशिष्ट वैज्ञानिक परंपराओं का देश रहा है। भारत की संस्कृति रही है कि भारत ने दुनिया को अलग अलग देश के रूप में माना ही नहीं है। “अयं निजः परोवेति गणना लघु चेतषाम् उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।”⁵

महा उपनिषद् के इस सिद्धान्त के आधार पर भारत दुनिया को एक परिवार मानता है। यह अलग बात है कि पाश्चात्य सभ्यता की आपाधापी में हम भी यह गलती से समझने लगे कि यह सभ्यता भौतिकवाद पर टिकी है, न कि ज्ञान और आध्यात्म पर। इस सदी के उत्तरार्ध से पश्चिमी सभ्यता वाले देश भारतीय संस्कृति और सभ्यता को अपनाने और जानने पर जोर देने लगे हैं। वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों और यहां की जीवन शैली को जानने के लिए अपने यहां कई विभाग से लेकर शोध संस्थाओं की स्थापना करने लगे हैं। भारत की परंपराओं को आज विश्व भी अपना रहा है। हमें और हमारी भावी पीढ़ियों को भी भारत की प्राचीन मूल्यों को यथोचित महत्व देना होगा। इसके लिए आंतरिक ज्ञान गुण शक्ति एवं आदर्शों को ठीक रूप से पहचानना एवं सही दिशा प्रदान करना होगा।⁶

यह ज्ञान परंपरा अनादिकाल से चली आ रही है। इसीलिए ऐसा माना जाता है कि इस भूमि में जन्म लेने के लिए देवता, सुर, असुर सभी तरसते हैं, क्योंकि यहां से स्वर्ग और मोक्ष का मार्ग प्रशस्त होता है। निःसंदेह अक्षय ज्ञान परंपरा मानना अतिशयोक्ति नहीं होगी।

आधुनिक संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की भूमिका

यह भारत भूमि महान है। इस भूमि की ज्ञान की अविरल धारा ने सम्पूर्ण जगत को सींचा है। भारतीय ज्ञान परंपरा पुरातन युग से बहुत समृद्ध रही है। आधुनिक युग में प्रचलित भारतीय ज्ञान और विदेशों से आ रही तथाकथित नवीन खोज जो हमारे ग्रन्थों में उल्लिखित है, भारतीय ज्ञान परंपरा के समृद्धशाली होने का प्रमाण है। बीते कुछ शताब्दियों से इस भूमि को इस प्रकार महसूस कराया जाता रहा है कि कभी यहां ज्ञान अंकुरित ही नहीं हुआ है।

सहस्र वर्ष की दासता में हमारी सैकड़ों पीढ़ियों ने पीडा को झेलते हुए इस ज्ञान को संजोए रखा। परंतु समय के साथ इसकी उपादेयता क्षीण होती रही। इसलिए समय है भारत के ज्ञान वृक्ष की छाया में पोषित हो रहे इस विश्व को बताने का कि भारत का गुरुत्व अभी भी कायम है भारत का ज्ञान गंगा जल के समान है। जो निर्मल और अविराम है। मैकाले के मानस पुत्र प्रश्न उठाते हैं कि भारत ने विश्व को क्या दिया और यह बोध कराते हैं कि पाश्चात्य देशों ने ही भारत को सब कुछ दिया है। भारत ने विश्व को ज्ञान प्रणाली दी, विज्ञान के अनेक आयाम दिये। यह भारतीय ज्ञान प्रणाली के बारे में चिंता और चिंतन करने का समय है। इसकी उपादेयता जनमानस तक पहुंचाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है। क्योंकि यह बात केवल कुछ पुरातन ज्ञान के बारे में नहीं है, यह बुद्धि आंतरिक सुरक्षा और राष्ट्रीय गौरव के बारे में है। साथ ही यह बात भी विस्मृत न हो कि भारतीय ज्ञान परंपरा सत्य का अनुमोदन करती है।⁷

आधुनिक युग में डिप्रेशन, तनाव, इन्जाइटी व मेन्टल ट्रामा जैसे शब्दों का प्रयोग अत्यधिक मात्रा में बढ़ गया है।

आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य जगत की जीवन शैली को अपनाने के कारण इन शब्दों को अपने जीवन में समाहित कर चुकी है किन्तु पुरातन भारत में इस प्रकार की मनोवृत्ति देखने को नहीं मिलती, इसका कारण रहा 'भारतीय दर्शन'। अब यह हम सभी का कर्तव्य बनता है कि भारत वर्ष की अनमोल धरोहर, ज्ञान को सयंवर्धित करके रखें जिससे कि विश्व का कल्याण हो सके एवं भारत की आने वाली पीढ़ी भारत को हीन दृष्टि से न देख कर गौरव पूर्ण दृष्टि से देखे।⁸

निष्कर्ष

प्राचीन भारत ने दर्शन, ध्वन्यात्मक अनुष्ठान, व्याकरण, खगोलविज्ञान, अर्थशास्त्र, सांख्य सिद्धांत, तर्क, जीवन विज्ञान, आयुर्वेद, ज्योतिष एवं संगीत जैसे विभिन्न मानव कल्याणकारी क्षेत्रों में कीर्तिमान की स्थापना करके मानव जाति की उन्नति में अत्यधिक योगदान दिया है। प्राचीन भारतीयों द्वारा अविस्कृत विचारों और तकनीकीयों का आधुनिक विज्ञान और पौद्योगिकी की मूलाधार को दृढ़ करने में अद्भुत योगदान रहा है। जबकि इन अभिनव योगदान को वर्तमान में कुछ तो अपनाया जा रहा है कुछ अभी भी अज्ञात है।

इस प्रकार हमारे भारत वर्ष ने विश्व को अनेक प्रकार से योगदान देकर लाभन्वित किया है। भारत ने ही विश्व को बौद्ध, जैन और सिक्ख पंथ दिये। भारत ने विश्व को गुरु शिष्य परंपरा दी जिसके मायम से वर्षों तक अर्जित ज्ञान को आत्मसात और विश्लेषण कर नये ज्ञान को संश्लेषित किया गया।

निष्कर्षतः भारतीय ज्ञान परंपरा आज के परिदृश्य में भी लागू है, जो तनाव प्रबंधन स्थिरता आदि जैसे मुद्दों से निपटने कि लिए व्यावहारिक सुझाव देती है। यह ज्ञान का एक विशाल भण्डार प्रदान करती है। जिसका उपयोग लोगों, समुदायों और मानवता को आगे बढ़ाने के लिए किया जा सकता है।

अतः विश्व धरोहर के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के जरिए इन्हें बढ़ाना चाहिए और इन्हें नये उपयोग में भी लाना चाहिए।

उत्तम ज्ञान ही एक स्वस्थ समाज को उसके शीर्ष तक पहुंचाने में योगदान देती है। सभी योनी में मनुष्य को श्रेष्ठ कहा गया है। अतः श्रेष्ठों का कार्य भी उत्तम और कल्याणप्रद होना आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. पण्डित मधुसुदन ओझा, भारतवर्ष: द इन्डियन नरेटिव ऐज टोल्ड इन इन्द्रविजयाह, रूपा 2017
2. नीतिशतकम्
3. मनुस्मृति
4. दर्शनकोश, प्रगति प्रकाशन, मास्को 1980, पृष्ठ 226, आईएसबीएन 5-010009072

5. ईशोपनिषद्
6. मिश्र, जयशंकरः प्राचीन भारत का इतिहास पृ० 667
7. सत्यार्थ प्रकाश, किरण प्रकाशन 2015 आईएसबीएन 13:987-8189068783
8. पाणिनी कालीन भारतवर्ष पृ० 2 मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा, उपनिवेशवाद, वैश्वीकरण और चुनौतियाँ: एक अध्ययन

डॉ० अनुराग प्रताप सिंह

एम.ए., पीएच.डी., जयप्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

सारांश

भारत की प्राचीन पारंपरिक ज्ञान प्रणाली अद्वितीय और बेजोड़ है, और यह हमेशा प्रासंगिक बनी रहती है। भारतीय ज्ञान प्रणाली का एक समृद्ध और गौरवशाली इतिहास है। प्राचीन भारतीय ज्ञान और शिक्षा प्रणालियाँ मानव कल्याण की दृष्टि पर दृढ़ता से आधारित थीं। भारतीय ज्ञान प्रणाली एक जीवंत, विकसित होती परंपरा है जिसने अपने मूल सिद्धांतों को बनाए रखते हुए विभिन्न ऐतिहासिक युगों के अनुरूप निरंतर अनुकूलन किया है। वर्तमान में इस प्राचीन ज्ञान को समकालीन शिक्षा के साथ एकीकृत करने के प्रयास जारी हैं। इससे हमें मानव कल्याण को बढ़ावा देने और एक समतावादी समाज के निर्माण के प्रयासों को बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इसलिए, मानव कल्याण से संबंधित ज्ञान, दर्शन और मूल्यों की प्रकृति और इतिहास का विश्लेषण करने की नई आवश्यकता है। भारत वह भूमि है जहाँ मानवता की आशाओं और आकांक्षाओं का पोषण हमेशा से होता रहा है। विज्ञान, चिकित्सा, तर्कशास्त्र, दर्शन, धर्म और खगोल विज्ञान सभी की जड़ें भारत में हैं। भारत को अक्सर ध्यानव सभ्यता का पालना, श्वाषा की जननी, ष्कहानियों और रीति-रिवाजों की दादी आदि विशेषणों से पुकारा जाता है। कई सभ्यताएँ और संस्कृतियाँ अपने चरम पर पहुँचीं, लेकिन अंततः उनका पतन हो गया। इसके बावजूद, भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे पुरानी जीवित संस्कृति बनी हुई है, क्योंकि भारतीय संस्कृति या सभ्यता की नींव ज्ञान पर टिकी है। हमारी भारतीय संस्कृति ज्ञान से समृद्ध है। ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने पारंपरिक भारतीय शिक्षा प्रणालियों को नष्ट कर दिया। उन्होंने स्वदेशी भाषाओं की जगह अंग्रेजी को लागू किया और पश्चिमी पाठ्यक्रम को आगे बढ़ाया। इससे पारंपरिक ज्ञान का पतन हुआ। औपनिवेशिक शिक्षा प्रणाली ने स्वदेशी ज्ञान की कीमत पर पश्चिमी ज्ञान को प्राथमिकता दी। इससे पारंपरिक और आधुनिक शिक्षा के बीच एक विभाजन पैदा हुआ, जिससे स्वदेशी प्रणालियों में विश्वास कम हो गया। पश्चिमी मूल्यों और मानदंडों के थोपे जाने से भारत की सांस्कृतिक पहचान के कई अनुभूत पहलू नष्ट हो गए और पश्चिमी वैज्ञानिक ज्ञान और स्वदेशी प्रणालियों के बीच एक ऊँच-नीच का अंतर पैदा हो गया।

मूल शब्द: भारतीय ज्ञान प्रणाली, स्वदेशी, आधुनिकीकरण, औपनिवेशिक, वैश्वीकरण

प्रस्तावना

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा हजारों वर्षों से विकसित एक समृद्ध और विविध प्रणाली है, जिसकी जड़ें वेदों, उपनिषदों और गुरु-शिष्य परंपरा में निहित हैं। यह दर्शन, विज्ञान, आयुर्वेद, गणित और कला का संगम है, जो 'सा विद्या या विमुक्तये' (विद्या वह है जो मुक्त करे) के मूल सिद्धांत पर आधारित है। यह परंपरा ज्ञान, अनुभव और संवाद के माध्यम से लगातार विकसित होती रही है।

प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपरा का विकासक्रम और मुख्य आधार:

- वैदिक काल: वेदों (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद, अथर्ववेद) को भारतीय ज्ञान का सबसे पुराना और मूल स्रोत माना जाता है, जिनमें जीवन के हर पहलू का ज्ञान निहित है।
- उपनिषद और दर्शन: उपनिषदों ने आध्यात्मिक चिंतन को गहराई दी, जबकि षड्दर्शन (सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदांत) ने तर्क और अनुभव के आधार पर ज्ञान का विस्तार किया।²
- शिक्षा प्रणाली (गुरु-शिष्य परंपरा): ज्ञान मौखिक रूप से गुरु से शिष्य तक पहुंचाया जाता था, जिससे वर्षों तक अर्जित ज्ञान को संरक्षित और विकसित किया गया।

- विज्ञान और विद्या: प्राचीन भारत में चरक और सुश्रुत संहिता के माध्यम से चिकित्सा, आर्यभट्ट के माध्यम से खगोलशास्त्र और गणित, तथा कौटिल्य के अर्थशास्त्र के माध्यम से राजनीति का अद्भुत विकास हुआ।³
- ज्ञान के केंद्र: तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे प्राचीन विश्वविद्यालय शिक्षा और अनुसंधान के प्रमुख केंद्र थे।
- बौद्ध और जैन परंपरा: बौद्ध और जैन धर्मों ने भी ज्ञान की विविधता में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

ज्ञान के संरक्षण के तरीके

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल पुस्तकीय नहीं, बल्कि व्यावहारिक और अनुभवजन्य थी। इसे संस्कृत कथा साहित्य, पशु-पक्षी की कहानियों और जीवन शैली के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया गया। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से ज्ञान को आत्मसात और विश्लेषण कर नई पीढ़ियों को हस्तांतरित किया गया।⁴

वर्तमान में प्रासंगिकता

आज भी यह ज्ञान परंपरा तनाव प्रबंधन, स्थिरता और जीवन के व्यावहारिक सुझावों के लिए प्रासंगिक है। यह ज्ञान का एक विशाल भंडार है, जो मानवता को आगे बढ़ाने में मदद कर सकता है।

भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक स्वरूप (Historical Evolution)

भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का इतिहास सहस्राब्दियों तक फैला हुआ है, जिसकी शुरुआत वैदिक काल (लगभग 1500-500 ईसा पूर्व) और वेदों के मूल ग्रंथों से होती है। यह विभिन्न कालखंडों में विकसित हुआ, जिसमें दर्शन, विज्ञान, गणित, तर्कशास्त्र और कला शामिल हैं, यह प्रणाली प्राचीन ग्रंथों, मौखिक परंपराओं, गुरुकुलों और विश्वविद्यालयों जैसी संस्थागत शिक्षण पद्धतियों में गहराई से निहित है।⁵

- वैदिक साहित्य: वेद (ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद) भारतीय सभ्यता के प्राचीन ग्रंथ हैं, जो ब्राह्मण विज्ञान, दर्शन, कर्मकांड और नैतिकता के बारे में जानकारी प्रदान करते हैं। उपनिषद्, ब्राह्मण और आरण्यक जैसे ग्रंथ मीमांसा, आध्यात्मिक ज्ञान और कर्मकांड प्रथाओं का अन्वेषण करते हैं।⁶
- महाकाव्य और पुराण: महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्य नैतिक और आचार संबंधी दुविधाओं को एकीकृत करते हैं, जबकि पुराण सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और पौराणिक कथाओं को सूचीबद्ध करते हैं।
- संस्कृत साहित्य: कालीदास की शकुंतला और आर्यभट्ट की आर्यभटीय जैसी शास्त्रीय कृतियाँ क्रमशः नाटक और गणित में योगदान को दर्शाते हैं।

ज्ञान संचरण

- प्रारंभ में मौखिक रूप से, ज्ञान संचरण ऋषियों और चित्रों द्वारा स्मरण और पाठ पर निर्भर था।
- ताड के पत्तों पर लिखित पांडुलिपियाँ और बिर्च की छाल पर लिखे ग्रंथ इस ज्ञान को संरक्षित करने का प्राथमिक माध्यम बन गए, जिन्हें अक्सर मंदिर पुस्तकालयों में संग्रहित किया जाता था।⁷

प्राचीन पुस्तकालय और विश्वविद्यालय

- नालंदा, वर्तमान बिहार में स्थित, नालंदा विश्वविद्यालय में तीन बहुमंजिला इमारतों वाला एक विशाल पुस्तकालय (धर्मगंज) था, जिसमें पांडुलिपियों का विशाल संग्रह था।
- तक्षशिला चिकित्सा, कानून और सैन्य विज्ञान जैसे विविध विषयों पर केन्द्रित था।
- विक्रमशिला और ओदंतपुरी बौद्ध शिक्षा के केंद्र थे, जहाँ ग्रंथों का समृद्ध भंडार था।
- लिपि विकास: शिलालेखों और पांडुलिपियों के लिए ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपियों का विकास हुआ, जिन्होंने ज्ञान के संरक्षण में योगदान दिया।
- मध्यकालीन योगदान: इस्लामी और फारसी सांस्कृतियों के प्रभाव से, भारतीय ज्ञान का विस्तार अनुवादों और रूपांतरणों के माध्यम से हुआ।

- भक्ति और सूफी आंदोलन: इन आंदोलनों ने स्थानीय भाषाओं को शामिल करके भारतीय साहित्य को समृद्ध किया और आध्यात्मिक और दार्शनिक विचारों को आम लोगों तक पहुँचाया।
- औपनिवेशिक युग: पुस्तकालय और पश्चिमी संपर्क ब्रिटिश औपनिवेशिक काल में ज्ञान प्रणाली में बदलाव देखा गया। आधुनिक पुस्तकालय: एशियाटिक सोसाइटी (1784 में स्थापित) जैसी संस्थाओं का उद्देश्य पश्चिमी शिक्षा को बढ़ावा देते हुए प्राचीन पांडुलीपियों का संरक्षण करना था।⁸
- प्राचीन ग्रंथों की पुनर्खोज: पश्चिमी विद्वानों ने भागवत गीता और अर्थशास्त्र जैसी कृतियों का अनुवाद किया, जिनसे भारतीय दर्शन और इतिहास में वैश्विक रूचि जागृत हुई।
- स्वतंत्रता प्राप्ति और आधुनिक विकास: साहित्य और ज्ञान संरक्षण को बढ़ावा देने के लिए भारतीय राष्ट्रीय पुस्तकालय और साहित्य अकादमी जैसे संस्थानों की स्थापना। भारतीय डिजिटल पुस्तकालय जैसे डिजिटल पुस्तकालय वैश्विक पहुँच के लिए पांडुलीपियों और पुस्तकों का डिजिटलीकरण कर रहे हैं।⁹

भारतीय ज्ञान परंपरा की विशेषताएं

- समग्र दृष्टिकोण (Holistic View): भारतीय ज्ञान परंपरा शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा के समन्वय पर बल देती है।
- अध्यात्म और विज्ञान का संतुलन: जहाँ एक ओर उपनिषद और दर्शनशास्त्र आत्मज्ञान की बातें करते हैं, वहीं दूसरी ओर चरक संहिता, भास्कराचार्य, और आर्यभट्ट जैसे विद्वानों ने विज्ञान और गणित में गहरा योगदान दिया।¹⁰
- मूल्यों पर आधारित शिक्षा: शिक्षा केवल सूचनाओं का संप्रेषण नहीं थी, बल्कि यह चरित्र निर्माण, आत्मानुशासन और नैतिकता पर आधारित थी।
- गुरुकुल प्रणाली: शिक्षक और शिष्य के मध्य आत्मीय संबंध होता था, और शिक्षा जीवन जीने की कला सिखाती थी।

प्रमुख क्षेत्रों में योगदान¹¹

क्षेत्र	योगदान/ उदाहरण
गणित	शून्य की खोज, दशमलव प्रणाली, बीजगणित
चिकित्सा	आयुर्वेद (चरक, सुश्रुत), योग
दर्शन	वेदांत, सांख्य, न्याय, बौद्ध और जैन दर्शन
भाषा और व्याकरण	पाणिनि की अष्टाध्यायी, संस्कृत की संरचना
ज्योतिष और खगोलशास्त्र	खगोल गणनाएँ, पंचांग निर्माण, ग्रहों की गति का ज्ञान
कला और चित्रकला	भारतनाट्यम, नाट्यशास्त्र, मंदिर स्थापत्य कला

वर्तमान परिदृश्य (Contemporary Relevance)

भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय (MoE) के भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग (IKS प्रभाग) की स्थापना अक्टूबर 2020 में की गई थी, जिसका उद्देश्य IKS के सभी पहलुओं पर अंतःविषय और बहुविषयक अनुसंधान को बढ़ावा देना, आगे के शोध और सामाजिक अनुप्रयोगों के लिए ज्ञान की गहरी समझ और प्रशंसा को संरक्षित और प्रसारित करना है। IKS प्रभाग IKS केंद्रों की स्थापना और IKS में अंतःविषय और बहुविषयक अनुसंधान का समर्थन और वित्तपोषण करता है। प्रभाग संकाय विकास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, पाठ खनन (Text Mining) और प्रलेखन परियोजनाओं, और अन्य संस्थानों के साथ साझेदारी में कई आउटरीच गतिविधियों के संचालन के अलावा स्नातक छात्रों के लिए इंटरशिप कार्यक्रम भी संचालित करता है। इसके अतिरिक्त, प्रभाग ने विभिन्न भारतीय भाषाओं में लेख प्रकाशन के लिए ज्ञान की पोर्टल की शुरुआत की, जिनसे पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के साथ व्यापक प्रसार और जुड़ाव को बढ़ावा मिला।¹²

भारतीय ज्ञान परंपरा आज पुनः वैश्विक पटल पर मान्यता प्राप्त कर रही है। अनेक विश्वविद्यालय और अनुसंधान संस्थान भारत में और विदेशों में इस परंपरा को अध्ययन और शोध का विषय बना रहे हैं। भारत सरकार द्वारा 'भारतीय ज्ञान परंपरा' को नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।¹³

भारतीय ज्ञान प्रणाली अब पुनः आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान का हिस्सा बन रही है। नई शिक्षा नीति (NEP 2020) में भारतीय भाषाओं, संस्कृति, और योग को शिक्षा का हिस्सा बनाया गया। संयुक्त राष्ट्र द्वारा “अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस” की स्वीकृति एवं आयुर्वेद और आयुष चिकित्सा को WHO की मान्यता प्राप्त है।

साथ ही IKS के अध्ययन के लिए e-content, MOOCs और डिजिटल प्रॉपर्टी विकसित की जा रही हैं।¹⁴

प्रमुख चुनौतियाँ (Major Challenges)

- पारंपरिक ज्ञान का वैज्ञानिक प्रमाणन और दस्तावेजीकरण का अभाव।
- युवाओं में भारतीय विषयों के प्रति रूचि की कमी।
- पश्चिम शिक्षा मॉडल का वर्चस्व।
- नीति स्तर पर समन्वय की कमी।

संभावनाएँ और उपाय (Opportunities and Suggestions)

- IKS आधारित curriculum design को सभी शिक्षा स्तरों में लागू करना।
- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर “Indian Knowledge Diplomacy” को बढ़ावा देना।
- योग, आयुर्वेद, पर्यावरण, और दर्शन के क्षेत्र में बहु-विषयी अनुसंधान को प्रोत्साहन।
- AI, Sustainability, और Ethics जैसे आधुनिक विषयों में भारतीय दृष्टिकोण को समाहित करना।¹⁵

निष्कर्ष (Conclusion)

भारतीय ज्ञान प्रणाली आज भी अत्यंत प्रासंगिक है और तनाव प्रबंधन एवं स्थिरता जैसी समकालीन चुनौतियों के व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत करती है।

इसके विशाल ज्ञान भंडार में व्यक्तियों, समुदायों और मानव के उत्थान की मिसाल है। भारतीय ज्ञान परंपरा केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य का मार्गदर्शन करने वाली जीवंत शक्ति है। आवश्यक है तक हम इसे समझें, पुनर्परिभाषित करें और आधुनिक जीवन में समाहित करें। स्वदेशी विज्ञान आन्दोलन के माध्यम से आधुनिक विज्ञान को प्राचीन भारतीय ज्ञान से जोड़ने का अनवरत प्रयास है। यदि हम अपनी इस समृद्ध विरासत को पुनः आत्मसात कर सकें, तो भारत एक बार फिर विश्व गुरु बनने की दिशा में अग्रसर हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. शिक्षा मंत्रालय. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. भारत सरकार; 2020.
2. भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ (IKS) प्रभाग पोर्टल.
3. राधाकृष्णन एस. भारतीय दर्शन. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस; 1948.
4. शर्मा आर. भारतीय ज्ञान परंपरा और आधुनिक शिक्षा. नई दिल्ली: भारतीय प्रकाशन; 2022.
5. सुब्बारायप्पा बी.वी. भारत में विज्ञान: अतीत और वर्तमान; 2019.
6. विवेकानंद एस. स्वामी विवेकानंद के संपूर्ण कार्य. खंड 3.
7. UNESCO. योग: मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत; 2022.
8. पांडे वी. भारतीय दर्शन के मूल तत्व. बेंगलुरु: CVG प्रकाशन; 2017.
9. वरखेड़ी एस. NEP 2020 के माध्यम से भारतीय शिक्षा में IKS और ILs का एकीकरण. केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली.
10. अवस्थी ए. आयुर्वेद और वैश्वीकरण: समकालीन स्वास्थ्य सेवा पर आयुर्वेद के प्रभाव की पड़ताल. Int J Ayurveda Integr Med. 2019;4(3):12-8.
11. मिश्रा वी, राय ए. योग का दर्शन: वैश्विक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए निहितार्थ. Glob Health J. 2021;11(1):44-56.
12. गुप्ता वी, शर्मा एम. पश्चिम में योग: एक भारतीय प्रथा का वैश्वीकरण. J Cult Herit. 2019;13(1):34-46. 13. जुबेर एफ, सिंह के. एक वैश्वीकृत दुनिया में नैतिक निर्णय लेने में भारतीय दार्शनिक योगदान. Ethics Philos. 2020;22(2):79-91.
14. खान एम, भट आर. आधुनिक अनुसंधान में प्राचीन भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी की प्रासंगिकता. J Indian Sci. 2018;41(4):142-53.
15. परिहार एस, चौहान पी. Int J Enhanc Res Educ Dev. 2024;12(1).

प्राचीन ज्ञान से लेकर आधुनिक नवाचार तक: आत्मनिर्भर भारत के लिए भारतीय ज्ञान परम्पराओं का लाभ

डॉ० संध्या कुमारी

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग, बी.आर.बी. कॉलेज, समस्तीपुर

सारांश

इस शोध पत्र का उद्देश्य आत्मनिर्भर भारत के प्रयासों को गति देने के लिए पारंपरिक भारतीय ज्ञान और आधुनिक नवाचार के बीच रचनात्मक सहयोग को समझना है। आयुर्वेद, कृषि, वास्तुकला और शासन विज्ञान के हजारों वर्षों के ज्ञान का उपयोग करते हुए, यह कार्य दर्शाता है कि भारत आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा में परिकल्पित भविष्य के लिए अपने स्वयं के स्थायी समाधान कैसे विकसित कर सकता है। इसी भावना से प्रेरित होकर, बहु-विषयक परिप्रेक्ष्य अपनाते हुए, यह पत्र इस बात की पड़ताल करता है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली (आईकेएस) का पुनरुत्थान आर्थिक विकास को गति प्रदान कर सकता है, लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) का समर्थन कर सकता है और स्थानीय समुदायों के विकास को बढ़ावा दे सकता है। इसके अतिरिक्त, यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रतिमानों के अनुप्रयोगों का मूल्यांकन करता है, विशेष रूप से सतत विकास, स्वास्थ्य और कृषि विविधीकरण के संबंध में।

मूल शब्द: आत्मनिर्भर भारत, पारंपरिक भारतीय ज्ञान, आधुनिक नवाचार, रचनात्मक सहयोग, आयुर्वेद, कृषि, वास्तुकला, शासन विज्ञान

प्रस्तावना

2020 में शुरू किया गया आत्मनिर्भर भारत अभियान, घरेलू उत्पादन, स्वदेशी विशेषज्ञता को बढ़ावा देने और आयात को सीमित करने के लिए बनाया गया एक कार्यक्रम है। ऐतिहासिक रूप से और अतीत में भी, भारत के भारतीय ज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी (आईसीएस) ने भारतीय सभ्यता के सतत, आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक पहलुओं के विकास का मार्गदर्शन किया है। ये आयुर्वेद, योग, वैदिक गणित जैसे विषयों में पाई जाने वाली तकनीकी प्रणालियाँ हैं, जो भारतीय सभ्यता के कुछ पहलुओं का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं और समकालीन समस्याओं के सतत समाधान प्रदान करती हैं।¹

इस शोधपत्र का उद्देश्य भारतीय ऐतिहासिक ज्ञान को वर्तमान नवाचार से जोड़ना और यह पता लगाना है कि भारत का ज्ञान किस प्रकार भारत की आत्मनिर्भरता में योगदान देता है। इस उद्देश्य के लिए, अध्ययन व्यापार और शिक्षा के क्षेत्र में केस स्टडी पर केंद्रित है, क्योंकि ये प्रमुख क्षेत्र हैं जिनमें भारतीय ज्ञान और प्रौद्योगिकी (आईकेएस) का उपयोग करके बहुत कुछ किया जा सकता है।

आईकेएस का ऐतिहासिक महत्व

प्राचीन भारतीय ग्रंथों जैसे अर्थशास्त्र और मनुस्मृति का सामुदायिक अर्थव्यवस्थाओं को आकार देने और समग्र कल्याण को बढ़ावा देने में महत्व ऐतिहासिक अध्ययनों में अच्छी तरह से दर्ज है। कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र, राज्य-प्रशासन, आर्थिक रणनीतियों और शासन पर एक मूलभूत ग्रंथ है, जो समृद्धि, नैतिक आर्थिक प्रथाओं और कुशल शासन को बढ़ावा देने के लिए शासक के कर्तव्य पर जोर देता है। इस ग्रंथ में संसाधन प्रबंधन, कराधान, कृषि और रक्षा पर मार्गदर्शन शामिल है, जो आत्मनिर्भर और समृद्ध समुदायों के निर्माण के लिए एक आदर्श प्रदान करता है। इसके विपरीत, मनुस्मृति सामाजिक और नैतिक कानूनों को संबोधित करती है जिनका उद्देश्य समाज में सामंजस्य बनाए रखना है, इस प्रकार यह सामुदायिक संरचना के भीतर व्यक्तिगत कर्तव्यों और नैतिक सिद्धांतों पर ध्यान केंद्रित करके अर्थशास्त्र के अधिक नीति-उन्मुख निर्देशों का पूरक है।²

ये ग्रंथ सामूहिक रूप से धन सृजन (अर्थ) और सामाजिक उत्तरदायित्व (धर्म) के प्रति प्राचीन भारतीय चिंतन के संतुलित दृष्टिकोण को उजागर करते हैं, जिससे पता चलता है कि टिकाऊ आर्थिक प्रणालियाँ नैतिक शासन और प्राकृतिक संसाधनों के सम्मान पर आधारित हैं। ऐसे ढाँचे न केवल प्रशासन के बारे में थे, बल्कि एक ऐसी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के बारे में भी थे जो समुदायों का स्थायी रूप से समर्थन और उत्थान कर सके, और श्रम संघों और नैतिक धन वितरण जैसी प्रथाओं को प्रोत्साहित कर सके, जैसा कि इन ग्रंथों और भारतीय दर्शन के भीतर अन्य प्राचीन आर्थिक चर्चाओं में देखा गया है।

आईकेएस और आधुनिक स्थिरता

कई शोध अध्ययनों ने आधुनिक सततता सिद्धांतों के साथ आईकेएस की अनुकूलता पर प्रकाश डाला है। पारंपरिक भारतीय कृषि जैविक विधियों और जैव विविधता पर जोर देती है, ये दोनों ही आधुनिक कृषि में टिकाऊ प्रथाओं के अनुरूप हैं (कुमार और राव, 2019)।

लघु एवं मध्यम उद्यम और आत्मनिर्भरता

भारत की अर्थव्यवस्था की रीढ़ MSMEs हैं, जो GDP में 30% से अधिक का योगदान देती हैं। शोध से पता चला है कि व्यावसायिक प्रक्रियाओं में IKS को एकीकृत करना—जैसे कि उत्पाद विकास और टिकाऊ सोर्सिंग में आयुर्वेदिक सिद्धांतों का उपयोग करना—डैम् को एक अद्वितीय प्रतिस्पर्धी लाभ प्रदान कर सकता है (नायर और रमेश, 2021)।

प्रौद्योगिकी और पारंपरिक ज्ञान

अध्ययनों से पता चलता है कि पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल बिठाने की क्षमता है, विशेष रूप से स्वास्थ्य सेवा और कृषि जैसे क्षेत्रों में, जहां डेटा-संचालित दृष्टिकोण पारंपरिक प्रथाओं को बढ़ा सकते हैं (मित्रा, 2022)।

सतत आर्थिक विकास के लिए उत्प्रेरक के रूप में भारतीय ज्ञान प्रणाली

शोध से पता चला है कि आयुर्वेद, कृषि, वस्त्र और हस्तशिल्प जैसे क्षेत्रों में पारंपरिक भारतीय ज्ञान, मानक प्रथाओं के टिकाऊ विकल्प प्रदान करता है। भारतीय ज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यापार (आई केएस) प्रथाओं को अपनाने वाले लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) अंतरराष्ट्रीय बाजारों में उच्च मूल्य वाले उत्कृष्ट उत्पाद बनाने में सक्षम रहे हैं, जिससे अधिक लचीलापन और आर्थिक स्थिरता को बढ़ावा मिला है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद आधारित स्वास्थ्य उत्पाद, जैविक कृषि और पारंपरिक हथकरघा शिल्प जैसे क्षेत्रों को पुनर्जीवित करने से रोजगार सृजित हुए हैं, आय में वृद्धि हुई है और स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं को मजबूती मिली है, जो आत्मनिर्भर भारत अभियान के लक्ष्यों में सीधे तौर पर योगदान दे रहे हैं।³

एकीकृत अंतरराष्ट्रीय ज्ञान और प्रौद्योगिकी (आईकेएस) के साथ एमएसएमई चालक के रूप में

MSME क्षेत्र को IKS के व्यावहारिक उपयोग के लिए एक महत्वपूर्ण मंच के रूप में पहचाना गया है, जो पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक उद्यम की आवश्यकताओं से जोड़ता है। स्वदेशी ज्ञान और कौशल को अपनाने वाले MSME ने उच्च ग्राहक निष्ठा, अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा के प्रति लचीलापन और बेहतर निर्यात क्षमता स्थापित की है। इसके अलावा, यह भी देखा गया है कि प्रमाणन, उच्च गुणवत्ता की गारंटी और प्लै पर आधारित टिकाऊ उत्पादन प्रक्रियाओं के समर्थन से MSME वैश्विक बाजारों से बेहतर ढंग से जुड़ने में सक्षम हैं। वाराणसी हथकरघा और त्रिपुरा बांस शिल्प के पुनरुद्धार सहित केस स्टडीज ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि डैडम् किस प्रकार सांस्कृतिक राजदूत के रूप में कार्य कर सकते हैं, जो स्वाभाविक रूप से अद्वितीय और टिकाऊ उत्पाद प्रदान करते हैं।⁴

शिक्षा और कौशल विकास, आईकेएस एकीकरण के प्रवर्तक के रूप में

शोध से पता चला कि पारंपरिक ज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी (आई केएस) को औपचारिक प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षा में शामिल करने से युवा पीढ़ी को आधुनिक परिस्थितियों के अनुकूल पारंपरिक कौशल से लैस करने में मदद मिल सकती है। आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक कृषि और पारंपरिक शिल्पकला जैसी पारंपरिक पद्धतियों में शिक्षा प्रदान करने वाले शिक्षण संस्थानों ने छात्रों को इन क्षेत्रों में व्यावहारिक करियर के रास्ते देखने में मदद की। इसके अलावा, आयुर्वेद प्रशिक्षण अनुप्रयोगों

में देखे जाने वाले आई केएस को आधुनिक चिकित्सा तकनीकों के साथ मिलाने से स्नातकों को पारंपरिक क्षेत्रों में नवाचार करने और आत्मनिर्भर, स्वदेशी उद्योगों में योगदान देने का अवसर मिला।⁵

स्थिरता और पर्यावरणीय प्रभाव

कृषि और पारंपरिक शिल्पकला में आईकेएस पद्धतियाँ स्वाभाविक रूप से टिकाऊ होती हैं, क्योंकि ये स्थानीय संसाधनों, न्यूनतम बाहरी इनपुट और विधियों पर निर्भर करती हैं। अध्ययन में पाया गया कि इन पद्धतियों को लागू करने से पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है और कृत्रिम पदार्थों और रसायनों पर निर्भरता कम होती है। सिक्किम का प्राकृतिक अवस्था में परिवर्तन और पारंपरिक कृषि पद्धतियों का उपयोग, इस बात का उदाहरण है कि आईकेएस किस प्रकार पर्यावरणीय स्थिरता में योगदान दे सकता है, जिससे मृदा स्वास्थ्य, जैव विविधता और पर्यावरण की सहनशीलता में सुधार होता है।⁶

ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं का पुनरुद्धार

अध्ययनों से यह बात सामने आई है कि स्वदेशी ज्ञान, प्रौद्योगिकी और प्रौद्योगिकी (आई केएस) को एकीकृत करने से स्वदेशी प्रथाओं पर आधारित आजीविका के अवसर विकसित करके ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं को पुनर्जीवित किया गया है। ग्रामीण क्षेत्रों में वे लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसएमई) जिन्होंने पारंपरिक सूचना संरचनाओं का उपयोग किया, उन्होंने बेहतर आर्थिक स्थिरता और बेहतर सामुदायिक कल्याण का अनुभव किया। स्थानीय रोजगार सृजन और ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देकर, एमएसएमई में आई केएस के अनुप्रयोग ने शहरी केंद्रों की ओर पलायन को कम किया है, जिससे आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों के अनुरूप आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं के निर्माण में मदद मिली है।⁷

वैश्विक बाजार में आकर्षण और निर्यात क्षमता

आयुर्वेद, प्राकृतिक भोजन, वस्त्र और हस्तशिल्प पर आधारित सेवाओं और उत्पादों का अंतरराष्ट्रीय बाजारों में, पर्यावरण के प्रति जागरूक और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील ग्राहकों के बीच गहरा आकर्षण है। भारतीय लघु एवं मध्यम उद्यम (एमएसके) जो आईकेएस का लाभ उठा रहे हैं, उन्हें अंतरराष्ट्रीय बाजारों में प्रतिस्पर्धात्मक लाभ प्राप्त है क्योंकि इन उत्पादों को उचित, टिकाऊ और सांस्कृतिक रूप से समृद्ध माना जाता है। अध्ययनों से पता चला है कि इन एमएसएमई की निर्यात क्षमता बढ़ाने के लिए प्रमाणन, ब्रांडिंग और बाजार तक पहुंच में सरकारी सहायता आवश्यक है।

नीतिगत समर्थन और बुनियादी ढांचा सफलता के महत्वपूर्ण कारक हैं

अध्ययन में पाया गया कि लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई) और अन्य क्षेत्रों में आयुर्वेद और ज्ञान (आई केएस) के सफल कार्यान्वयन में सरकारी नीतियां और पहले महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। आत्मनिर्भर भारत के अंतर्गत चलाए जा रहे कार्यक्रम, जैसे कि आयुष मंत्रालय द्वारा आयुर्वेद आधारित एमएसएमई को दिया जाने वाला समर्थन, ने महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचा, वित्त पोषण और मार्गदर्शन प्रदान किया है। हालांकि, चुनौतियां अभी भी बनी हुई हैं, जिनमें ऋण तक बेहतर पहुंच, आई केएस के अनुरूप कौशल विकास कार्यक्रम और अंतरराष्ट्रीय बाजारों के लिए गुणवत्ता सुनिश्चित करने हेतु प्रमाणन निकायों की स्थापना शामिल हैं।⁸

भारतीय ज्ञान प्रणालियों को मुख्यधारा के विकास कार्यक्रमों में एकीकृत करने हेतु नीतिगत सुझाव

- लघु एवं मध्यम उद्यमों और उद्यमियों के लिए दृढ़ आईकेएस संसाधन केंद्र स्थापित करें।
- आईकेएस आधारित शिक्षा और व्यावसायिक प्रशिक्षण को मजबूत करें।
- आईकेएस आधारित उत्पादों के लिए प्रमाणन और गुणवत्ता आश्वासन कार्यक्रम।
- आईकेएस द्वारा संचालित एमएसएमई के लिए वित्तीय सहायता और कर प्रोत्साहन।
- आईकेएस आधारित एमएसएमई के लिए डिजिटल अवसंरचना को बढ़ावा देना।
- आईकेएस आधारित पर्यटन पहलों को बढ़ावा देना।
- ज्ञान संरक्षण और डिजिटल प्रलेखन संबंधी पहल स्थापित करें।
- आईकेएस की विश्वसनीयता और बाजार पहुंच बढ़ाने के लिए वैश्विक साझेदारी को बढ़ावा देना।

निष्कर्ष

ये केस स्टडी दर्शाती है कि सतत विकास को बढ़ावा देने, सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने और बाजार प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाने के लिए लघु एवं मध्यम उद्यमों में भारतीय ज्ञान प्रणालियों को प्रभावी ढंग से कैसे लागू किया जा सकता है। पारंपरिक प्रथाओं को आधुनिक नवाचार के साथ मिलाकर, ये पहलें आत्मनिर्भर भारत के लक्ष्यों का उदाहरण प्रस्तुत करती हैं, आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देती हैं और वैश्विक स्तर पर स्वदेशी ज्ञान को प्रोत्साहित करती हैं।

इस शोध के निष्कर्ष इस बात की पुष्टि करते हैं कि भारतीय ज्ञान प्रणालियों को जब आधुनिक लघु एवं मध्यम उद्यमों (एमएसएमई), शिक्षा और नीतिगत ढाँचों में प्रभावी ढंग से एकीकृत किया जाता है, तो वे आत्मनिर्भर भारत की परिकल्पना के अनुरूप सतत विकास, आर्थिक मजबूती और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा दे सकती हैं। भारत के पारंपरिक ज्ञान के विशाल भंडार का उपयोग करके और उसे समकालीन आवश्यकताओं के अनुरूप ढालकर, देश अपनी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखते हुए अपनी वैश्विक प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ा सकता है।

सन्दर्भ

1. रे डी. कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य।।।
2. भारतीय आर्थिक चिंतन: एक कम समझा और गलत समझा गया विरासत।।।
3. तनुश्री एस. उत्तर प्रदेश, भारत के वाराणसी के पारंपरिक हथकरघा बुनकरों की वर्तमान स्थिति का अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय अनुसंधान जर्नल ऑफ सोशल साइंस। 2015;4(3):48-53.
4. जोसेफ एस, अय्यर डी, पिल्लई आर. केरल, भारत में कोविड-19 महामारी के प्रति आयुर्वेदिक प्रतिक्रिया और संगरोधित व्यक्तियों पर इसका प्रभाव - एक सामुदायिक केस स्टडी। पब्लिक हेल्थ। 2021;9.
5. त्रिपुरा बांस मिशन केस स्टडी: बांस हस्तशिल्प।।।
6. भारत में बांस का उपयोग करने वाले कारीगरों के लिए एक स्थायी भविष्य का निर्माण।।।
7. हेगड़े एम, रामैया एम. केस स्टडी: वाराणसी में पारंपरिक हथकरघा और हस्तशिल्प का पुनरुद्धार। रीसेंट ट्रेंड्स टेक्सटाइल फैशन। 2024.
8. सिक्किम की जैविक खेती की क्रांति: सतत कृषि के लिए एक आदर्श।।।

पुरातन में निहित नवीनता: भारतीय ज्ञान परंपरा का सामाजिक और शैक्षिक योगदान

यशी सिंह

शोधार्थी, जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा

सारांश

भारतीय ज्ञान वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, लोककथाओं और पारंपरिक प्रथाओं से समृद्ध है, जो शासन, नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक संरचना और आध्यात्मिक ज्ञान सहित विभिन्न विषयों को समाहित करती है। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि इनमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र और दर्शन के गहरे बीज भी निहित हैं। महाभारत, रामायण, मनुस्मृति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, चरक और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथों ने राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थव्यवस्था और चिकित्सा विज्ञान में अद्वितीय योगदान दिया। इन ग्रंथों में पुरातन में ही नवीनता निहित है। भारत की सामाजिक संरचना ख्र वर्ण, आश्रम, जाति, परिवार, ग्राम व्यवस्था, धर्म और कर्तव्य जैसे सिद्धांत ख्र सभी भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित थे और समाज के संतुलन एवं संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वर्तमान युग में जब मानव सभ्यता तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण की ओर तीव्र गति से अग्रसर है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा कई प्रकार की चुनौतियों से जूझ रही है। जिसका समाधान शिक्षा में समावेश, अनुवाद और डिजिटलीकरण, स्थानीय भाषाओं का प्रोत्साहन, आध्यात्मिक पुनर्जागरण सांस्कृतिक चेतना का विकास किया जा सकता है।

मूल शब्द: भारतीय ज्ञान परंपरा, समाजशास्त्रीय मूल्यांकन, सामाजिक उत्तरदायित्व, उपभोक्तावाद, वैश्वीकरण, परंपराएँ पर्यावरण चेतना, वैश्विक प्रभाव, समकालीन शिक्षा

प्रस्तावना

भारतीय ज्ञान प्रणाली (BKS) सदियों से भारत की सांस्कृतिक, दार्शनिक और बौद्धिक परंपराओं की आधारशिला रही है। यह प्रणाली वेदों, उपनिषदों, स्मृतियों, लोककथाओं और पारंपरिक प्रथाओं से समृद्ध है, जो शासन, नैतिकता, पर्यावरण संरक्षण, सामाजिक संरचना और आध्यात्मिक ज्ञान सहित विभिन्न विषयों को समाहित करती है। इन ज्ञान प्रणालियों ने भारत की पहचान को आकार दिया है और विविधता में एकता की अवधारणा को सशक्त किया है।¹

आधुनिक युग में, वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों ने पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों के सामने नई चुनौतियाँ प्रस्तुत की हैं। आज के संदर्भ में भारतीय ज्ञान परंपरा की प्रासंगिकता शासन, शिक्षा, सतत विकास और सामाजिक समरसता जैसे क्षेत्रों में विशेष अध्ययन और विश्लेषण का विषय बनी हुई है। यह शोध पत्र प्राचीन भारतीय ज्ञान परंपराओं के उन मूलभूत सिद्धांतों की पड़ताल करता है, जो आधुनिक समस्याओं का समाधान प्रस्तुत कर सकते हैं और बदलते युग की आवश्यकताओं के अनुरूप स्वयं को ढाल सकते हैं।²

भारतीय ज्ञान परंपरा का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें वैदिक काल से भी पहले की हैं। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद न केवल धार्मिक ग्रंथ हैं, बल्कि इनमें विज्ञान, गणित, चिकित्सा, खगोलशास्त्र और दर्शन के गहरे बीज भी निहित हैं। इन ग्रंथों में वर्णित ऋचाएँ केवल आध्यात्मिक नहीं थीं, बल्कि जीवन के व्यावहारिक पहलुओं का भी निर्देशन करती थीं।³

उपनिषदों और दर्शनों (षड्दर्शन ख्र सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदांत) ने ज्ञान की जिज्ञासा को तर्क और अनुभव के माध्यम से विस्तार दिया। महाभारत, रामायण, मनुस्मृति, कौटिल्य का अर्थशास्त्र, चरक और सुश्रुत संहिता जैसे ग्रंथों ने राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थव्यवस्था और चिकित्सा विज्ञान में अद्वितीय योगदान दिया।⁴

इसके अतिरिक्त, भारत की बौद्ध, जैन और अन्य दर्शनों की परंपराएँ भी ज्ञान की विविधता और बहुलता को दर्शाती हैं। तक्षशिला, नालंदा और विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में देश-विदेश के छात्र अध्ययन के लिए आते थे। यह परंपरा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं थी, बल्कि जीवन शैली, कृषि, जल प्रबंधन, वास्तुकला और कला में भी समाहित थी।

ब्रिटिश उपनिवेश काल में इन परंपराओं को व्यवस्थित रूप से कमजोर किया गया, जिससे पाश्चात्य ज्ञान प्रणाली को प्राथमिकता मिली और भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ हाशिए पर चली गईं। परंतु आज फिर से इन मूल्यों और विचारों को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, ताकि हम अपने अतीत से प्रेरणा लेकर भविष्य का मार्ग प्रशस्त कर सकें।⁵

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

भारतीय ज्ञान परंपरा का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन करते समय यह समझना आवश्यक है कि यह परंपरा केवल बौद्धिक अभ्यास नहीं थी, बल्कि समाज के संगठन और संचालन का भी आधार थी। भारत की सामाजिक संरचना ख्र वर्ण, आश्रम, जाति, परिवार, ग्राम व्यवस्था, धर्म और कर्तव्य जैसे सिद्धांत – सभी भारतीय ज्ञान प्रणालियों में निहित थे और समाज के संतुलन एवं संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।⁶

वर्णाश्रम धर्म ने जीवन के विभिन्न चरणों और भूमिकाओं को स्पष्ट किया ख्र ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास। इन आश्रमों ने न केवल व्यक्तिगत जीवन को अनुशासित किया, बल्कि सामूहिक सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना भी उत्पन्न की। इसी प्रकार, वर्ण व्यवस्था का मूल उद्देश्य समाज में कार्य-विभाजन द्वारा दक्षता और सामंजस्य स्थापित करना था, हालाँकि कालांतर में इसका विकृत रूप जाति-आधारित भेदभाव के रूप में सामने आया।

सामाजिक समरसता, पारिवारिक मूल्य, सह-अस्तित्व और सहिष्णुता जैसे सिद्धांत भारतीय समाज की नींव रहे हैं। ऋग्वैदिक सूत्र 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' जैसे विचार भारत की सामाजिक सोच को दर्शाते हैं।

नारी की भूमिका भी भारतीय ज्ञान परंपरा में महत्वपूर्ण रही है। गार्गी, मैत्रेयी, अपाला जैसी स्त्रियाँ ज्ञान और दर्शन में पुरुषों के समकक्ष मानी गईं। समाज में महिलाओं की भागीदारी और सम्मान ज्ञान परंपरा की समावेशिता का प्रमाण है।⁷

वर्तमान समाजशास्त्रीय संदर्भ में, इन परंपराओं का पुनर्मूल्यांकन करके हम सामाजिक समरसता, नैतिकता और सामुदायिक विकास को नई दिशा दे सकते हैं। भारतीय ज्ञान परंपरा का समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य की संभावनाओं का भी संकेतक है।

आधुनिक चुनौतियाँ और समाधान

वर्तमान युग में जब मानव सभ्यता तकनीकी प्रगति, उपभोक्तावाद और वैश्वीकरण की ओर तीव्र गति से अग्रसर है, तब भारतीय ज्ञान परंपरा कई प्रकार की चुनौतियों से जूझ रही है। शिक्षा प्रणाली में पाश्चात्य मॉडल का वर्चस्व, पारंपरिक भाषाओं और लिपियों की उपेक्षा, सामाजिक विषमता, नैतिक मूल्यों में गिरावट और प्रकृति से दूर होती जीवनशैली जैसे अनेक संकट आज सामने हैं।⁸

चुनौतियाँ:

- शैक्षिक उपेक्षा: भारतीय ज्ञान परंपरा को आधुनिक शिक्षा व्यवस्था में समुचित स्थान नहीं मिला है। गुरुकुल, योग, वेद, आयुर्वेद, लोकज्ञान जैसे विषय या तो पाठ्यक्रम से बाहर हैं या केवल औपचारिकता तक सीमित हैं।
- भाषाई संकट: संस्कृत, पाली, प्राकृत जैसी भाषाओं में रचित ग्रंथों को समझने में युवाओं की रुचि और क्षमता दोनों में गिरावट आई है, जिससे ज्ञान की मूल व्याख्याएँ लुप्त हो रही हैं।
- आधुनिकता बनाम पारंपरिकता: आधुनिक जीवनशैली ने भारतीय जीवनमूल्यों – जैसे संयम, संतुलन, कर्तव्यनिष्ठा और सह-अस्तित्व – को पीछे छोड़ दिया है।
- वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विस्मृति: पश्चिमी प्रभाव के कारण भारतीय युवाओं में अपनी जड़ों से जुड़ाव कम होता जा रहा है, जिससे सांस्कृतिक आत्मगौरव में कमी देखी जा रही है।

समाधान:

1. शिक्षा में समावेश: नई शिक्षा नीति (NEP 2020) के माध्यम से भारतीय ज्ञान प्रणालियों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने की पहल की जा रही है। गुरुकुल मॉडल, योग, आयुर्वेद, नीतिशास्त्र और लोककला जैसे विषयों को प्रमुखता दी जानी चाहिए।⁹
2. अनुवाद और डिजिटलीकरण: प्राचीन ग्रंथों के अनुवाद, डिजिटलीकरण और सरल व्याख्या से उन्हें आम जनमानस तक पहुँचाया जा सकता है।
3. स्थानीय भाषाओं का प्रोत्साहन: शिक्षा और शोध में मातृभाषा एवं भारतीय भाषाओं के प्रयोग से सांस्कृतिक और ज्ञानात्मक जड़ों को पुनर्जीवित किया जा सकता है।
4. आध्यात्मिक पुनर्जागरण: ध्यान, योग, आत्म-अनुशासन जैसे जीवनमूल्यों को पुनः समाज में स्थापित कर व्यक्ति को मानसिक, शारीरिक और सामाजिक संतुलन की ओर ले जाया जा सकता है।
5. सांस्कृतिक चेतना का विकास: मीडिया, साहित्य, सिनेमा और जन-संवाद के माध्यम से भारतीय गौरव और परंपराओं के प्रति जागरूकता लाई जा सकती है।

भारतीय ज्ञान परंपरा और पर्यावरण चेतना

भारतीय ज्ञान परंपरा में प्रकृति को केवल संसाधन नहीं, अपितु माता के रूप में देखा गया है। 'पृथ्वी माता', 'नदी देवी', 'वन देवता' और 'गौ माता' जैसे विचार भारतीय सांस्कृतिक चेतना के मूल में हैं। यह दृष्टिकोण केवल आध्यात्मिक नहीं बल्कि गहरी पारिस्थितिक समझ का परिचायक है।

वेदों और उपनिषदों में 'ऋत' (संतुलन) की अवधारणा है, जो ब्रह्मांड की प्राकृतिक लय को दर्शाती है। मनुष्य का कर्तव्य है कि वह इस ऋत के अनुसार जीवन जिए - न अधिक उपभोग करे, न शोषण। यही विचार आज की स्थायी विकास (Sustainable Development) अवधारणा से मेल खाता है।¹⁰

भारतीय कृषि परंपराएँ जैसे पंचमहाभूतों (भूमि, जल, अग्नि, वायु, आकाश) के संतुलन पर आधारित खेती, जैविक खादों का प्रयोग, जल संचयन, और पशुपालन, पर्यावरण के साथ सह-अस्तित्व की भावना को दर्शाते हैं।

पुराणों और स्मृतियों में वृक्षों की पूजा खर पीपल, वट, तुलसी खर इस बात का प्रमाण है कि हमारे पूर्वजों ने जैव विविधता की रक्षा को सांस्कृतिक जीवन में पिरो दिया था। गोवर्धन पूजा, नर्मदा परिक्रमा, या गंगा स्नान जैसे अनुष्ठान प्राकृतिक संरक्षण के प्रतीक हैं।¹¹

भारतीय ज्ञान परंपरा का वैश्विक प्रभाव

भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें जितनी गहरी हैं, उसका वैश्विक प्रभाव उतना ही व्यापक है। प्राचीन भारत न केवल ज्ञान का स्रोत रहा है, बल्कि इस ज्ञान का प्रसार विश्व के कोने-कोने तक हुआ।

योग और ध्यान आज दुनिया भर में मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अपनाए जा रहे हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित किया जाना इसका प्रमाण है। ध्यान की पद्धतियाँ-जैसे विपश्यना, प्रणायाम और ध्यानयोग-मूलतः भारतीय दर्शन की देन हैं, जो अब अमेरिका से लेकर जापान तक मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रमों में अपनाई जा रही हैं।¹²

गणित और खगोल विज्ञान में भारत का योगदान अभूतपूर्व रहा है। शून्य की खोज, दशमलव पद्धति, बीजगणित (algebra) और त्रिकोणमिति (trigonometry) की नींव भारत में ही रखी गई। आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, और भास्कराचार्य जैसे विद्वानों के ग्रंथों ने यूरोप की वैज्ञानिक क्रांति को दिशा दी।¹³

आयुर्वेद, जो जीवन को शरीर, मन और आत्मा की एकता मानता है, आज 'Alternative Medicine' के रूप में अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया में लोकप्रिय हो रहा है। आयुर्वेदिक औषधियों और जीवनशैली को कई देशों की स्वास्थ्य नीतियों में स्थान मिल रहा है।¹⁴

बौद्ध और जैन दर्शन ने अहिंसा, करुणा और आत्मानुशासन की जो शिक्षा दी, वह चीन, जापान, श्रीलंका, थाईलैंड जैसे देशों में न केवल धार्मिक दृष्टि से, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी गहराई तक समाई है।

यह स्पष्ट है कि भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ें सीमाओं से परे जाकर मानवता की सेवा कर रही हैं। आधुनिक युग में 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को पुनः जीवित करने के लिए यह वैश्विक प्रभाव अत्यंत प्रेरणादायी है।¹⁵

भारतीय ज्ञान परंपरा और समकालीन शिक्षा

यह परंपरा विद्यार्थी को 'मनुष्य' बनाने पर केंद्रित थी - ऐसा मनुष्य जो केवल बुद्धिमान नहीं बल्कि धार्मिक, नैतिक, संतुलित और सह-अस्तित्व में विश्वास रखने वाला हो।

गुरुकुल प्रणाली: शिक्षा और संस्कार का संगम

गुरुकुल प्रणाली में शिक्षा केवल पाठ्यवस्तु तक सीमित नहीं थी। वहां शिष्य आश्रम में सेवा करते हुए स्वयं-नियंत्रण, अनुशासन, संयम, श्रम और आत्मशुद्धि जैसे गुणों को आत्मसात करता था। जीवन और शिक्षा के बीच की दूरी नहीं थी, बल्कि शिक्षा स्वयं जीवन का अभ्यास थी। 'सा विद्या या विमुक्तये' - अर्थात् जो ज्ञान मुक्ति की ओर ले जाए - यह दर्शन उस शिक्षा में अंतर्निहित था।¹⁶

विषय और दृष्टिकोण की व्यापकता

भारतीय परंपरा में शिक्षा बहुआयामी थी खर इसमें गणित, ज्योतिष, खगोलशास्त्र, चिकित्सा, संगीत, नाट्य, शिल्प, कृषि, पशुपालन, राज्यशास्त्र और दर्शन जैसे विषयों को समावेश किया जाता था। इसके साथ ही नैतिकता (धर्म), सामाजिक व्यवस्था (पुरुषार्थ), और आत्म-ज्ञान को भी शिक्षा का अंग माना जाता था।

समकालीन शिक्षा प्रणाली की चुनौतियाँ

आज की शिक्षा व्यवस्था, विशेष रूप से औपनिवेशिक प्रभाव के कारण, एक सीमित और उपयोगितावादी ढांचे में बंध गई है। इसमें मूल्य-शिक्षा, जीवन कौशल, और आध्यात्मिक विवेक की स्पष्ट कमी है। विद्यार्थियों में बढ़ता तनाव, आत्महत्या की घटनाएँ, नैतिक भ्रष्टाचार - ये सब इस असंतुलन के लक्षण हैं।

NEP 2020 और भारतीय ज्ञान परंपरा का पुनर्स्थापन

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने इस दिशा में एक ठोस प्रयास किया है। इसमें भारतीय भाषाओं, संस्कृत, योग, आयुर्वेद, और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा के केंद्र में लाने का संकल्प है। साथ ही, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, भारतीय भाषाओं में उच्च शिक्षा, और प्रारंभिक शिक्षा में मातृभाषा के प्रयोग जैसे कदम पारंपरिक मूल्यों की पुनर्प्राप्ति का संकेत हैं।¹⁷

आवश्यकता है संतुलन की

भविष्य की शिक्षा प्रणाली को चाहिए कि वह आधुनिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के बीच संतुलन स्थापित करे। विज्ञान, तकनीक, और वैश्विक प्रतिस्पर्धा के साथ-साथ यदि आत्मज्ञान, सेवा, करुणा, और सह-अस्तित्व जैसे मूल्यों को केंद्र में रखा जाए, तो यह शिक्षा केवल 'रोजगारपरक' नहीं, बल्कि 'जीवनपरक' बन सकती है।¹⁸

निष्कर्ष

भारतीय ज्ञान परंपरा केवल एक प्राचीन धरोहर नहीं, बल्कि एक जीवंत, गतिशील और सार्वकालिक दर्शन है। इसकी विशेषता यह है कि यह मानव जीवन के सभी पहलुओं को समग्र दृष्टि से देखती है-शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक। चाहे वह योग और आयुर्वेद हो, दर्शन और गणित हो, या फिर भाषा, कला और जीवनशैली-यह परंपरा हर युग के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत प्रदान करती है।

समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखा जाए तो भारतीय ज्ञान परंपरा ने सामाजिक समरसता, सह-अस्तित्व और कर्तव्य के सिद्धांतों को केंद्र में रखा। आधुनिक समय की चुनौतियाँ-जैसे भौतिकतावाद, नैतिक क्षरण, मानसिक तनाव और पर्यावरण संकट-इन सबका समाधान इस परंपरा की मूल भावना में निहित है।

यह भी स्पष्ट है कि इस परंपरा का वैश्विक प्रभाव निरंतर बढ़ रहा है। आधुनिक शिक्षा प्रणाली में इसके पुनर्स्थापन के प्रयासखर्च शिक्षा नीति, संस्थागत प्रयोग, और पाठ्यक्रमों में समावेश-सकारात्मक दिशा में एक कदम हैं।

निष्कर्षतः यह सिद्ध होता है कि भारतीय ज्ञान परंपरा न केवल प्रासंगिक है, बल्कि वर्तमान और भविष्य की दिशा भी तय कर सकती है। आवश्यकता केवल इतनी है कि हम इस परंपरा को श्रद्धा के साथ पुनर्परिभाषित करें, उसे अपने जीवन और नीतियों में पुनः स्थान दें, और उसे केवल अतीत की स्मृति न मानकर वर्तमान की शक्ति और भविष्य की प्रेरणा मानें।

संदर्भ

1. भारतीय संस्कृति के मूल तत्व -हजारी प्रसाद द्विवेदी
2. वैदिक साहित्य और संस्कृति- डॉ. रामगोपाल
3. प्राचीन भारत में विज्ञान और प्रौद्योगिकी -डॉ. धर्मपाल
4. भारतीय शिक्षा का इतिहास -अल्लेकर, ए. एस.
5. योग: भारतीय चिंतन की देन- स्वामी कुवलयाणंद
6. आयुर्वेद का इतिहास -डॉ. प्रियव्रत शर्मा
7. नालंदा और विक्रमशिला: प्राचीन भारत के विश्वविद्यालय -डॉ. सुधाकर चतुर्वेदी
8. भारतीय गणित की गाथा- प्रो.ए.के. बाग
9. 'भारतीय दर्शन' (खंड 1 और 2) - एस. राधाकृष्णन
10. 'प्राचीन भारत में सटीक विज्ञान' - बी. दत्ता और ए. एन. सिंह
11. 'प्राचीन भारतीय शिक्षा: ब्राह्मणवादी और बौद्ध' - आर. के. मुखर्जी
12. 'भारतीय गणित का इतिहास' - सी. एन. श्रीनिवासीनगर
13. 'प्राचीन भारत में विज्ञान और समाज' - देबीप्रसाद चट्टोपाध्याय
14. 'प्राचीन हिंदुओं का सकारात्मक विज्ञान' - ब्रजेंद्रनाथ सील
15. 'योग: अमरता और स्वतंत्रता' - मिस्रिया एलियाडे
16. 'खोई हुई नदी: सरस्वती की राह पर' - मिशेल डैनिनो (वैदिक वैज्ञानिक विरासत को शामिल करता है)
17. 'राजनीतिक पाठ के रूप में अर्थशास्त्र' - रोजर बोशे
18. 'प्राचीन भारत में महिलाएँ' - ए. एस. अल्लेकर (शिक्षा में लैंगिक भूमिकाओं के लिए)

Indian Knowledge System: Insights for Ethical and Sustainable Modern Commerce

Apneet Tirkey

Assistant Professor, Department of Commerce, Govt. Naveen College,
Fasterpur, Mungeli, C.G.

Abstract

The Indian Knowledge System (IKS) represents a comprehensive body of traditional knowledge encompassing economics, ethics, and sustainability. This paper examines the relevance of IKS in modern commerce, drawing insights from classical texts such as the *Arthashastra* by Kautilya. It highlights ethical governance, sustainable trade practices, and community-oriented economic systems. The study concludes that integrating IKS into modern commerce promotes responsible, ethical, and sustainable business practices.

Keywords: Indian Knowledge System, Arthashastra, Sustainable Commerce, Business Ethics, CSR, ESG

1. Introduction

The evolution of commerce in India is deeply rooted in its traditional knowledge systems. The Indian Knowledge System (IKS) integrates economic activity with ethical, social, and environmental considerations, offering a balanced alternative to purely profit-driven models. In the context of globalization and rapid industrialization, revisiting these indigenous frameworks provides valuable insights into sustainable and ethical commerce.

2. Literature Review

Ancient texts like the *Arthashastra* provide foundational insights into governance, taxation, and trade. Modern studies on business ethics and sustainability reveal parallels between IKS principles and contemporary frameworks such as CSR and ESG (Environmental, Social, Governance).

However, limited studies provide a comparative and practical analysis of how Indian Knowledge System principles can be applied in modern business organizations, which this paper aims to address.

3. Commerce in Ancient India

Ancient India had a well-organized commercial system characterized by the following:

- Trade and Markets: Both internal and international trade flourished
- Guild System (Shreni): Organized groups of traders and artisans regulated business practices
- Barter and Currency Systems: Early forms of exchange evolved into structured monetary systems
- Regulation and Taxation: The state ensured fair trade practices and collected taxes efficiently

The ideas of Kautilya emphasized the role of governance in maintaining economic stability and ensuring public welfare.

4. Methodology

This research adopts a qualitative approach, analyzing:

- Classical Indian texts
- Secondary research papers
- Case studies of Indian businesses

5. Analysis and Discussion

Table 1: Comparison of Traditional IKS and Modern Commerce

Aspect	IKS Approach	Modern Commerce
Objective	Welfare & sustainability	Profit maximization
Ethics	Principles -based	Legal compliance
Production	Eco-friendly	Industrial
Market Regulation	State-controlled	Free-market

The comparison highlights that while modern commerce focuses on efficiency and profit, IKS emphasizes ethical responsibility and sustainability.

6. Case Studies

Case Study 1: Tata Group

- Strong focus on ethical governance and Corporate Social Responsibility (CSR)
- Aligns with IKS values such as fairness, trust, and social responsibility

Case Study 2: Amul

- Cooperative model reflects community-based commerce
- Supports rural economy and promotes self-reliance

Case Study 3: Infosys

- Strong emphasis on corporate governance, transparency, and ethical leadership
- Reflects IKS principles such as ethical duty, accountability, and long-term value creation

7. Challenges in Integration

Despite its relevance, integrating IKS into modern commerce faces several challenges:

- Lack of awareness
- Dominance of Western economic models
- Difficulty in adapting traditional concepts to global markets

8. Findings

- IKS principles strongly align with modern sustainability goals
- Ethical business practices rooted in *Values* enhance trust and credibility
- Traditional models support inclusive and equitable economic growth

9. Conclusion

Integrating IKS principles into contemporary business practices fosters sustainability, ethical governance, and long-term economic stability. The integration of the Indian Knowledge System (IKS) into modern commerce creates opportunities for ethical, sustainable, and inclusive economic growth. The insights from the *Arthashastra* remain highly relevant in guiding businesses to balance profit with social responsibility.

References

- Ahmed, M. (2025). Integrating Indian knowledge system into commerce and management. *Journal of Advance and Future Research (JAAFR)*, 3(4), 147–152.
- Maheshwari, K. A. (2025). Integrating Indian knowledge systems into ethical entrepreneurship: Analyzing emerging trends and their influence on modern business and commerce. *Journal of Advance and Future Research (JAAFR)*, 3(4).
- Indian knowledge system and commerce. (2024). *International Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR)*, 11(3), j476–j478.
- Indian knowledge system and commerce. (2024). *All Commerce Journal*, 6(1), 236–636.
- Tatake, V. (2025). Business model based on Indian knowledge system. *ANVESHAK – International Journal of Management*.
- Singha Roy, S. (2018). Kautilya's Arthashastra and modern economics. *SSRN Electronic Journal*. <https://doi.org/10.2139/ssrn.3132202>
- Pendse, C. (2025). Evolution of commerce in Indian knowledge system. *Accent Journal of Economics, Ecology & Engineering*, 10(2), 252–255.
- Kumar, S. (2024). Indian knowledge system and business: A historical perspective. *Anusandhanvallari*

Significance of Indian Traditional Knowledge in Wildlife Conservation and Sustainable Development

Dr. Rakesh Soni

Asstt. Prof., Dept. of Life Science, Dr. C.V. Raman University Kota, Bilaspur (C.G.)

Ms. Archana Patel

Asstt. Prof., Dept. of Zoology, Dr. B.S.P. Govt. PG College Pendra, GPM (C.G.)

Abstract

India, one of the world's 17 mega-biodiverse nations, harbors approximately 7-8% of the world's recorded species across its diverse ecosystems. For millennia, indigenous and local communities across the Indian subcontinent have developed sophisticated knowledge systems rooted in ancient texts such as the Vedas, Upanishads, and Arthashastra, as well as in oral traditions and cultural practices that embed ecological wisdom into daily life, spirituality, and resource management. This paper examines the significance of Indian Traditional Knowledge (ITK) in wildlife conservation and sustainable development.

Indian traditional knowledge systems promote a holistic worldview integrating human well-being with environmental stewardship. Practices such as the protection of sacred groves, community-managed forests, and totemic traditions where tribal communities venerate specific animal species as cultural symbols have served as de facto conservation mechanisms for centuries, safeguarding habitat and wildlife long before formal protected area networks existed. Tribal communities such as the Bishnois of Rajasthan, the Gonds and Baigas of central India, and the Irula of Tamil Nadu exemplify how indigenous custodianship sustains biodiversity while also supporting local livelihoods through non-timber forest products, traditional medicine, and sustainable harvesting.

Integrating these traditional knowledge systems with modern conservation science offers a promising pathway to sustainable development, particularly under frameworks such as the UN Sustainable Development Goals and the Convention on Biological Diversity. However, challenges persist: globalization, habitat fragmentation, and the erosion of intergenerational knowledge transfer threaten the continuity of these practices. There is an urgent need to document, validate, and mainstream Indian traditional ecological knowledge into national biodiversity policies and wildlife management plans.

This study underscores that bridging indigenous wisdom with contemporary ecological strategies is essential for achieving both wildlife conservation and equitable, sustainable development in India.

Keywords: Indian Traditional Knowledge, Wildlife Conservation, Biodiversity, Sustainable Development, Tribal Communities.

Introduction

India's rich biodiversity is intimately linked to its equally rich cultural diversity. Home to over 700 tribal groups constituting approximately 8.6% of the national population, the country possesses an enormous repository of indigenous knowledge that has shaped conservation practices since time immemorial. The Indian Knowledge System (IKS) rooted in ancient scriptures such as the Vedas, Upanishads, and Arthashastra promotes a holistic worldview in which the five elements (earth, water, fire, air, and space) are considered sacred and fundamental to all life. This deep ecological consciousness is manifested in cultural traditions, sacred groves, rituals, and sustainable resource management practices that have preserved ecosystems and wildlife across the subcontinent for centuries.

Traditional Ecological Knowledge (TEK) is defined as the cumulative body of knowledge about relationships that living things including people have with one another and with their environment, transmitted across generations through cultural mechanisms. In the Indian context, TEK encompasses knowledge of animal behaviour, habitat use, plant–animal interactions, seasonal patterns, and sustainable harvesting practices developed by indigenous communities through millennia of direct engagement with their local environments.

The relevance of Traditional knowledge to contemporary conservation has gained increasing recognition at the international level. Article 8(j) of the Convention on Biological Diversity (CBD) explicitly calls upon contracting parties to respect, preserve, and maintain the knowledge, innovations, and practices of indigenous and local communities relevant to the conservation and sustainable use of biological diversity. India's Biological Diversity Act, 2002 further reinforces the protection of Traditional knowledge at the national level, and the country has made significant progress toward the Aichi Biodiversity Target 18, which emphasizes the meaningful integration of Traditional knowledge into biodiversity conservation.

This paper provides a comprehensive analysis of the significance of Indian Traditional Knowledge in wildlife conservation and sustainable development, organized into thematic sections covering sacred groves, animal worship and ethno-zoological knowledge, community-based conservation models, the nexus between Traditional knowledge and sustainable development, legal frameworks, and contemporary challenges.

Sacred Groves: Living Laboratories of Wildlife Conservation

Sacred groves represent one of the most prominent expressions of traditional conservation in India. These are tracts of forest ranging from less than one hectare to over 100 hectares that have been protected by local communities for centuries on the basis of religious and cultural beliefs. India hosts over 100,000 documented sacred groves, distributed across virtually every state, with particularly high concentrations in the Western Ghats, Northeast India, Central India, and the Himalayan region.

Sacred groves function as critical refuges for biodiversity. A study of 20 sacred groves in Midnapur District, West Bengal, documented 108 plant species (82 of which were medicinal), 10 rare plant species, and 88 mega-fauna species, of which 2 belonged to Schedule-I of the Wildlife (Protection) Act, 1972. In Kodagu district of Karnataka, over 1,214 sacred groves (locally called Devarakadu) are situated within the Western Ghats biodiversity hotspot, with every village maintaining at least one grove. In Odisha, an estimated 2,166 sacred groves have been documented, concentrated largely in tribal districts.

The ecological significance of sacred groves extends beyond species conservation. They preserve climax vegetation, maintain soil and water quality, facilitate nutrient cycling, and serve as repositories of rare, endemic, threatened, and ethnobotanically important species. Several medicinal plants that have disappeared from surrounding forests continue to thrive in sacred groves, underscoring their role as genetic reservoirs.

Table 1: Distribution and Characteristics of Sacred Groves across Indian States

State/Region	Local Name	Estimated Number	Key Conservation Features
Maharashtra	Devrai / Devrahati	~1,600	Evergreen forest patches; medicinal plants
Kerala	Kavu	~2,000	Serpent groves; rare amphibian species
Karnataka (Kodagu)	Devarakadu	~1,214	Western Ghats biodiversity hotspot
Meghalaya	Law Kyntang / Law Lyngdoh	~79 (documented)	Subtropical forest refuges; orchid diversity
Rajasthan	Orans	~25,000	Desert ecosystem; Bishnoi community protection
Odisha	Jahera / Sarna	~2,166	Tribal district concentrations
West Bengal	Than / Garamthan	~670	Medicinal plants; Schedule-I fauna
Himachal Pradesh	Shinpin	Multiple	Himalayan temperate species
Uttarakhand	Hariyali / Bugyal	Multiple	Dev Bhumi tradition; sacred alpine meadows
Tamil Nadu	Kovilkadu	~500	Tropical dry evergreen forests

Animal Worship, Totemic Traditions, and Ethno-Zoological Knowledge

India's tradition of wildlife conservation through cultural and religious practices extends far beyond sacred groves. Since ancient times, numerous animals have been associated with deities of the Hindu pantheon and are revered as their sacred vehicles (Vahanas). Tigers are associated with Goddess Durga, elephants with Lord Ganesha, peacocks with Lord Kartikeya, bulls with Lord Shiva, and snakes with Lord Vishnu. This practice of identifying wildlife with divine figures has afforded cultural protection to these species for centuries.

Many tribal communities across India maintain totemic relationships with specific animal and plant species, enforcing taboos against their killing. The Bishnoi community of Rajasthan is perhaps the most celebrated example their religious tenets explicitly prohibit the killing of animals and cutting of green trees, and Bishnois have historically risked their lives to protect wildlife, particularly the blackbuck and the Khejri tree.

The Irula tribe of Tamil Nadu possesses sophisticated knowledge of snake behaviour and ecology. Their traditional snake-catching practices have been channelled into the Irula Snake Catchers' Cooperative Society, which supplies venom for antivenom production while contributing to snake conservation a model example of integrating Traditional knowledge with modern conservation needs.

Traditional knowledge of animal behaviour, migration patterns, and habitat requirements constitutes an invaluable but underutilized resource for contemporary wildlife management. Indigenous communities can identify species, track seasonal movements, and predict ecological changes with a precision that sometimes surpasses formal monitoring systems.

Community-Based Conservation Models

Community-based conservation (CBC) has emerged as a significant institutional response to the challenge of reconciling poverty reduction with biodiversity protection. TEK is widely recognized as one of the enabling conditions for successful and durable CBC initiatives.

In Northeast India, tribal communities have demonstrated particularly effective community conservation practices. The Karbi tribe of Assam’s Jamuna watershed practices community forest management through sacred groves, rotational shifting cultivation with fallow forest restoration, and community restrictions on timber extraction and fishing. A study of four Karbi villages found that 87% of respondents actively participate in community forest protection, and 73% depend on forest products for their daily livelihoods.

In Meghalaya’s Garo Hills, the Garo tribe has partnered with the Wildlife Trust of India and World Land Trust to protect community lands as “Village Reserve Forests,” maintaining habitat connectivity for approximately 800–1,000 elephants across the Garo Hills Elephant Reserve. This initiative exemplifies how traditional community ownership patterns can be leveraged for landscape-level conservation.

The Bhotiya community of Uttarakhand’s Nanda Devi Biosphere Reserve practices ethnobiological traditions including knowledge of medicinal and aromatic plants, wild edibles, and animal resources integrated with cultural taboos and rituals that collectively support biodiversity conservation in a fragile alpine ecosystem.

Table 2: Selected Community-Based Conservation Models Integrating TK in India

Community/Region	Conservation Practice	Wildlife/Biodiversity Benefit
Bishnoi, Rajasthan	Religious prohibition on killing animals and cutting trees	Protection of blackbuck, chinkaras, Khejri trees
Garo Tribe, Meghalaya	Village Reserve Forests under community ownership	Habitat connectivity for ~800 –1,000 elephants
Karbi Tribe, Assam	Sacred groves, rotational cultivation, fishing restrictions	Forest and species resilience; 87% community participation
Irula Tribe, Tamil Nadu	Traditional snake-catching cooperative	Snake conservation; antivenom production
Bhotiya, Uttarakhand	Ethnobiological practices, taboos, and rituals	Alpine biodiversity; medicinal plant conservation
Gond & Mawasi, Madhya Pradesh	Sacred groves managed by tribal communities	Preservation of ethnobotanically useful species
Munda & Santhal, Jharkhand	Sarna (sacred grove) worship and management	Conservation of sal forest ecosystems

Traditional Knowledge and Sustainable Development

The relationship between Traditional knowledge and sustainable development is deeply symbiotic. India’s tribal communities, comprising 8.6% of the population, possess indigenous knowledge that through proper recognition, adoption, and mainstreaming has the potential to provide sustainable solutions to challenges related to agricultural productivity, biodiversity loss, water scarcity, and pollution.

Traditional agricultural practices exemplify this nexus. Indigenous farming systems across India such as the Panikheti system, Apatani cultivation in Arunachal Pradesh, the Kanaja technique in Karnataka, and Bidd cultivation in Rajasthan embody principles of crop rotation, composting, mixed cropping, and sustainable water management that align with contemporary sustainability goals. These practices maintain soil fertility, conserve agrobiodiversity, and reduce dependence on chemical inputs.

Folk medicine, practiced by communities such as the Oraon, Kani, and Bhil, plays a dual role in healthcare provision and biodiversity preservation. Indigenous communities have identified approximately 7,000 plant species for medicinal use, and this ethnobotanical knowledge directly incentivizes the conservation of medicinal plant diversity. The Medicinal

Plant Conservation Centre (MPCC) in Pune, recognized by the UNDP Equator Initiative in 2002, partnered with local knowledge healers and tribal communities to identify over 50,000 plants representing more than 50 different species a model of how TEK can strengthen conservation through community partnership.

Traditional knowledge also contributes to climate change adaptation. Indigenous communities in the Himalayan region, for instance, possess detailed knowledge of seasonal patterns, water management, and forest ecology that enhances ecosystem resilience to climate-related shocks including drought and increased fire frequency.

Legal Frameworks for Protection of Traditional Knowledge

The protection of Traditional knowledge is supported by multiple international and national legal instruments. At the international level, the Convention on Biological Diversity (CBD), the Nagoya Protocol on Access and Benefit-Sharing (ABS), and the International Treaty on Plant Genetic Resources for Food and Agriculture (ITPGRFA) all recognize the contributions of indigenous communities and establish frameworks for equitable benefit-sharing.

In India, several legislative measures protect Traditional knowledge:

Biological Diversity Act, 2002: Establishes Biodiversity Management Committees at the local level and provides for benefit-sharing with communities.

Wildlife (Protection) Amendment Act, 2002: Introduces the category of “Community Reserves,” which can encompass sacred groves and other community-conserved areas.

Traditional Knowledge Digital Library (TKDL): A database of Indian traditional knowledge documented in patent-compatible formats to prevent misappropriation.

Protection of Plant Varieties and Farmers’ Rights Act, 2001: Recognizes farmers’ rights over traditional plant varieties.

The integration of Traditional knowledge into intellectual property frameworks remains challenging. Conventional IPR systems patents, copyrights, trademarks are designed for individual, novel inventions and do not easily accommodate the collective, intergenerational, and holistic nature of Traditional knowledge. Scholars have advocated for sui generis systems specifically tailored for traditional knowledge that ensure proper recognition, benefit-sharing, and community empowerment.

Challenges and Threats

Despite its profound significance, Indian Traditional knowledge faces several existential threats:

1. Erosion of oral traditions: Much Traditional knowledge is transmitted orally and is vulnerable to loss as younger generations migrate to urban areas and adopt modern lifestyles.
2. Modernization and urbanization: Sacred groves face encroachment, fragmentation, and degradation due to developmental pressures.
3. Biopiracy and misappropriation: Inadequate legal protections expose Traditional knowledge to exploitation by commercial interests without equitable benefit-sharing.
4. Climate change: Shifting temperature and rainfall patterns alter the ecological conditions upon which Traditional knowledge-based practices depend. Communities in the Paddar Valley of Kishtwar, Jammu and Kashmir, have reported declines in multiple plant species

due to climate change, deforestation, and overexploitation.

5. **Institutional disconnect:** Conservation policies often prioritize top-down approaches (national parks, tiger reserves) over community-based models, marginalizing indigenous voices in decision-making processes.
6. **Loss of belief systems:** The weakening of religious and cultural beliefs particularly among younger generations undermines the social institutions (taboos, rituals, customary laws) that sustain traditional conservation practices.

Recommendations for Integration

To harness the full potential of Traditional knowledge for wildlife conservation and sustainable development, the following measures are recommended:

Systematic documentation: Expand the TKDL and undertake intensive documentation of Traditional knowledge related to wildlife behavior, habitat management, and sustainable harvesting across all tribal communities.

Policy integration: Mainstream Traditional knowledge into national conservation strategies, wildlife management plans, and environmental impact assessments.

Benefit-sharing: Strengthen ABS mechanisms to ensure that indigenous communities receive fair compensation for their contributions to conservation and biodiscovery.

Community empowerment: Support community-based conservation initiatives through legal recognition (Community Reserves), financial support, and capacity building.

Interdisciplinary research: Foster collaborations between ethnobiologists, ecologists, and indigenous knowledge holders to validate, complement, and integrate Traditional knowledge with modern science.

Education: Incorporate Traditional knowledge into formal educational curricula to foster intergenerational transmission and broader appreciation.

Conclusion

Indian traditional knowledge represents a vast, living repository of ecological wisdom that has sustained biodiversity and wildlife across the subcontinent for millennia. Sacred groves, animal worship, totemic taboos, community-based forest management, and indigenous resource use practices collectively constitute a conservation heritage of global significance. This knowledge is not merely historical it remains functionally relevant, as evidenced by the documented biodiversity richness of sacred groves, the effectiveness of community-managed forests, and the ongoing contributions of tribal communities to species protection and habitat maintenance.

The challenges of the 21st century accelerating biodiversity loss, climate change, and the pressures of development demand conservation approaches that are ecologically sound, socially just, and culturally appropriate. The integration of Traditional knowledge with modern scientific frameworks offers precisely such an approach. As India works toward its commitments under the CBD and the Sustainable Development Goals, the wisdom embedded in its traditional knowledge systems must be recognized not as a relic of the past but as an essential resource for a sustainable future.

References

- Agarwal, M. (2016). Conserving Water & Biodiversity: Traditions of Sacred Groves in India. *European Journal of Sustainable Development*, Vol. 5, Issue 4, pp. 129–138. DOI: 10.14207/ejsd.2016.v5n4p129

- Bhattacharjee, G. (2025). Environmental Protection in Indian Knowledge System. *Advanced International Journal for Research*, Vol. 6, Issue 5, Article 1238. DOI: 10.63363/aijfr.2025.v06i05.1238
- Chakraborty, S. (2024). Synergy of Traditional Ecological Knowledge (TEK) and Intellectual Property Rights (IPR) in Biodiversity Management and Conservation. *Uttar Pradesh Journal of Zoology*, Vol. 45, Issue 16, pp. 1–12. DOI: 10.56557/upjz/2024/v45i164326
- Jasmine, B., Singh, Y., Onial, M., & Mathur, V. (2016). Traditional Knowledge Systems in India for Biodiversity Conservation. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, pp. 1–14.
- Jhahhria, A. (2026). Indian Knowledge System and Biodiversity: Traditional Wisdom for Sustainable Conservation. *International Journal of Research and Innovation in Applied Science*, Vol. 11, Issue 1, pp. 1303–1307. DOI: 10.51584/ijrias.2026.110100111
- Kala, C.P. (2011). Traditional Ecological Knowledge, Sacred Groves and Conservation of Biodiversity in the Pachmarhi Biosphere Reserve of India. *Journal of Environmental Protection*, Vol. 2, Issue 7, pp. 967–973. DOI: 10.4236/jep.2011.27111
- Kalra, L. et al. (2024). A Comprehensive Review of Indigenous Knowledge Systems in India and its Importance and Role in Biodiversity Conservation. *International Journal of Environment and Climate Change*, Vol. 14, Issue 9, Article 4409. DOI: 10.9734/ijecc/2024/v14i94409
- Kandari, L.S., Bisht, V.K., Negi, T., Rawat, A.P., & Sharma, R.B. (2025). Folklore, Religion and Traditions of Bhotiya Community: A Heritage-Based Model for Biodiversity Conservation in the Nanda Devi Biosphere, Uttarakhand, India. *Journal of Mountain Research*, Vol. 20, Issue 2, pp. 1–14. DOI: 10.51220/jmr.v20-i2.10
- Khan, M.L. & Evi, A. (2008). The Sacred Groves and Their Significance in Conserving Biodiversity: An Overview. *International Journal of Ecology and Environmental Sciences*, Vol. 34, Issue 3, pp. 277–291.
- Mekonen, S. (2017). Roles of Traditional Ecological Knowledge for Biodiversity Conservation. *International Journal of Ecology and Environmental Sciences*, pp. 1–10.
- Nasrin, M. & Barman, B. (2025). Community Forest Management and Indigenous Conservation Practices: A Study of the Karbi Tribal Communities in the Jamuna Watershed, Assam (India). *International Journal of Geography, Geology and Environment*, Vol. 7, Issue 11, pp. 1–10. DOI: 10.22271/27067483.2025.v7.i11a.438
- Pandey, N. (2014). Traditional Knowledge Systems for Biodiversity Conservation. *Biodiversity Conservation*, pp. 1–12.
- Pandit, P.K. & Bhakat, R. (2007). Conservation of Bio-diversity and Ethnic Culture through Sacred Groves in Midnapur District, West Bengal, India. *Indian Forester*, Vol. 133, Issue 7, pp. 55–68.
- Priyadarshini, P. & Abhilash, P. (2019). Promoting Tribal Communities and Indigenous Knowledge as Potential Solutions for the Sustainable Development of India. *Environmental Development*, Vol. 32, Article 100459. DOI: 10.1016/j.envdev.2019.100459
- Rath, S. & Ormsby, A.A. (2020). Conservation through Traditional Knowledge: A Review of Research on the Sacred Groves of Odisha, India. *Human Ecology*, Vol. 48, pp. 455–463. DOI: 10.1007/s10745-020-00173-1
- Ruffner, J. & Smith, E.B. (2019). Healing the Broken Spine: A Community-led Conservation Initiative in Garo Hills, Meghalaya, India. In: *Biocultural Landscapes*, pp. 1–12.
- Saha, A., Shrivastav, S.K., & Gupta, M. (2025). The Role of Indigenous Knowledge Systems in Integrating Traditional Conservation Practices with Modern Ecological Management. *Journal of Animal Environment*, Vol. 17, Issue 3, pp. 1–12. DOI: 10.70102/aej.2025.17.3.11
- Segger, M.C. & Phillips, F.K. (2015). Indigenous Traditional Knowledge for Sustainable Development: The Biodiversity Convention and Plant Treaty Regimes. *Journal of Forest Research*, Vol. 20, pp. 431–437. DOI: 10.1007/s10310-015-0498-x

- Sharma, S. & Kumar, R. (2021). Sacred Groves of India: Repositories of a Rich Heritage and Tools for Biodiversity Conservation. *Journal of Forestry Research*, Vol. 32, pp. 899–916. DOI: 10.1007/s11676-020-01183-x
- Shukla, S. (2004). Strengthening Community-Based Conservation through Traditional Ecological Knowledge. *Proceedings of the International Conference on Community-Based Conservation, UNDP Equator Initiative*, pp. 1–12.
- Sinha, R. (1995). Biodiversity Conservation through Faith and Tradition in India: Some Case Studies. *International Journal of Sustainable Development and World Ecology*, Vol. 2, Issue 4, pp. 278–284. DOI: 10.1080/13504509509469908
- Soni, A. (2026). Animal-Based Remedies in Indian Traditional Medicine: Therapeutic Roles, Conservation Issues, and Research Perspectives. *International Journal for Multidisciplinary Research*, Vol. 8, Issue 1, Article 54229. DOI: 10.36948/ijfmr.2026.v08i01.54229
- Sutar, S.R. & Rce Kodugu (2016). Community Linked Biodiversity Conservation: Sacred Groves of Kodagu, Karnataka, India. *Proceedings of the International Conference on Community-Based Conservation*, pp. 1–8.
- Thakar, A. & Dave, D. (2026). Traditional Ecological Knowledge and Conservation Challenges in Paddar Valley of Kishtwar Himalaya, Jammu and Kashmir. *Discover Environment*, Vol. 4, pp. 1–15. DOI: 10.1007/s44274-026-00574-x
- Torri, M. & Herrmann, T. (2012). Cultural Relations and Local Ecological Concerns as Baseline for Wildlife Co-management and Biocultural Conservation. *Biodiversity and Conservation*, pp. 1–18.

Study of Animal Behaviour in the Indian Knowledge Tradition: Scientific and Ethical Perspectives in the Panchatantra and Jataka Tales

Ankush Kumar Kalish

Research Scholar, Ybn University, Powergrid Road, Rajaulatu, Namkum, Ranchi, Ulatu, Jharkhand

Dr. Smt. P.K. Singh Rana

Assistant Professor, Department of Zoology, V.R.D. Govt. College, Marwahi, Dist-G.P.M

Abstract

Animal behaviour has been an important subject of observation in both traditional knowledge systems and modern science. In the Indian knowledge tradition, classical texts such as the Panchatantra and the Jataka Tales contain numerous narratives in which animals are portrayed with distinct behavioural traits, social relationships, and survival strategies. Although these works are primarily known for their moral teachings, they also reflect careful observation of animal life and behaviour in natural environments. The Panchatantra, translated into English by Arthur W. Ryder (1925), presents animal characters such as lions, jackals, turtles, and monkeys whose actions illustrate behavioural patterns like cooperation, competition, intelligence, and adaptability. Similarly, the Jataka Tales, compiled and translated by E. B. Cowell (1895), describe the previous births of Gautama Buddha in both human and animal forms, often highlighting social behaviour, compassion, and group dynamics among animals.

From a modern scientific perspective, the study of animal behaviour is known as Ethology, a branch of Zoology that examines behavioural adaptations and interactions among organisms (Alcock, 2013). When analysed from this perspective, many narratives in these traditional texts reveal parallels with contemporary concepts of animal behaviour such as social organization, communication, and survival strategies. Therefore, these classical works not only serve as sources of ethical instruction but also reflect early observational knowledge of animal behaviour. This paper aims to explore the scientific and ethical perspectives of animal life presented in these texts and to highlight their relevance to modern zoological understanding of animal behaviour.

Keywords: Zoology, Animal Behaviour, Ethology, Indian Knowledge Tradition, Panchatantra, Jataka Tales, Animal Ethics, Traditional Literature

Introduction

The Indian Knowledge Tradition contains rich insights into nature, animals, and human society. Ancient Indian scholars closely observed the behaviour of animals and used these observations to explain moral values, social relationships, and survival strategies. In modern Zoology, the study of animal behaviour is known as Ethology, which examines how animals interact with their environment and with other living beings.

Two important literary works that reflect this understanding are the Panchatantra and the Jataka Tales. The Panchatantra is an ancient Indian collection of animal fables that uses animal characters to teach wisdom, political knowledge, and moral lessons. Similarly, the Jataka Tales are stories describing the previous lives of Gautama Buddha, where animals often appear as central characters demonstrating virtues such as compassion, intelligence, cooperation, and sacrifice.

These texts not only convey ethical teachings but also reflect careful observations of animal behaviour. Through storytelling, they illustrate different aspects of animal life such as social interaction, survival strategies, and communication. Therefore, these classical works provide an important perspective on the understanding of animal behaviour in the Indian knowledge tradition.

The Indian Knowledge System (IKS) represents a rich repository of interdisciplinary knowledge integrating philosophy, ecology, zoology, and ethics. Animal behaviour, though not termed “ethology” in ancient times, was deeply studied through observation, symbolism, and narrative traditions. Mrigapakshi Shastra provides insights into feeding habits, social organization, reproduction, and interspecies interactions. These observations were not merely descriptive but served ethical, ecological, and pedagogical purposes. This paper explores how animal behaviour was understood, interpreted, and applied in IKS, highlighting its relevance to modern zoology and behavioural ecology.

Literature Review

Animal behaviour has been discussed in both traditional literature and modern scientific studies. The ancient Indian text Panchatantra presents animal characters such as lions, jackals, and turtles to illustrate intelligence, cooperation, and survival strategies. According to the English translation by Arthur W. Ryder (1925), these stories reflect careful observations of animal behaviour while also conveying moral lessons.

Similarly, the Jataka Tales describe the previous births of Gautama Buddha, where animals often appear as central characters demonstrating compassion, leadership, and social cooperation. The collection translated by E. B. Cowell (1895) highlights the ethical and behavioural aspects of animal life.

Animal Behaviour in the Panchatantra

The Panchatantra is one of the most famous collections of ancient Indian stories. It uses animals as characters to teach lessons about wisdom, friendship, leadership, and strategy.

Different animals in the stories represent different behavioural traits. For example:

The lion is often portrayed as powerful and authoritative.

The fox or jackal is depicted as clever and strategic.

The turtle represents patience and caution.

These portrayals are not random; they are based on close observation of animal behaviour in nature. The stories show how animals cooperate, compete, form alliances, and respond to danger, which reflects real behavioural patterns studied in zoology today.

Animal Life in the Jataka Tales

The Jataka Tales are stories about the previous lives of the Buddha. Many of these stories describe animals as central characters who demonstrate compassion, intelligence, and moral decision-making.

Animals in the Jataka Tales often display social behaviour such as cooperation, leadership, and protection of the group. For example, stories about elephants, monkeys, and deer describe how animals live in groups and support each other.

These narratives reflect an understanding that animals have complex social relationships and emotional responses, ideas that are now widely recognized in modern zoological research.

Scientific Perspective

From a scientific perspective, the stories in these texts indirectly describe various aspects of animal behaviour, such as:

Social organization

Communication

Survival strategies

Cooperation and competition

These aspects correspond to the modern scientific study of animal behaviour within zoology. Although ancient texts used storytelling rather than scientific experiments, they demonstrate careful observation of nature and animal life.

Focus on compassion, cooperation, and ethical behaviour

Animals exhibit:

Altruism

Social bonding

Moral decision-making

Animal behaviour in Mrigapakshi Shastra

Meaning and Origin

“Mrig” (मृग) = Animals

“Pakshi” (पक्षी) = Birds

“Shastra” (शास्त्र) = Scientific treatise or systematic knowledge

Mrigapakshi Shastra is a classical Indian treatise that systematically describes animals (m[ga] and birds (pakci), focusing on their classification, behaviour, ecology, and practical uses. It reflects the deep observational knowledge of ancient Indian scholars and is considered an early contribution to zoology and ethology within the Indian Knowledge System (IKS). It provides early insights into animal classification, behaviour, and ecology, showing that ancient India had a deep and practical understanding of the natural world.

Classification System

Ancient classification in this text is surprisingly scientific:

1 Based on Habitat

Jalchar (Aquatic) – Fish, amphibians

Sthalachar (Terrestrial) – Lion, elephant, deer

Vayuchar (Aerial) – Birds

2 Based on Diet

Herbivores

Carnivores

Omnivores

3 Based on Behaviour

Aggressive animals

Social/group-living animals

Solitary animals

Ethical Perspective

Besides scientific observations, the stories also promote ethical values such as honesty, friendship, kindness, and wisdom. Animals are used as symbolic characters to teach moral lessons.

This ethical dimension shows that Indian knowledge traditions viewed animals not only as biological organisms but also as part of a broader moral and ecological system.

Conclusion

The Panchatantra the Jataka Tales and Mrigapakshi Shastra provide valuable insights into the understanding of animal behaviour in the Indian knowledge tradition. Through storytelling, these texts combine scientific observation with ethical teachings. Their descriptions of animal life reveal an early awareness of behavioural patterns that are now studied in modern zoology. Therefore, these classical works remain important sources for understanding both cultural perspectives and early observations of animal behaviour.

References

1. Panchatantra. Translated by Arthur W. Ryder. University of Chicago Press, 1925.
2. Jataka Tales. Translated by E. B. Cowell. Cambridge University Press, 1895.
3. Charles Darwin. The Expression of the Emotions in Man and Animals. John Murray, 1872.
4. Konrad Lorenz. On Aggression. Harcourt, Brace & World, 1966.
5. Niko Tinbergen. The Study of Instinct. Oxford University Press, 1951.
6. John Alcock. Animal Behavior: An Evolutionary Approach. Sinauer Associates, 2013.
7. Balakrishnan, M. (1990). Study of Animal Behaviour in India.

Indian Knowledge System in the Mythological Novels of Kavita Kane

Dharmendra Singh Suayavanshi

Department of English, V.R.D. Govt. College Marwahi Distt. G.P.M. (C.G.)

Abstract:The Indian Knowledge System is a vast body of knowledge that includes philosophy, ethics, social values, and cultural traditions preserved through ancient texts and oral traditions. In contemporary literature, mythological retellings have become an important way of revisiting and reinterpreting these traditional ideas. Kavita Kane is a significant modern writer who presents mythological stories from the perspective of women characters who were often neglected in classical narratives.

This research paper examines how her novels reinterpret key elements of the Indian Knowledge System such as dharma, karma, gender roles, social hierarchy, and moral responsibility. Using qualitative textual analysis, the study explores selected works and argues that Kane's writing not only preserves traditional knowledge but also critically reshapes it to align with contemporary values like equality and justice. The paper concludes that her novels act as a bridge between ancient wisdom and modern thought.

Keywords:Indian Knowledge System, Mythology, Feminist Retelling, Dharma, Kavita Kane, Culture, Social Structure

1. Introduction:-

The Indian Knowledge System is deeply rooted in ancient texts like the Ramayana and Mahabharata, which provide not only stories but also guidance about life, morality, duty, and relationships. These texts explain important concepts such as dharma (duty), karma (action), and the balance between individual desires and social responsibilities. In modern times, there has been a growing interest in retelling these ancient stories in new ways.

Writers are now exploring the untold stories of characters who were previously ignored or misunderstood. Among such writers, Kavita Kane has gained popularity for presenting mythology from a female-centered perspective. Her novels focus on characters like Uruvi, Ahalya, and Surpanakha, who were often sidelined in traditional narratives. By giving them voice and depth, Kane not only retells myths but also questions the values and assumptions of traditional knowledge systems. This paper aims to analyze how her novels reflect, challenge, and transform the Indian Knowledge System.

2. Concept of Indian Knowledge System:-

The Indian Knowledge System is not limited to religious teachings; it includes a wide range of knowledge systems related to: Ethics and morality Social organization Philosophy and spirituality Cultural traditions Key concepts include:

2.1 Dharma

Dharma refers to duty, righteousness, and moral responsibility. It guides individuals on how to act in different situations.

- 2.2 Karma:-Karma refers to the idea that every action has consequences. It emphasizes responsibility for one's actions.
- 2.3 SocialOrder:-Traditional Indian society was organized through systems like varna (class) and gender roles, which defined individual identity and duties.
- 2.4 Knowledge through Narratives Stories and epics were used as tools to pass knowledge from one generation to another. Kane's novels engage with all these aspects and reinterpret them for modern readers.

3. Literatur Review:-

Modern scholarship has increasingly focused on mythological retellings as a form of cultural reinterpretation. Many critics argue that traditional epics are male-dominated and do not fully represent women's experiences. Feminist scholars highlight the need to revisit these texts and give voice to marginalized characters. Studies on Kavita Kane emphasize her role in rewriting myths from a woman's perspective. Her work is often seen as: A feminist reinterpretation of mythology A critique of social and cultural norms A bridge between tradition and modernity However, limited attention has been given to how her novels connect with the Indian Knowledge System as a whole. This paper addresses that gap.

4. Research Methodology :-

This study follows a qualitative and interpretative approach.

- 4.1 Primary Sources:-Karna's Wife: The Outcast Queen Lanka's Princess Ahalya's Awakening The Fisher Queen's Dynasty
- 4.2 Secondary Sources:-Books on mythology and Indian philosophy Research articles on feminist literature Critical essays on mythological retellings
- 4.3 Method of Analysis:-Thematic analysis of characters and events Interpretation of key concepts like dharma and gender roles Comparative study with traditional narratives

5. Analysis and Discussion

- 5.1 Redefining Dharma:-In traditional texts, dharma is often presented as a fixed rule. However, in Kane's novels: Characters question traditional definitions of right and wrong Moral decisions are shown as complex and situational For example, Uruvi in Karna's Wife struggles between her love for Karna and the social expectations imposed on her. This shows that dharma is not absolute but flexible.
- 5.2 Feminine Voice and Identity:-Kane's most important contribution is giving voice to women: Ahalya is no longer just a symbol of sin but a victim of injustice Surpanakha is shown as emotional and human rather than evil Satyawati is portrayed as ambitious and intelligent This challenges traditional narratives and expands the scope of knowledge by including women's experiences.
- 5.3 Critique of Patriarchy:-Traditional Indian Knowledge System often supports patriarchal structures. Kane questions this by: Highlighting women's struggles Showing how power is controlled by men Presenting women as independent thinkers Her work suggests that knowledge systems should evolve to include equality and fairness.
- 5.4 Caste and Social Inequality:-Kane also addresses caste issues: Karna's life shows the injustice of caste-based discrimination Social identity is shown as a barrier to personal growth This reflects the need to critically examine traditional social systems.
- 5.5 Cultural Continuity and Transformation:-While Kane challenges many traditional ideas, she does not reject them completely. Instead: She preserves the basic structure of myths

She adapts them to modern values. This shows that Indian Knowledge System is not static but capable of change.

5.6 Knowledge, Power, and Narrative Control Kane's novels reveal that: Traditional stories are often shaped by those in power. Some voices are suppressed or ignored. By rewriting these stories, Kane restores lost voices. Makes knowledge more inclusive.

6. Major Findings:-

The study highlights the following: -Indian Knowledge System is dynamic and adaptable. Kane's novels promote gender equality and justice. Mythological retellings serve as tools for social critique. Traditional concepts like dharma are reinterpreted in modern contexts. Literature plays an important role in preserving and transforming knowledge.

7. Conclusion:-

Kavita Kane has gained popularity for presenting mythology from a female-centered perspective. Her novels focus on characters like Uruvi, Ahalya, and Surpanakha, who were often sidelined in traditional narratives. By giving them voice and depth, Kane not only retells myths but also questions the values and assumptions of traditional knowledge systems. This paper aims to analyze how her novels reflect, challenge, and transform the Indian Knowledge System. The works of Kavita Kane provide a fresh and meaningful reinterpretation of the Indian Knowledge System. By focusing on women and marginalized characters, she expands the scope of traditional knowledge and makes it more inclusive. Her novels show that mythology is not just about preserving the past but also about understanding the present and shaping the future. Through her writing, Kane demonstrates that knowledge systems must evolve to remain relevant in changing times.

8. References:-

1. Karna's Wife: The Outcast Queen. Rupa Publications 2013.
2. Lanka's Princess. Rupa Publications 2016.
3. Ahalya's Awakening. Westland Publications 2019.
4. The Fisher Queen's Dynasty. Westland Publications 2020.
5. Pattanaik, D. Myth = Mithya. Penguin 2017.
6. Doniger, W. The Hindus: An Alternative History. Penguin 2009.
7. Journal articles on mythology, feminism, and Indian Knowledge System.

An Assessment of Pollution and Water Quality Parameter In Janjgir-champa of Chattisgarh By Focussing of Its Analytical Perspective

Dr. Swapnil Jaiswal

Government College, Kartala. Distt. Korba (C.G.)

Dr. Rubina

Fanikeshwar Nath Govt. College, Fingeshwar. Distt Gariyaband

Abstract— The study presents an analysis of the surface water quality parameters in the Mahanadi power plant located in Janjgir-Champa, Chhattisgarh, India. Surface water quality is a critical environmental concern due to its direct impact on aquatic ecosystems, human health, and overall environmental sustainability. The research involved regular monitoring and sampling of water from selected locations near Mahanadi power plant over an extended period. Several key water quality parameters were analyzed, including pH, dissolved oxygen (DO), biochemical oxygen demand (BOD), chemical oxygen demand (COD), Total Alkalinity, turbidity etc. These parameters were assessed to evaluate the impact of power plant operations on the receiving water bodies, which may include ponds. The results of the analysis revealed significant variations in water quality parameters, with certain locations exhibiting deviations from recommended standards and guidelines. These variations are indicative of the potential environmental implications associated with the power plant's discharge into the surrounding water bodies.

Keywords— surface water, chemical analysis, Mahanadi power plant, water quality parameter.

I. Introduction

Water is the most prime and rich compounds of the environment. All living beings on the earth want water for their growth and survival. As of now only earth is the planet having about 70% of water. But due to increased human population, industrialization, use of fertilizers in the agriculture and man-made activity it is highly polluted with different harmful contaminants. Therefore it is necessary that the quality of drinking water should be checked at regular time interval, because due to use of contaminated drinking water, human population suffers from varied of water borne diseases. [1]

In the last few decades, there has been a tremendous increase in the demand for fresh water due to rapid growth of population and the accelerated pace of industrialization. According to WHO organization, about 80% of all the diseases in human beings are caused by water. [2]

An analysis of surface water quality parameters in the vicinity of the Mahanadi Power Plant in Janjgir-Champa is of paramount importance to assess and comprehend the potential environmental impact of this vital energy generation facility. The Mahanadi Power Plant stands as a significant contributor to the region's energy requirements, and as such, a comprehensive evaluation of its influence on the quality of nearby surface water bodies is imperative. This study aims to delve into a variety of essential water quality parameters, seeking to gauge the current state of the aquatic environment and to determine any possible ramifications for the local ecosystems, as well as the well-being of the surrounding communities. In doing so, it will provide valuable insights for informed decision-making, environmental management, and potential remediation efforts.

The Mahanadi coal-based thermal power project is located approximately 125 km away from the Morga II coal block in the Janjgir-Champa district of Chhahattisgarh, India. KSK Energy Ventures is the owner and developer of the project. The Mahanadi project is one of the largest single green field projects. Power Grid Corporation of India (PGCIL) purchases the power generated by the plant under a bulk transmission agreement.

An analysis of surface water quality parameters near the Mahanadi Power Plant in Janjgir - Champa is crucial to assess the potential impact of the plant on the surrounding aquatic ecosystem. The Mahanadi Power Plant, known for its significant contribution to the region's energy production, may have potential implications for the quality of nearby surface water bodies. An in-depth examination of various water quality parameters is essential for understanding the current state of the aquatic environment and the potential implications for the local communities and ecosystems.

II. Objective Of The Study

The objectives of an analysis of surface water quality parameters near the Mahanadi Power Plant in Janjgir-Champa may include:

1. To study the Physico-chemical parameters of pond water.
2. To show the relation between the parameters and the seasons.
3. To evaluate the quality of pond water importance.

III. Research Methodology

- A. *Materials* : For analysis of various pond water parameters AR Grade chemicals (Merck, India) were used. All glassware and other sample container were washed and rinsed with distilled water.
- B. *Sample Collection* The season chosen for sampling were monsoon. Three ponds were selected from Akaltara, Taraod and Nariyara. These four ponds have comparably huge water capacity throughout the year and these ponds are most important for human utilities such as agriculture, laundry purpose and fishing. The samples were taken between 11:00 am to 01:00 pm. Water samples were collected in polyethylene bottles of 2L capacity, transported to the laboratory and analyzed. Water samples were analyzed for most water quality physicochemical parameter, such as, pH, alkalinity, Cl^- , BOD, COD, Turbidity, hardness, NO_3^- , DO, Phosphate, Temperature. The Parameters were determined using the standard methods mentioned in table-1 for the examination of water and waste water.
- C. *Preservation techniques*: For analysis of various parameters water samples were preferment by keeping in the insulated coolant at 4°C and adding 1-2 drops of 1N

Concentrated HNO₃ because of avoid precipitation or degradation of dissolved and suspended metallic elements.

table i. sampling point points

Sampling Place	Sapling point
Akaltara	1
Taraod	2
Nariyara	3

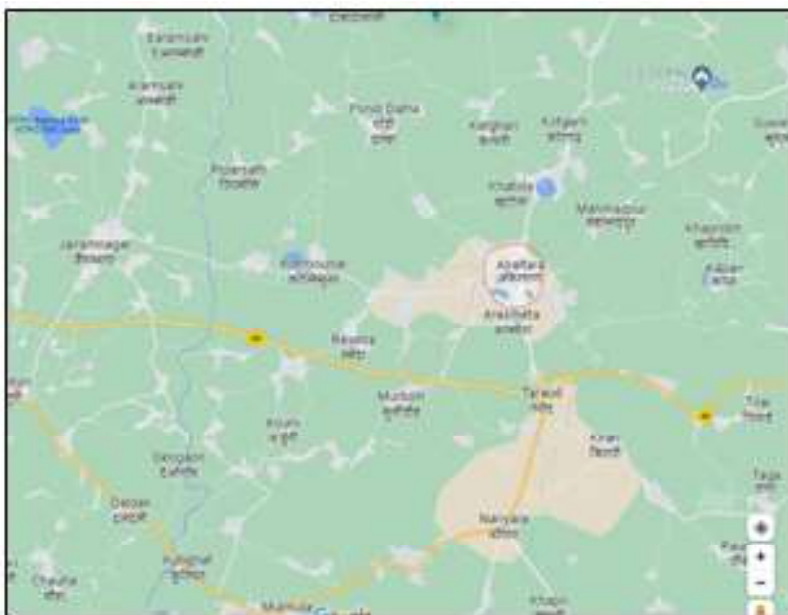


Fig. 1 Map of Sampling Site

Table ii. method used for determination of various physicochemical parameters

Parameter	Methods	Unit	
Temperature	Thermometer	°C	Ref.
pH	pH meter	-	[3]
Turbidity	Nephlo–turbidity meter	NTU	[3]
Total Hardness	EDTA	mg/l	[3]
Total Alkalinity	Titration	mg/l	[3]
BOD	5 days incubation at 20° C and titration of initial and final DO	mg/l	[3]
COD	Open Reflux Method	mg/l	[3]
Chlorides	Mohr’s Argentometric titration	mg/l	[3]
Nitrate	APHA 1985	mg/l	[4]
Phosphate	APHA 1985	mg/l	[4]
DO	Winkler method	mg/l	[3]

Table III. Health effects of chemical parameters

Parameters of water analysis	BIS Guideline values (Max. allowable)	Potential health effects	Reference
Temperature	-	-	-
pH	6.5-8.5	Affects mucous membrane; bitter taste; corrosion	[5],[6],[7]
Total Alkalinity	600mg/l	Boiled rice turns yellowish	[5],[6],[7]
Total Hardness	600mg/l	Poor lathering with soap; deterioration of the quality of clothes; scale forming	[5],[6],[7]
Chloride	1000mg/l	Taste affected; corrosion	[5],[6],[7]
BOD	BOD < 30 mg/L	Disposal into inland surface water, on land for agriculture	[8]
COD	COD < 250 mg/L	Inland surface water disposal as per CPCB standards.	[9]
Nitrate	45-100mg/L	Blue Baby syndrome, Risk of Cancer	[10]
Phosphate	0.2 mg P/L in 1 cm cell	Diarrhea, stomach upset, Headache.	[11]
DO	0.1- 4.0 mg/L	Bladder Cancer.	[12]

Samples were estimated by UV-VIS Spectro photometer.

Water samples were collected from these ponds over a depth of about 10 cm below the water surface in the upper layers of the pond water in seasonal at monsoon.

D. Physicochemical Analysis of Pond water

Sampling and physicochemical investigation was carried out according to standard methods (APHA 1985; NEERI 1991).

- Water temperature was recorded in the field using sensitive mercury thermometer.
- The pH of the samples was determined using digital pH meter.
- Turbidity was determined by Nephelo – turbidity meter.
- Total Hardness was determined titrimetrically using EDTA method (APHA 1985).
- Total Alkalinity was determined by titrimetric method.
- BOD was determined as 5 days incubation at 20° C and titration of initial and final DO
- COD was determined by potassium dichromate open reflex method (NEERI 1991).

- DO was determined by Winkler method (NEERI 1991).
- Chlorides were determined by Mohr's argentometry method (APHA 1985).
- Nitrate and Phosphate content was determined as per standard method (APHA 1985).

IV. results and discussion

- Temperature: The maximum water temperature (18.2°C) was observed at Sampling point 1 and the minimum water temperature (16.9°C) sampling point 3.
- pH: The maximum value of pH of the water sample was recorded as 8.7 at Sampling point- 3 and the minimum value of pH was recorded as 7.9 at Sampling point 2. In general the pH was within the limits of the standard values (APHA 1985).
- Turbidity: The present study shows turbidity in standard the range of 4.0– 7.0 NTU. Sampling point - 1 shows higher values than Sampling point-3 and Sampling point-2.
- Total Hardness: The maximum value of TH of the water sample was recorded as 147.9 at Sampling point-1 and the minimum value of TH was recorded as 142.7 at Sampling point 2.
- Total Alkalinity: The maximum value of TA of the water sample was recorded as 127.8 at Sampling point- 3 and the minimum value of TA was recorded as 121.25 at Sampling point 1.
- BOD: The maximum value of BOD of the water sample was recorded as 2.31 at Sampling point- 2 and the minimum value of BOD was recorded as 1.33 at Sampling point 1.
- COD: The maximum value of COD of the water sample was recorded as 16 at Sampling point- 2 and the minimum value of COD was recorded as 10 at Sampling point-3.
- Chlorides: The maximum value of Chlorides of the water sample was recorded as 43.48 at Sampling point- 1 and the minimum value of Chlorides was recorded as 38.34 at Sampling point-3.
- Nitrate: The maximum value of Nitrate of the water sample was recorded as 14.25 at Sampling point- 1 and the minimum value of Nitrate was recorded as 12.02 at Sampling point-2.
- Phosphate: The maximum value of Phosphate of the water sample was recorded as 12.38 at Sampling point- 1 and the minimum value of Phosphate was recorded as 4.58 at Sampling point-2.
- DO: Dissolved oxygen is important in precipitation and dissolution of inorganic substances in water. The maximum value of DO of the water sample was recorded as 6 at Sampling point- 1 and the minimum value of Phosphate was recorded as 5 at Sampling point-2 and Sapling point-3.

Table 4 :physico -chemical parameter of sampled water in monsoon season

Parameters	Sampling Point/ Station		
	Akaltara	Taraod	Nariyara
Temperature	18.2°C	17.8°C	16.9°C
pH	8.4	7.9	8.7
Turbidity	15.2	13.7	12.9
Total Hardness	147.9	142.7	143.2
Total Alkalinity	121.25	125.3	127.8
BOD	1.33	2.31	1.77
COD	11	16	10
Chlorides	43.48	41.17	38.34
Nitrate	14.25	12.02	12.9
Phosphate	12.38	4.58	10.68
DO	6	5	5

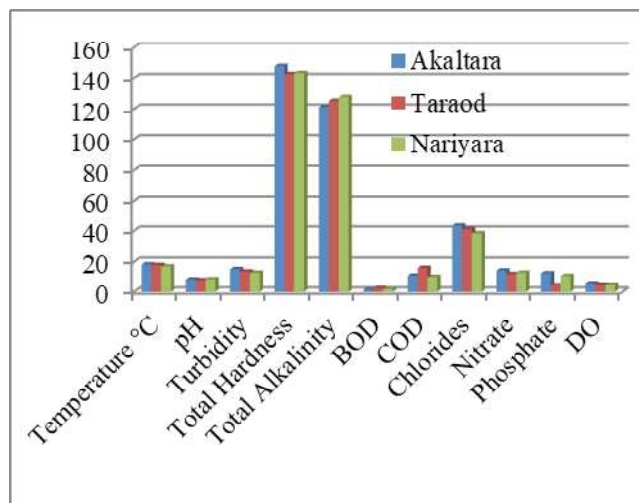


Fig. II: Physico-chemical parameter of sampled water in monsoon season

V. conclusion

Pollutants from various sources enter into the water reservoir mainly either by directly discharge of effluents or various industrial sources. The study was aimed to evaluate the present status of Mahanadi Power plant water quality in terms of physicochemical parameters. These parameter help us in selection the right options to treated water bodies and also assess water quality of Mahanadi Power plant. In conclusion, this research paper understandably specifies that the area around Mahanadi Power plant have severally polluted. Upper water is more contaminated than ground water. Analysis of surface water quality parameters in the vicinity of the Mahanadi Power Plant in Janjgir-Champa, Chhattisgarh, has provided valuable insights into the state of the local aquatic environment. The study examined various water quality parameters, including pH, dissolved oxygen (DO), turbidity, nutrient levels (e.g., nitrate and phosphate), COD, BOD, Chloride, Total Hardness, Alkalinity. The analysis of these parameters revealed important information about the condition of the surface water. Temperature in monsoon of all the station were normal the prescribed limit as per WHO. pH of all the station were within the acceptable limit as prescribed by WHO indicating water in study are alkaline. Turbidity value in almost all the sampling point shows very high crossing prescribed by WHO, giving information about suspended matter, Microbes etc. present in water in excess. Total Hardness value in almost all the sampling point shows very high crossing prescribed by WHO. Total Alkalinity value in pond water almost all the sampling point shows below prescribed by WHO. BOD value in pond water almost all the sampling point shows below prescribed by WHO and other rest parameter is also vary according to WHO.

In the analysis of surface water quality parameters near the Mahanadi Power Plant is a crucial step towards understanding and addressing environmental challenges. This study provides a foundation for informed decision-making, facilitating the protection and restoration of local water resources. The findings underscore the need for immediate action to safeguard the health of both the aquatic ecosystem and the surrounding community.

Recommendations:

Based on the study's findings, several recommendations are proposed to address and mitigate water quality issues. These include improving waste water treatment processes, enforcing pollution control measures, and enhancing monitoring efforts, local people should

be made aware of the situation. This paper was suggested that used some advanced techniques for water purification to Mahanadi power Plant, Janjgir-Champa (C.G.).

1. Precipitation Methods.
2. Waste solid materials should be stored underground.
3. Aquatic plants should be grown in aquatic system.

Limitations:

Resource Limitation: Adequate resources, including equipment and chemicals, may not be available in the region.

Seasonal Variability: Monsoon season may lead to rapid changes in water quality, making data collection challenging.

Safety: Safety precautions are essential when handling chemicals and conducting fieldwork.

Regulatory Compliance: Ensure that your data collection and analysis adhere to local environmental regulations.

Further Research

To ensure the continued assessment of water quality in the area, it is advisable to initiate long-term monitoring programs. Future research should focus on parameters for future research, which will aid in tracking changes over time and evaluating the effectiveness of implemented mitigation measures.

References

- [1] Basavaraja, Simpi, S. M., Hiremath, K. N. S. Murthy, K. N. Chandrashekarappa, Anil N. Patel, E.T.Puttiah, "Analysis of Water Quality Using Physico-Chemical Parameters Hosahalli Tank in Shimoga District, Karnataka, India", *Global Journal of Science Frontier, Research*, 1(3), pp 31-34, (2011).
- [2] Kavitha R. and Elangovan K., "Review article on Ground water quality characteristics at Erode district, (India)" of *I.J.E.S.*, 1(2), (2010).
- [3] Patel Vaishali¹, Parikh Punita, "Assessment of seasonal variation in water quality of River Mini, at Sindhrot, Vadodara," *International Journal of Environmental Sciences* Volume 3, No 5, (2013).
- [4] APHA, "Standard Methods For Examination of Water and Wastewater", 20th Edition, American Public Health Association, Washington D. C., (1985).
- [5] ICMR Standards, "Standards Methods for Examination of Water", (1985).
- [6] ISI, "Indian standard Drinking Water Specifications", New Delhi, 5, 16. (1991).
- [7] WHO "International standards of drinking water". World Health organization, Geneva. pp:55-79, (2004).
- [8] Khan, Muhammad Saad, "What is the permeable limit of Biochemical Oxygen Demand (BOD) in wastewater discharge?" (2019), <https://www.researchgate.net/>
- [9] Kamal, Shravani, <https://www.quora.com/What-are-the-values-of-the-parameters-BOD-COD-etc-for-water-and-waste-water-after-treatment>.
- [10] <https://scclmines.com/env/linkfile2.htm>
- [11] <https://scclmines.com/env/linkfile2.htm>
- [12] <https://scclmines.com/env/linkfile2.htm>

Indian Knowledge Systems and Vaidik Mathematics

Dr. Kunal Kumar Singh

JPU, Chapra

Abstract

Vedic mathematics is an ancient Indian mathematical system, or a set of precise rules, that may be applied to any trigonometric, algebraic, arithmetic, or geometric problem. The technique is based on 16 Vedic sutras, which are a collection of word equations that explain the steps or reasoning involved in solving a variety of mathematical problems that are difficult and time consuming to answer using traditional methods. Beginning with the foundations of Vedic mathematics, such as the meaning of Vedic mathematics, this article examines mathematical operations using Vedic mathematics. The Vedas mathematics formulae are then presented with the aid of many examples, and may be utilized to execute a variety of mathematical operations like as subtraction, addition, division, and multiplication, among others. Vedic math is a basic mathematics, but it is a better method to do mathematics. It has a bright future ahead of it, because it is now taught in all high schools and colleges.

Keywords: Vedic mathematics, Mathematical instruction, Systematic review, Sustainable development, Sustainability

Introduction

The most common definition of Veda is “knowledge”. It is both the earliest layer of Ancient Indian culture and the oldest texts of Hinduism. The Vedas are regarded divine in origin and are believed to be divine revelations from God. The four Vedas are the Yajurveda, Rig-Veda, Atharvaveda, and Samaveda. The Vedas are ancient texts with an uncertain precise date, although they are believed to date from the early centuries B.C. The content of the Vedas was well-known long before printing was invented, and it was freely available to everyone. This was passed down the centuries through word of mouth.¹ The Vedas are a collection of texts that have recently been found to be highly organized both internally and in their relationships with one another. Krishna spend 8 years in the Shringari pine forest Shringari Moth practicing Brahma Sadhana and learning advanced Vedanta Theory between 1911 and 1918.²

Vedic Mathematics is a logic and math system based on sixteen formulae and thirteen sub formulas with a basic idea and rule.

The Vedic mathematical processes are based on both contemporary and ancient mathematical systems. Each formula describes a mental working concept that may be used to solve a variety of mathematical problems.³

Addition

The addition formulae used in Vedic Mathematics include Sankalana Vyavakalanabhyam, Ekadhikeana Purvena, and Puranapuranaabhyam. The following stages may be used to break down the whole process of adding⁴:

$$\begin{array}{r} 9' 8' 7 \\ 4 6' 6' \\ 8' 4 7' \\ + 2 4 8 \\ \hline 2 5 4 8 \end{array}$$

Figure 2: An Example of the Addition Operator Which is done by with the help of Vedas Formula

Vamanlyayoh Dashakepi

This formula applies when the total of the digits in the tens places in the multiplier and multiplicand is 10 and the unit digits of both multiplier and multiplicand are the same. The process for obtaining more information. The answer to such questions consists of two parts.

LHS = Products of the left digits whose sum is 10 + unit digit; and RHS = Square of the unit digit. For example, to multiply 98 by 18, LHS = $9 \times 1 + 8 = 17$ and RHS = $8 \times 8 = 64$. The result = 1764.

Ekanyunena Purvena

The meaning of the formula is “by one less than the previous one.” This formula is used when the multiplier is 9, 99, 999, or 9999. The methodology may be divided into two types.⁹

- When the multiplicand's digit numbers are equal to or less than the nines' numbers: The steps are as follows: Subtract 1 from the multiplicand and put the result in the LHS; next, subtract the multiplicand using the Nikhilam formula and record the results in the RHS.
- To multiply 3784 by 999999, for example, use LHS = $3784 - 1 = 3783$, RHS = $999999 - 3783 = 996213$, and Results = 3784996214.
- When the multiplicand's digit numbers are more than the nines: It's a little different than you're accustomed to.
- Multiply the multiplicand by as many zeros as the number of nines to get the answer.
- Subtract the original multiplicands from the figure from the first step.

Conclusion

This paper concludes that Vedic mathematics is very important for a thorough understanding of mathematics. It consists of various Vedas derived from Indian agriculture, and these Vedas assist in performing various types of mathematical operations such as subtraction, addition, division, and multiplication, among others, by providing the various 16 formulae written in Vedas mathematics. This paper provides an overview on the Vedic mathematics. Vedic math is a basic kind of mathematics, but it is a more intelligent method of doing it. It has a bright future ahead of it, and it will help students study mathematics more thoroughly with clear explanations. There are a number of researchers who use Vedic mathematics to study and evaluate mathematical processes. In competitive exams with little or no time, students find it difficult to answer aptitude questions quickly.

References

- [1] Vedas. wikipedia.
- [2] Sapnabjantri. Division Made Easier by Vedic Mathematics. Sapnabjantri. 2017.
- [3] 16 Sutra Formulas of Vedic Mathematics- ziyara.
- [4] Addition and Subtraction Tricks- cuemath.
- [5] Of A. Fundamental+and+Vedic+Mathematics+.
- [6] 8 Vedic Maths Tricks: Calculate 10x Faster- vedantu.
- [7] Mathematics IV, Mathematics IV. Supplement to chapter 8.:20–31.
- [8] YS. Implementation of Arithmetic Operations Using Vedic Mathematics. Int J Res Eng Technol. 2015;04(17):114–6.
- [9] Vedic Maths Tricks- Tiwari academy.

Community-Based Snake Rescue and Snakebite Risk Assessment in Central India: Evidence from Marwahi Block, Chhattisgarh

Amar Gupta

M.Sc. Zoology, VRDG College, Marwahi, Chhattisgarh, India

Shubham Pathak

Ph.D. Scholar, Department of Rural Technology, Guru Ghasidas Vishwavidyalaya, Bilaspur, Chhattisgarh, India

Dr. P.K. Singh Rana

Assistant Professor, Department of Zoology, VRDG College, Marwahi, Chhattisgarh, India

Abstract

Human–snake conflict and snakebite envenoming represent major ecological and public health challenges in rural India. This study examines community-based snake rescue initiatives alongside snakebite incidence in Marwahi Block, Chhattisgarh. Primary data were collected through field-based rescue operations and secondary data from Community Health Centre (CHC) records (2023–2025).

A total of over 400 snake rescues across 13 species were documented. Additionally, 414 snakebite cases and 24 deaths were recorded during the study period. The findings indicate that community-driven rescue and awareness programs significantly reduce snake mortality and human panic, although snakebite incidence remains a concern.

The study highlights the importance of integrating traditional ecological knowledge with modern zoological practices and public health strategies for sustainable coexistence.

Keywords: Snake Rescue, Snakebite, Human–Wildlife Conflict, Biodiversity, Public Health, India

1. Introduction

Human–wildlife interactions are increasingly becoming a critical issue in rapidly changing ecological landscapes. Among these, human–snake conflict represents a unique challenge, particularly in tropical countries like India where high biodiversity coexists with dense human populations. Snakes, as an integral component of reptilian fauna, play a vital ecological role by regulating prey populations, especially rodents, thereby contributing to agricultural productivity and ecological stability.

Despite their ecological significance, snakes are widely misunderstood and feared due to their venomous nature and association with fatal snakebite incidents. This fear often leads to indiscriminate killing of snakes, resulting in biodiversity loss and ecological imbalance. At the same time, snakebite envenoming remains a major public health concern in India, particularly in rural and tribal regions where access to timely medical care is limited. According to recent estimates, India accounts for a significant proportion of global snakebite mortality, highlighting the urgency of addressing this issue through integrated approaches.

In this context, community-based snake rescue initiatives have emerged as an effective strategy to mitigate human–snake conflict. Such initiatives not only help in the safe relocation of snakes but also play a crucial role in spreading awareness among local communities. By reducing panic and misinformation, these programs contribute to both conservation and human safety.

Furthermore, India's rich traditional knowledge systems offer a unique cultural perspective on snake conservation. Religious beliefs, myths, and practices—such as reverence for snakes in Hindu traditions—can be leveraged as tools for promoting ecological awareness and coexistence.

The present study attempts to bridge the gap between ecological conservation and public health by integrating snake rescue data with snakebite incidence records in Marwahi Block, Chhattisgarh. It aims to provide a comprehensive understanding of how localized conservation efforts can influence human attitudes, reduce conflict, and contribute to sustainable biodiversity management.

2. Study Area

The study was conducted in Marwahi Block, located in the Gaurela–Pendra–Marwahi (GPM) district of Chhattisgarh, India. The region lies in the central part of the country and is characterized by a predominantly rural landscape with significant forest cover. The area forms part of the central Indian highlands and exhibits a rich diversity of flora and fauna, making it an ecologically important zone.

Marwahi Block experiences a tropical monsoon climate, with hot summers, moderate to heavy rainfall during the monsoon season (June–September), and mild winters. The monsoon period is particularly significant for snake activity, as increased humidity and prey availability lead to higher movement of snakes, thereby increasing the likelihood of human–snake encounters.

The local population is largely dependent on agriculture, forest resources, and daily wage labor. Houses in rural areas are often constructed in close proximity to fields, forests, and water bodies, creating ideal conditions for snakes to enter human settlements. Additionally, practices such as storage of grains, presence of livestock, and accumulation of organic waste attract rodents, which in turn attract snakes.

The region is inhabited by a mix of rural and tribal communities, where traditional beliefs and practices continue to influence human behavior toward wildlife. While some cultural beliefs promote tolerance toward snakes, others are based on fear and misconceptions, leading to conflict situations.

From an ecological perspective, the area supports a wide range of snake species, including both venomous and non-venomous types such as cobras, kraits, vipers, rat snakes, and

pythons. The diversity of habitats—ranging from forests and agricultural fields to wetlands—further enhances the presence of snakes in the region.

Due to these ecological and socio-economic characteristics, Marwahi Block provides an ideal setting to study the dynamics of human–snake interaction, the effectiveness of rescue interventions, and the implications for public health and biodiversity conservation.

3. Objectives

The present study is designed to achieve the following objectives:

1. To document the diversity and frequency of snake species encountered in Marwahi Block through systematic rescue operations.
2. To analyze the pattern of snake rescue incidents in relation to seasonal and habitat variations.
3. To examine the incidence and trends of snakebite cases in the study area using official health records.
4. To assess the effectiveness of community-based snake rescue and awareness programs in reducing human–snake conflict.
5. To explore the role of traditional ecological knowledge and cultural beliefs in shaping local attitudes toward snakes.

4. Methodology

The study adopts a mixed-method approach combining both qualitative and quantitative data sources.

4.1 Primary Data Collection

Primary data were collected through active field participation in snake rescue operations conducted in Marwahi Block. Each rescue incident was documented with details such as species identification, location, type of habitat, and nature of encounter (indoors/outdoors).

4.2 Secondary Data Collection

Secondary data were obtained from official records of the Community Health Centre (CHC), Marwahi, covering the period from 2023 to 2025 . These records included monthly snakebite cases and associated mortality data.

4.3 Species Identification

Snake species were identified based on morphological characteristics using standard field guides and expert consultation. Classification into venomous and non-venomous categories was also carried out.

4.4 Data Analysis

The collected data were analyzed using descriptive statistical methods. Year-wise and seasonal trends in snakebite cases were examined, and rescue data were categorized to understand species distribution and frequency.

5. Results

5.1 Snake Rescue Observations

The study recorded more than 400 snake rescue incidents across 13 species, indicating a high level of human–snake interaction in the region. Both venomous and non-venomous species were encountered, with non-venomous snakes being more frequent.

The majority of rescue operations were conducted in residential areas, agricultural fields, and near water sources, suggesting that habitat overlap is a major factor contributing to encounters.

5.2 Snakebite Incidence Analysis

According to CHC Marwahi records, a total of 414 snakebite cases and 24 deaths were reported during 2023–2025.

- 2023: 114 cases, 7 deaths
- 2024: 155 cases, 10 deaths
- 2025: 145 cases, 7 deaths

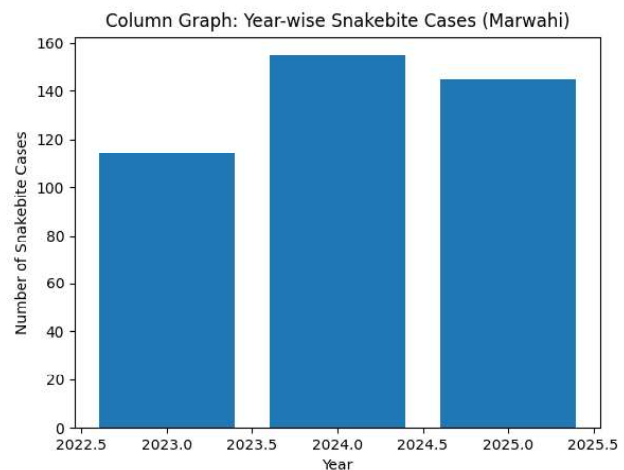
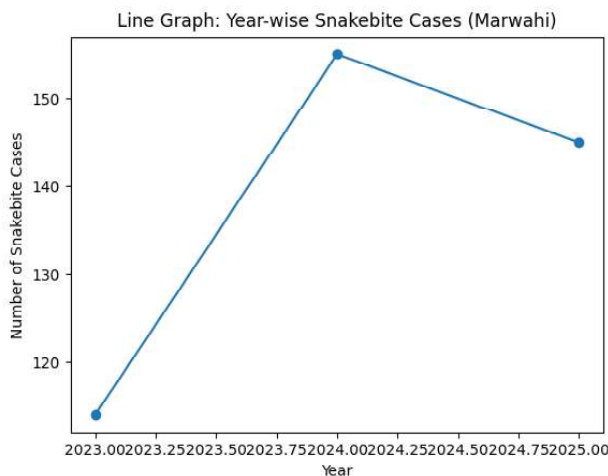
The data indicate a rising trend from 2023 to 2024, followed by a slight decline in 2025.

5.3 Seasonal Pattern

Snakebite cases were found to be significantly higher during the monsoon season (June–August). This trend can be attributed to increased snake activity due to favorable climatic conditions and increased agricultural activities by humans.

5.4 Mortality Analysis

The overall mortality rate was approximately 5.8%, reflecting challenges such as delayed medical intervention, lack of awareness, and limited healthcare accessibility in rural areas.



6. Ecological Significance of Snakes

Snakes play a crucial role in maintaining ecological balance. As predators, they regulate populations of rodents and other small animals, thereby preventing crop damage and reducing the spread of diseases.

Their presence in the food chain ensures stability of the ecosystem, as they serve both as predators and prey. A decline in snake populations can lead to ecological imbalance, including increased pest populations.

7. Cultural and Traditional Perspectives

Indian traditional knowledge systems provide a unique perspective on snake conservation. Snakes are often associated with religious symbolism, mythology, and cultural practices.

Festivals such as Nag Panchami and depictions of snakes in Hindu mythology promote respect and reverence toward these reptiles. Such beliefs can be effectively utilized to encourage conservation-oriented attitudes among local communities.

8. Snakebite as a Public Health Concern (Expanded)

Snakebite remains a significant public health issue in rural India. The high incidence of snakebite cases in Marwahi Block reflects broader national trends.

Factors contributing to snakebite mortality include:

- Lack of awareness about first aid
- Delay in reaching medical facilities
- Dependence on traditional healers
- Inadequate availability of anti-venom

Addressing these challenges requires a combination of awareness programs, improved healthcare infrastructure, and training of medical personnel.

9. Discussion

The findings of the study highlight the complex relationship between humans and snakes in rural ecosystems. While snake rescue initiatives have proven effective in reducing snake mortality and panic among villagers, they alone are insufficient to address the broader issue of snakebite incidence.

The persistence of snakebite cases indicates that conservation efforts must be integrated with public health strategies. Awareness programs need to focus not only on the ecological importance of snakes but also on preventive measures and emergency response.

Furthermore, the incorporation of traditional knowledge systems can enhance the effectiveness of conservation programs by aligning scientific approaches with cultural values.

10. Challenges

The study identified several challenges in snake rescue and conservation efforts:

- Lack of proper training and equipment for rescuers
- High risk involved in handling venomous snakes
- Limited institutional and financial support
- Persistence of myths and misconceptions among local communities

11. Conclusion

The study demonstrates that community-based snake rescue initiatives are an effective tool for reducing human–snake conflict and conserving biodiversity. However, snakebite remains a serious public health concern that requires urgent attention.

A holistic approach that integrates ecological conservation, public awareness, healthcare preparedness, and traditional knowledge is essential for ensuring sustainable coexistence between humans and snakes.

12. Recommendations

- Establish formal training programs for snake rescuers
- Strengthen collaboration between forest and health departments
- Conduct awareness campaigns in schools and villages
- Improve accessibility of anti-venom and emergency healthcare
- Promote research on human–snake interaction

References

1. World Health Organization. (2019). *Snakebite envenoming: A strategy for prevention and control*. WHO Press.
2. World Health Organization. (2023). *Snakebite envenoming*. <https://www.who.int>
3. Mohapatra, B., Warrell, D. A., Suraweera, W., et al. (2011). Snakebite mortality in India: A nationally representative mortality survey. *PLoS Neglected Tropical Diseases*, 5(4), e1018.
4. Kasturiratne, A., Wickremasinghe, A. R., de Silva, N., et al. (2008). The global burden of snakebite: A literature analysis. *PLoS Medicine*, 5(11), e218.
5. Whitaker, R., & Captain, A. (2004). *Snakes of India: The field guide*. Draco Books.
6. Whitaker, R. (2012). *Common Indian snakes: A field guide*. Draco Books.
7. Daniels, R. J. R. (2002). *The book of Indian reptiles and amphibians*. Bombay Natural History Society.
8. Sharma, R. C. (2003). *Handbook: Indian snakes*. Zoological Survey of India.
9. Zoological Survey of India. (2015). *Fauna of India: Reptilia*. Ministry of Environment, Forest and Climate Change.
10. Government of India. (2020). *National action plan for prevention and control of snakebite envenoming*. Ministry of Health and Family Welfare.
11. Alirol, E., Sharma, S. K., Bawaskar, H. S., Kuch, U., & Chappuis, F. (2010). Snakebite in South Asia: A review. *PLoS Neglected Tropical Diseases*, 4(1), e603.
12. Warrell, D. A. (2010). Snake bite. *The Lancet*, 375(9708), 77–88.
13. Gutiérrez, J. M., Calvete, J. J., Habib, A. G., et al. (2017). Snakebite envenoming. *Nature Reviews Disease Primers*, 3, 17063.
14. Chippaux, J. P. (2017). Snakebite envenomation turns again into a neglected tropical disease. *Journal of Venomous Animals and Toxins*, 23(1).
15. Harrison, R. A., Hargreaves, A., Wagstaff, S. C., et al. (2009). Snake envenoming: A disease of poverty. *PLoS Neglected Tropical Diseases*, 3(12), e569.
16. Pandey, D. P. (2016). Epidemiology of snakebites based on hospital survey in Nepal. *Journal of Venom Research*, 7, 48–53.
17. Whitaker, R., & Whitaker, S. (2012). Venom, antivenom production and the medically important snakes of India. *Current Science*, 103(6), 635–643.
18. Sharma, S. K., Khanal, B., Pokhrel, P., et al. (2004). Snakebite-reappraisal of the situation in eastern Nepal. *Toxicon*, 44(2), 197–202.
19. Chatterjee, S. (2013). Ethnzoology and traditional knowledge of reptiles in India. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 12(3), 423–429.
20. Community Health Centre Marwahi. (2026). *Snakebite case records (2023–2025)* Bottom of Form

Jalaukavacharana (Leech Therapy): A Clinical Protocol Demonstrating the Intersection of Zoology and Indian Knowledge Systems

Jeema Kumari

Research Scholar

Abstract

Jalaukavacharana (leech therapy) is an important para-surgical procedure described in classical Ayurvedic literature and practiced as part of Panchakarma therapy. The method involves the therapeutic use of medicinal leeches to remove impure blood and improve local circulation in diseased tissues. This study explores Jalaukavacharana within the framework of the Indian Knowledge System (IKS) and examines its relationship with zoology and modern biomedical science. Ancient Ayurvedic scholars documented the classification of leeches, clinical indications, and detailed procedural protocols in classical texts such as the Sushruta Samhita and Charaka Samhita. The procedure involves three major stages: preparatory phase (Purva Karma), main therapeutic procedure (Pradhana Karma), and post-treatment care (Paschat Karma). Modern scientific research confirms that leech saliva contains bioactive substances such as hirudin, hyaluronidase, and bdellins that possess anticoagulant, anti-inflammatory, and analgesic properties. These biological mechanisms support the traditional claims of improved circulation and tissue healing. The study highlights that Jalaukavacharana represents an early example of integrative medicine where zoological knowledge was applied for therapeutic purposes. By bridging traditional Ayurvedic practices with modern biomedical understanding, this therapy demonstrates the scientific relevance of ancient Indian medical knowledge.

Keywords: Panchakarma, Jalaukavacharana, Leech Therapy, Indian Knowledge System, Ayurveda, Zoology, Raktamokshana, Traditional Medicine, Integrative Healthcare

1. Introduction

“Panchakarma is considered one of the most effective detoxification procedures described in Ayurveda” (Sharma & Dash, 2014).

Jalaukavacharana, commonly known as leech therapy, is an important para-surgical procedure in Ayurveda. It is classified under Raktamokshana (bloodletting therapy) and is described in classical Ayurvedic texts such as the Sushruta Samhita. Ancient physicians observed that certain species of leeches could remove impure blood and improve circulation in diseased tissues.

This therapy demonstrates the integration of zoological knowledge with traditional medicine, as it uses the biological functions of an aquatic organism to treat human diseases.

Modern biomedical research confirms that medicinal leeches release several therapeutic substances, including anticoagulants and anti-inflammatory compounds, making Jalaukavacharana an early form of biological microsurgery.

“The surgical treatise Sushruta Samhita provides detailed descriptions of leech therapy and its clinical indications” (Bhishagratna, 2006).

2. Panchakarma in the Framework of Indian Knowledge Systems (IKS)

The concept of Panchakarma and its therapeutic procedures has been extensively described in classical Ayurvedic texts. Ancient scholars presented detailed explanations of detoxification methods and disease management in works such as the Charaka Samhita and the Sushruta Samhita. These texts describe the importance of removing accumulated toxins (Ama) from the body and maintaining balance among the three Doshas—Vata, Pitta, and Kapha.

In particular, the Sushruta Samhita provides one of the earliest systematic descriptions of bloodletting procedures, including Jalaukavacharana. The text explains the classification of leeches into poisonous and non-poisonous types, their identification, and the correct method for clinical application.

Modern research studies have also examined the medicinal value of leech therapy. Scientific investigations have identified several bioactive compounds in the saliva of the medicinal leech species *Hirudo medicinalis*. These substances include hirudin (a natural anticoagulant), hyaluronidase (an enzyme that improves tissue permeability), and bdellins (anti-inflammatory agents). Such discoveries have validated the traditional Ayurvedic use of leeches for improving blood circulation and reducing inflammation.

Several modern medical studies have reported the successful use of leech therapy in reconstructive surgery, venous congestion management, and treatment of chronic wounds. These findings suggest that ancient Ayurvedic practices incorporated sophisticated biological observations that are now recognized by modern science.

3. Classification and Selection of Leeches

Ancient Ayurvedic scholars classified leeches into two categories:

1. Nirvisha Jalauka (Non-poisonous leeches)

These are considered safe for therapeutic use. Characteristics include:

- Smooth and soft body
- Moderate size
- Active movement in water
- Dark green or brown color

2. Savisha Jalauka (Poisonous leeches)

These species are not used for treatment because they may cause infections or severe reactions.

The commonly used medicinal leech species in modern practice is the *Hirudo medicinalis*.

4. Indications for Jalaukavacharana

Leech therapy is recommended in Ayurveda for several diseases, including:

- Skin disorders (eczema, psoriasis)

- Varicose veins
- Non-healing wounds
- Arthritis and joint inflammation
- Localized swelling
- Hypertension
- Certain vascular disorders

5. Stages of the Procedure

The clinical procedure of Jalaukavacharana is divided into three main phases:

1. Purva Karma (Preparatory Phase)
2. Pradhana Karma (Main Procedure)
3. Paschat Karma (Post-Treatment Care)

6. Purva Karma (Preparatory Phase)

6.1 Patient Assessment

Before treatment, the physician evaluates:

- Patient's medical history
- Nature of the disease
- Blood pressure and general health condition
- Skin condition at the affected site

Patients with severe anemia, bleeding disorders, or weakened immunity are generally not recommended for this therapy.

6.2 Preparation of Leeches

Healthy medicinal leeches are selected and activated before application.

Activation Process

- Leeches are placed in a container containing clean water.
- A small amount of turmeric or mustard paste may be added to stimulate their activity.
- The leeches remain in this solution for approximately 30–45 minutes.

This process is called Shodhana (purification) in Ayurveda.

6.3 Preparation of the Treatment Site

The area of application on the patient's body is cleaned using:

- Warm water
- Herbal decoctions such as neem

Soap and chemical disinfectants are avoided because strong odors can repel leeches.

If the leech does not attach easily, a small drop of blood may be produced by gently pricking the skin.

7. Pradhana Karma (Main Procedure)

7.1 Application of the Leech

The leech is gently held with forceps or fingers and placed on the affected area.

Once it attaches to the skin, the following signs appear:

- The head of the leech forms a suction cup
- Rhythmic pulsations appear in its body
- The body gradually enlarges as it absorbs blood

The attachment resembles the shape of a horse hoof, which ancient texts refer to as *Ashwakhura Vat*.

7.2 Monitoring the Feeding Process

During the procedure:

- The leech is covered with a wet cotton cloth to keep it moist.
- The practitioner monitors the feeding process continuously.

A single leech typically consumes 5–15 milliliters of blood during a session.

The process usually lasts 20–60 minutes.

7.3 Recognition of Completion

The therapy is considered complete when:

- The leech becomes swollen and inactive
- The patient experiences mild itching or pricking sensation
- The leech detaches naturally

If the leech does not detach naturally, a small amount of turmeric or salt may be applied near its mouth to stimulate detachment.

8. Paschat Karma (Post-Treatment Care)

8.1 Wound Management

After removal, the bite mark appears as a Y-shaped incision.

The wound is treated by:

- Cleaning with sterile water
- Applying turmeric powder or herbal paste
- Dressing the wound to prevent infection

Slight bleeding may continue for a short time due to the anticoagulant secretions of the leech.

8.2 Care of the Leech

After feeding, the leech must be cleaned before reuse.

Process

- The leech is gently massaged from tail to head.
- This stimulates regurgitation of the consumed blood.
- The leech is then placed in fresh water for storage.
- Important Ayurvedic guidelines recommend that one leech should be used for only one patient to prevent cross-infection.

9. Biological and Zoological Mechanism

Medicinal leeches such as *Hirudo medicinalis* release bioactive substances that promote anticoagulation and tissue healing (Whitaker et al., 2012).

Leech saliva contains several biologically active compounds that provide therapeutic benefits.

Key substances include:

- Hirudin – a natural anticoagulant preventing blood clotting
- Hyaluronidase – increases tissue permeability

- Bdelins – anti-inflammatory proteins
- Natural anesthetics – reduce pain during the procedure

These compounds improve microcirculation, reduce inflammation, and accelerate tissue healing.

10. Modern Scientific Relevance

Modern medicine recognizes the clinical value of leech therapy, particularly in reconstructive surgery. Medicinal leeches are sometimes used to restore blood circulation in reattached tissues after plastic surgery.

The use of leeches in both ancient and modern medicine demonstrates how traditional biological observations evolved into scientifically validated treatments.

“Modern reconstructive surgery sometimes employs leech therapy to restore venous circulation in damaged tissues (Michalsen et al., 2007)..

11. Conclusion

Panchakarma represents one of the most sophisticated therapeutic systems in Ayurveda and the Indian Knowledge System. Its methods demonstrate a deep understanding of detoxification, physiology, and ecological balance.

The integration of zoological elements—such as leech therapy and fish therapy—highlights the scientific observation skills of ancient practitioners. These treatments show how biological interactions between species were utilized for therapeutic benefits.

In modern healthcare, Panchakarma continues to gain recognition as a complementary therapy for chronic diseases, neurological disorders, and lifestyle-related conditions. Preserving and scientifically validating these traditional methods will help bridge the gap between ancient knowledge and modern biomedical science.

References

- Bhisagratna, K. L. (2006). *The Sushruta Samhita*. Varanasi: Chowkhamba Sanskrit Series.
- Sharma, R. K., & Dash, B. (2014). *Charaka Samhita: Text with English Translation and Critical Exposition*. Varanasi: Chowkhamba Sanskrit Series.
- Michalsen, A., Roth, M., & Dobos, G. (2007). Medicinal leech therapy in the treatment of osteoarthritis of the knee. *Annals of Internal Medicine*, 147(12), 891-892.
- Whitaker, I. S., Rao, J., & Izadi, D. (2012). Historical article: *Hirudo medicinalis*—Ancient origins of, and trends in the use of medicinal leeches throughout history. *British Journal of Oral and Maxillofacial Surgery*, 50(3), 289-293.
- Ministry of AYUSH. (2020). *Ayurveda and Panchakarma Therapy Guidelines*. Government of India.

Indian Knowledge System and Rural Economy

Dr. Jaynendra Kumar Monu

Assistant Professor, Department of Economics, Vanija Mahavidyalaya, Patna

Abstract

India's villages are rich in traditional skills, natural resources, and wisdom. In recent years, many people in rural areas have started small businesses to improve their income and standard of living. At the same time, India has a valuable treasure of traditional knowledge, known as the Indian Knowledge System (IKS). This includes old farming methods, herbal medicine, handicrafts, and eco-friendly living. This paper explores how combining IKS with rural entrepreneurship can help build a stronger, self-reliant, and sustainable rural economy. It explains the importance of both concepts, highlights real-life case studies from across India including Maharashtra, and suggests how the government and society can support this movement. By using what we already know from our traditions, rural India can become a hub of innovation, culture, and progress.

Key Words: Indian Knowledge System, India, villages, Rural Economy, rural entrepreneurship

Introduction

More than 65% of Indians live in villages. These rural areas are full of skilled people, hardworking farmers, artisans, and traditional healers. However, many villagers still face problems like unemployment, poverty, lack of education, and migration to cities. Rural entrepreneurship offers a solution. It means starting small businesses in rural areas. These businesses can create jobs, increase income, and reduce dependence on cities. At the same time, India has a long history of traditional knowledge systems—ways of living and working passed down through generations. This is known as the Indian Knowledge System (IKS).¹

When we mix rural entrepreneurship with IKS, we get a powerful model for growth. It is sustainable, environment-friendly, and rooted in Indian culture.

What is the Indian Knowledge System (IKS)?

The Indian Knowledge System is made up of traditional practices, skills, and ideas that have been used in India for thousands of years. This knowledge is often based on experience, observation, and nature.²

Main Areas of IKS:

- Agriculture: Organic farming, crop rotation, natural fertilizers like cow dung and neem.
- Health: Ayurveda, Yoga, Siddha, and home remedies using herbs like tulsi, turmeric, and neem.
- Crafts: Handicrafts, weaving, pottery, wood carving, and embroidery passed on through families.
- Environment: Rainwater harvesting, community forest management, sacred groves.
- Ethics and Values: Harmony with nature, non-violence, honesty in business, and spiritual well-being.

IKS is still alive in many Indian villages, though it is slowly disappearing. Reviving and using it can make rural businesses more unique, eco-friendly, and culturally rich.

IKS in Contribution with Rural Development and Poverty Alleviation:

Indian Knowledge Systems (IKS) have a profound impact on rural development and poverty alleviation.

By leveraging traditional knowledge, practices, and values, these systems can foster sustainable development, enhance livelihoods, and promote social equity. Here's how IKS contributes to rural development and poverty alleviation:

Role of Indian Knowledge Systems in Rural Development:

Indian Knowledge Systems (IKS) play a crucial role in rural development by leveraging traditional wisdom, practices, and local resources.

Here are some keyways in which IKS contribute to rural development:

1. **Sustainable Agriculture Practices:** IKS offer a wealth of knowledge on traditional farming techniques that are often well-suited to local environmental conditions and resource availability. Practices such as organic farming, crop rotation, mixed cropping, and water conservation methods are integral to IKS and promote sustainable agriculture in rural areas.³
2. **Healthcare and Well-being:** Traditional systems like Ayurveda, Yoga, and local herbal remedies provide affordable and accessible healthcare solutions in rural areas where modern medical facilities may be scarce. These systems emphasize holistic approaches to health, prevention of diseases, and the use of locally available medicinal plants.⁴
3. **Natural Resource Management:** IKS provides insights into managing natural resources such as water, forests, and land. Traditional knowledge systems often include methods for soil conservation, forest management, and watershed management, which are crucial for sustainable rural development and preserving ecological balance.
4. **Skill Development and Livelihoods:** Many rural communities rely on traditional crafts and skills for their livelihoods. IKS contributes by preserving and promoting these skills, such as pottery, weaving, handicrafts, and traditional arts, thereby supporting local economies and preserving cultural heritage.⁵
5. **Community Resilience and Social Cohesion:** IKS often emphasize community-based approaches to problem-solving and decision-making. They promote social cohesion, mutual support systems, and collective action among rural communities, which are essential for resilience against challenges like natural disasters, climate change impacts, and economic fluctuations.⁶
6. **Education and Awareness:** Integrating IKS into formal and informal education systems in rural areas can enhance awareness and appreciation of local culture, traditions, and environmental knowledge among younger generations. This helps in preserving IKS and ensuring their continuity.
7. **Policy and Development Planning:** Recognizing and integrating IKS into policy frameworks and development planning can lead to more context-specific and culturally sensitive interventions in rural areas. This can improve the effectiveness and sustainability of development initiatives.

Hence, Indian Knowledge Systems contribute significantly to rural development by offering sustainable solutions, preserving cultural heritage, supporting livelihoods, and

fostering community resilience. Recognizing and integrating these systems into mainstream development efforts can lead to more inclusive and effective rural development strategies.⁷

Role of Indian Knowledge Systems in Poverty Alleviation

Indian Knowledge Systems (IKS) plays an important role in poverty alleviation in various ways by leveraging traditional knowledge, practices and local resources.

Here are some of the main ways in which IKS contributes to poverty alleviation:

1. **Sustainable Livelihoods:** IKS provides valuable knowledge and skills related to traditional occupations like agriculture, handicrafts, weaving and pottery. By preserving and promoting these skills, IKS supports sustainable livelihoods for rural communities, reducing dependence on external sources and improving income generation.
2. **Health care access:** Traditional systems such as Ayurveda, yoga and local herbal medicine provide affordable and effective health care solutions in rural areas where access to modern medical facilities may be limited. This helps in reducing health care expenses and improving overall well-being for rural families.
3. **Natural Resource Management:** IKS emphasize sustainable practices for managing natural resources such as water, forests, and land. Techniques for soil conservation, water harvesting, and agro-forestry contribute to improved agricultural productivity and environmental sustainability, which are crucial for poverty reduction among rural populations dependent on agriculture.
4. **Food Security:** Traditional agricultural practices promoted by IKS, such as organic farming and crop diversity, enhance food security by ensuring reliable and nutritious food production. This reduces vulnerability to food shortages and enhances resilience to climate-related risks.
5. **Entrepreneurship and Innovation:** IKS fosters local entrepreneurship by promoting traditional crafts, arts, and indigenous knowledge-based industries. This creates opportunities for micro-enterprises and small businesses, leading to economic diversification and poverty reduction.
6. **Social Cohesion and Empowerment:** IKS often promote community-based decision-making and collective action. This strengthens social cohesion and empowers marginalized groups, including women and indigenous communities, by recognizing and valuing their traditional knowledge and roles.
7. **Education and Awareness:** Integrating IKS into education systems helps in preserving cultural heritage and promoting awareness about traditional knowledge among younger generations. This fosters pride in indigenous cultures and encourages the continuation of traditional practices, which are often integral to sustainable development and poverty alleviation.
8. **Policy Influence:** Recognizing the value of IKS in poverty alleviation can influence policy frameworks to integrate traditional knowledge into development strategies. This ensures that interventions are context-specific, culturally sensitive and effective in meeting the needs of rural communities.

Therefore, Indian knowledge systems contribute significantly to poverty alleviation by promoting sustainable livelihoods, improving health care access, enhancing natural resource management, promoting entrepreneurship, empowering communities and influencing policy for inclusive growth. Recognizing and integrating IKS into development initiatives can lead to more holistic and sustainable approaches to poverty reduction in India.⁸

What is Rural Entrepreneurship?

Rural entrepreneurship means setting up and running businesses in villages or rural areas. These businesses use local resources and skills to produce goods or offer services.

Types of Rural Businesses:

- Farming and organic produce
- Food processing (jams, pickles, papad)
- Animal husbandry (dairy, poultry, beekeeping)
- Handicrafts and handmade products
- Agri-tourism and eco-tourism
- Herbal and wellness products

Benefits of Rural Entrepreneurship:

- Provides jobs in rural areas
- Reduces migration to cities
- Encourages use of local resources
- Empowers women and youth
- Supports traditional knowledge and culture

Challenges Faced:

- Lack of capital and loans
- Poor infrastructure (roads, electricity, internet)
- Limited training and education
- Difficulty in marketing and selling products

Despite these problems, rural entrepreneurship is growing—especially when it is supported by IKS.

How IKS Supports Rural Entrepreneurship

Villages already use traditional knowledge in farming, healing, and crafts. This knowledge can become the foundation for modern businesses.

Traditional Farming as a Business

- Use of cow dung, organic manure, and neem oil as natural fertilizers.
- Growing organic vegetables, pulses, and grains.
- Selling directly to consumers or through farmers' markets and online platforms.

Handicrafts and Traditional Art

- Products made from bamboo, clay, cotton, wool, or jute.
- Local art forms like Warli painting (Maharashtra), Madhubani (Bihar), Pattachitra (Odisha).
- Selling through exhibitions, online stores, and export.

Herbal and Wellness Products

- Ayurvedic oils, soaps, syrups, and herbal teas.
- Yoga retreats, massage centers, and wellness tourism.
- Training youth in Ayurveda and Yoga for job creation.

Eco-Tourism and Agri-Tourism

- Village homestays with local food and culture.
- Workshops in farming, pottery, and cooking.
- Attracts tourists seeking authentic Indian rural experiences.

Case Studies

Hiware Bazar – Model Village from Maharashtra Hiware Bazar, in Ahmednagar district, is a shining example of how traditional knowledge and rural entrepreneurship can transform a village.

Problems Faced:

- Drought and water scarcity
- Unemployment and migration
- Alcoholism and poverty

Transformation Steps:

- Water conservation through traditional methods (check dams, contour trenches)
- Ban on borewells and liquor
- Organic farming and dairy farming
- Promoted collective farming and entrepreneurship

Results:

- Per capita income increased 30 times
- 60+ villagers became lakhpatis (millionaires in rupees)
- Youth returned to the village to start businesses
- Hiware Bazar is now a model of self-reliance and IKS-based development

Government Support for Rural Entrepreneurship and IKS

Important Schemes:

- Startup India: Encourages new businesses with financial and training help.
- PMEGP: Prime Minister's Employment Generation Programme—loans and subsidies.
- MUDRA Loans: Small loans for farmers, artisans, and small businesses.
- ODOP: One District One Product—promotes unique local products.

IKS Promotion:

- NEP 2020: Includes Indian traditions in school education.
- IKS Division (AICTE): Supports research and awareness about traditional knowledge.
- Skill India: Offers training in local crafts, farming, and services.

Suggestions for the Future

To grow rural entrepreneurship based on IKS, we need:

1. Education in Schools and Colleges – Add IKS and entrepreneurship in school syllabi.
2. Training Centers in Villages – Skill development hubs for youth and women.
3. Technology Access – Provide internet and digital tools for online selling.
4. Support for Women Entrepreneurs –Financial and moral support for women-led businesses.
5. Branding and GI Tags – Promote unique products like Paithani sarees, Warli art, Kolhapuri chappals.

6. Legal Protection for IKS – Prevent misuse and protect traditional knowledge.
7. Public-Private Partnerships – Encourage companies and NGOs to work with rural communities.

Conclusion

India's future lies in its villages. By combining rural entrepreneurship with traditional Indian knowledge, we can create jobs, save our environment, and keep our culture alive. Villagers already have the skills and knowledge – they just need support and opportunity.

Be it natural farming, herbal remedies, or handmade goods, Indian knowledge systems provide powerful tools for rural progress. If harnessed correctly, it can lead to self-reliant villages that are rich not only in wealth, but also in culture, dignity and purpose.

It's time we stopped looking outside for answers. The solutions have always been within us – in our soil, in our stories and in our villages.

Indian knowledge systems serve as a cornerstone for rural development and poverty alleviation efforts by providing practical, sustainable solutions tailored to local contexts. Their integration into policy frameworks and development initiatives promotes resilience, empowers communities and preserves cultural heritage, ensuring sustainable benefits for future generations. Adopting and revitalizing IKS not only addresses immediate development challenges but also promotes a harmonious balance between human prosperity and environmental management in rural India.

References

1. Jain, S. K., & Mudgal, V. (1999) Traditional Knowledge System in India and Its Role in Sustainable Development. *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 8(1), 123-129.
2. Kumar, R. (2004) "Traditional Knowledge Systems in India: Relevance for Sustainable Development." *Indian Journal of Traditional Knowledge*, 3(4), 287-292. Ministry of MSME (2023). Annual Report.
3. National Education Policy (NEP) 2020.
4. AICTE Indian Knowledge System Division (iksindia.org).
5. Popatrao Pawar and the Hiware Bazar Model –Government Reports and News Articles.
6. Barefoot College, Rajasthan – Official Website.
7. Rural Entrepreneurship Research – D. Saha (2019), IIM Reports.

Indian Knowledge Tradition and the Concept of State and Governance: From Kautilya to Modern Democracy

Dr. Swati Singh

Ph.D. (Political Science), Jai Prakash University, Chapra, Bihar,
Independent Researcher, Bihar, India

Abstract

The Indian knowledge tradition presents a rich and continuous discourse on the nature of state, governance, authority, justice, and public welfare. From the classical formulations found in Kautilya's Arthashastra to the normative foundations of modern Indian democracy, the evolution of political thought in India reflects a unique synthesis of power, ethics, duty, and institutional order. This paper examines the concept of state and governance within the Indian intellectual tradition, focusing primarily on Kautilya's political philosophy and tracing its relevance to contemporary democratic institutions in India. The study employs qualitative and analytical methodology based on textual interpretation and comparative political analysis. It argues that many foundational principles of modern governance—rule of law, accountability, welfare orientation, strategic diplomacy, and administrative efficiency—have deep roots in India's ancient political thought.

Keywords: Indian Knowledge Tradition, Kautilya, Arthashastra, State, Governance, Democracy, Political Thought

1. Introduction

The discourse on state and governance has occupied a central position in political philosophy across civilizations. In the Indian context, the knowledge tradition offers a profound and historically layered understanding of political order. Ancient Indian texts such as the Vedas, Mahabharata, Manusmriti, and especially Kautilya's Arthashastra provide systematic reflections on the state, administration, justice, diplomacy, and public welfare.

The Indian knowledge system does not treat governance merely as an instrument of coercive authority; rather, it conceptualizes the state as an ethical and functional institution aimed at ensuring dharma (righteous order), artha (material prosperity), and lokasangraha (public welfare). This vision finds one of its most sophisticated expressions in Kautilya's political thought. Kautilya, also known as Chanakya or Vishnugupta, is regarded as one of the greatest political thinkers in world history. His Arthashastra, composed around the 4th century BCE, offers a comprehensive framework for governance, statecraft, economics, diplomacy, taxation, military organization, and intelligence systems. Often compared with Machiavelli, Kautilya's political realism was far more systematic and welfare-oriented.

In modern India, democratic governance is constitutionally structured around principles such as justice, liberty, equality, and fraternity. However, several elements of administrative

rationality, welfare orientation, decentralization, and strategic statecraft bear remarkable similarities with ancient Indian political wisdom.

This paper seeks to explore the continuity between ancient Indian political thought and contemporary democratic governance by focusing on the evolution of the concept of state from Kautilya to modern democracy.

2. Review of Literature

The literature on Kautilya and Indian political thought is extensive and interdisciplinary.

R. Shamasastri's English translation of the Arthashastra (1915) remains one of the earliest and most authoritative works that introduced Kautilya to modern academic discourse. His translation opened avenues for comparative political analysis.

Roger Boesche (2002), in *The First Great Political Realist: Kautilya and His Arthashastra*, argues that Kautilya was not merely a realist but a sophisticated theorist of institutional governance. Boesche highlights Kautilya's emphasis on intelligence systems, administrative mechanisms, and strategic diplomacy.

Thomas R. Trautmann (1971), in *Kautilya and the Arthashastra*, provides a historical and textual analysis, placing the treatise within the broader framework of ancient Indian state formation.

Beni Prasad (1928) explores Hindu political theory and discusses the ethical dimensions of governance in classical India.

A.S. Altekar (1958), in *State and Government in Ancient India*, systematically examines political institutions, kingship, bureaucracy, and local administration.

In the context of modern democracy, Granville Austin's *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation* (1966) offers an essential analysis of constitutional governance in India. Recent scholarship has increasingly focused on the relevance of indigenous political traditions in contemporary governance studies. Scholars such as Balbir Sihag (2009) argue that Kautilya's thought contains advanced economic and administrative principles relevant even today.

Despite substantial literature, there remains a relative lack of integrative studies connecting ancient Indian governance models with modern democratic frameworks.

3. Research Gap

Although significant research exists on Kautilya's Arthashastra and on modern Indian democratic institutions separately, the intersection between these two domains remains underexplored.

Most existing studies focus either on:

1. historical analysis of Kautilya's political theory, or
2. constitutional and institutional analysis of modern democracy.

There is a noticeable research gap in examining how concepts such as welfare governance, administrative accountability, strategic diplomacy, and state legitimacy have evolved from ancient Indian political thought into contemporary democratic structures.

This paper seeks to bridge this gap by offering a comparative and continuity-based analysis.

4. Methodology

This research is based on qualitative and doctrinal methodology.

4.1 Nature of Study

The study is analytical, descriptive, and comparative in nature.

4.2 Sources of Data

The study primarily relies on secondary sources, including:
classical texts such as Arthashastra
books on ancient Indian political thought
journal articles
constitutional literature
contemporary governance studies

4.3 Method of Analysis

A comparative textual analysis has been used to identify conceptual continuities and differences between ancient statecraft and modern democratic governance.

5. Analysis and Discussion

5.1 Kautilya's Concept of the State

Kautilya conceptualized the state through the famous Saptanga Theory (Seven Elements of the State):

1. Swamin (King)
2. Amatya (Ministers)
3. Janapada (Territory and Population)
4. Durga (Fortified Capital)
5. Kosha (Treasury)
6. Danda (Army)
7. Mitra (Allies)

This theory reflects a highly advanced understanding of state structure. Unlike simplistic monarchy-based notions, Kautilya emphasized institutional interdependence.

The state was not merely identified with the ruler; rather, it was seen as an organized institutional entity.

5.2 Governance and Welfare

A striking feature of Kautilya's thought is his emphasis on public welfare:

"In the happiness of the subjects lies the happiness of the king."

This principle resembles the modern welfare state.

The ruler's legitimacy depended upon ensuring:

economic prosperity
law and order
social justice
public security

This principle finds resonance in the Directive Principles of State Policy under the Constitution of India.

5.3 Administrative Structure

Kautilya proposed a sophisticated bureaucratic system with designated officials for revenue, agriculture, trade, mining, military affairs, and espionage.

Modern democratic administration similarly relies on specialized ministries and civil services.

The Indian Administrative Service (IAS) may be seen as a contemporary institutional parallel to Kautilya's administrative machinery.

5.4 Rule of Law and Justice

Ancient Indian governance was deeply connected with dharma.

Kautilya emphasized codified laws, judicial procedures, evidence, and punishment.

Modern democracy constitutionalizes these through:

- judiciary
- rule of law
- due process
- fundamental rights

5.5 Diplomacy and Foreign Policy

Kautilya's Mandala Theory remains one of the most influential frameworks in strategic studies.

The theory conceptualized neighboring states as potential adversaries and distant states as allies.

This principle continues to influence contemporary geopolitical analysis and India's foreign policy strategies.

5.6 From Monarchy to Democracy

- A significant difference lies in the form of sovereignty.
- In Kautilya's framework, sovereignty centered on the ruler.
- In modern democracy, sovereignty lies with the people.

However, both systems prioritize:

- stability
- welfare
- institutional order
- legitimacy

5.7 Democratic Continuities

Several continuities may be observed:

Ancient Indian Thought - Modern Democracy

Welfare of subjects - Welfare state

Ministers - Council of Ministers

Treasury - Finance Ministry

Danda - Defense institutions

Dharma - Constitutional morality

Allies - Foreign relations

Thus, democratic governance in India may also be interpreted as a modern institutional transformation of older civilizational values.

6. Expanded Theoretical Framework and Critical Discussion

6.1 Theoretical Framework

This study is further situated within the broader framework of comparative political theory. Comparative political theory seeks to engage non-Western intellectual traditions as equally valid sources of political reasoning. In this context, Kautilya's political thought may be read not merely as an ancient text but as a living framework of governance philosophy.

The paper employs three major theoretical lenses:

- (a) **Institutional Theory:** This lens helps in understanding how political institutions such as bureaucracy, treasury, defence, and advisory councils functioned in ancient India and how their structural logic survives in modern institutions.
- (b) **Welfare State Theory:** Kautilya's emphasis on public happiness and prosperity is compared with the modern welfare state model.
- (c) **Realist Political Theory:** The study also interprets Kautilya's diplomacy and foreign policy ideas through the lens of realism, particularly in relation to power, strategy, and national interest.

6. Critical Discussion

While Kautilya's model offers rich insights, it must also be critically evaluated.

First, his system was fundamentally monarchical.

Second, surveillance and espionage were central features, raising questions regarding privacy and civil liberties from a democratic standpoint.

Third, modern democracy is based on universal adult franchise, equality, and human rights—features absent in ancient monarchy.

Nevertheless, the principles of good governance, accountability, and welfare remain deeply relevant.

The continuity lies less in institutional form and more in governance philosophy.

7. Expanded Analysis: From Ancient Statecraft to Constitutional Democracy

The transition from ancient monarchy to constitutional democracy in India should not be understood merely as a shift in political structure, but as an evolution in the source of legitimacy and the mode of accountability.

In Kautilya's framework, legitimacy emerged from the ruler's ability to maintain order, ensure prosperity, and protect territorial integrity. In contrast, modern democracy derives legitimacy from popular sovereignty, constitutionalism, and periodic elections.

Yet, several normative continuities remain evident:

- welfare orientation of the state
- ethical responsibility of rulers/government
- importance of institutional stability
- strategic foreign policy
- financial discipline and taxation

- The Directive Principles of State Policy, though modern in form, reflect an ancient concern for social welfare and distributive justice.

Similarly, India's administrative structure—central ministries, district administration, fiscal management, intelligence networks, and diplomatic institutions—shows a deep continuity with the administrative rationality found in the Arthashastra.

A particularly significant aspect is the concept of accountability. In Kautilya's system, ministers and officials were subject to constant supervision and auditing. In modern democracy, this has evolved into parliamentary accountability, judicial review, CAG audits, RTI, and constitutional checks and balances.

This demonstrates that the Indian knowledge tradition offers not merely historical interest but enduring frameworks for governance studies.

8. Conclusion

The Indian knowledge tradition provides an intellectually robust and historically continuous framework for understanding state and governance.

Kautilya's Arthashastra stands as a foundational text in political thought, offering sophisticated insights into statecraft, administration, diplomacy, justice, and public welfare.

Modern Indian democracy, though structurally distinct, carries forward many normative and administrative principles rooted in ancient political wisdom.

The journey from Kautilya to contemporary democracy reflects not a rupture but an evolution—from monarchy to popular sovereignty, from royal duty to constitutional governance.

Thus, the study of Indian political thought is essential not only for historical understanding but also for contemporary policy and governance discourse.

Footnotes

1. R. Shamasastri, *Kautilya's Arthashastra* (Mysore Printing and Publishing House, 1915).
2. Roger Boesche, *The First Great Political Realist: Kautilya and His Arthashastra* (Lexington Books, 2002).
3. Thomas R. Trautmann, *Kautilya and the Arthashastra* (Leiden: Brill, 1971).
4. A.S. Altekar, *State and Government in Ancient India* (Motilal Banarsidass, 1958).
5. Granville Austin, *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation* (Oxford University Press, 1966).
6. Balbir Sihag, "Kautilya on Public Goods and Taxation," *History of Political Economy*, Vol. 41, No. 1, 2009.
9. Policy Relevance and Contemporary Significance

The relevance of Kautilya in contemporary governance discourse has increased significantly in recent years, particularly in the fields of public administration, strategic studies, and foreign policy analysis.

For Political Science students, this continuity is highly important because it shows that Indian political thought has its own indigenous intellectual foundations and need not always be interpreted exclusively through Western categories such as Plato, Aristotle, Hobbes, Locke, or Machiavelli.

In the era of global governance challenges, questions of national security, federalism, welfare administration, and strategic diplomacy continue to make Kautilya deeply relevant.

Thus, the Indian knowledge tradition provides both a civilizational and policy-oriented framework for understanding governance.

10. Refined Academic Positioning and Publication-Ready Notes

From the standpoint of contemporary Political Science, this paper may also be located within the discourse of indigenous political theory and decolonial knowledge systems. Much of modern political science pedagogy in India remains heavily dependent on Western thinkers; however, the intellectual depth of Kautilya, Shanti Parva, Buddhist political ethics, and Gandhian decentralization demonstrates that India possesses a robust native tradition of state theory.

This section strengthens the paper's publication value by explicitly positioning it within current debates on knowledge decolonization, comparative political thought, and Indian intellectual traditions.

For conference and journal submission, the core argument may be stated as follows: modern Indian democracy is institutionally modern but philosophically rooted in long-standing civilizational ideas of welfare, ethical governance, and public accountability.

Suggested Citation Style (APA 7th)

Shamasastry, R. (1915). *Kautilya's Arthashastra*. Mysore Printing and Publishing House.

Boesche, R. (2002). *The first great political realist: Kautilya and his Arthashastra*. Lexington Books.

Austin, G. (1966). *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. Oxford University Press.

References

Altekar, A.S. (1958). *State and Government in Ancient India*. Delhi: Motilal Banarsidass.

Austin, Granville. (1966). *The Indian Constitution: Cornerstone of a Nation*. Oxford University Press.

Boesche, Roger. (2002). *The First Great Political Realist: Kautilya and His Arthashastra*. Lexington Books.

Prasad, Beni. (1928). *Theory of Government in Ancient India*. Allahabad.

Shamasastry, R. (1915). *Kautilya's Arthashastra*. Mysore.

Sihag, Balbir. (2009). "Kautilya on Public Goods and Taxation." *History of Political Economy*, 41(1).

Trautmann, Thomas R. (1971). *Kautilya and the Arthashastra*. Leiden: Brill.